



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 4
PART II—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 19]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, मई 19, 1983/वैशाख 29, 1905

No. 19] NEW DELHI, THURSDAY, MAY 19, 1983/VAISAKHA 29, 1905

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के क्षेत्र में
रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

राजा संघालय

तटरक्षक (अनुग्रहात्मक) नियम

मई विल्ली, 19 मई, 1983

का० निः ० आ० ५०(६) :—केन्द्रीय सरकार, तट रक्षक अधिनियम, 1978 (1978 का 30) की घारा 123 की उपचारा (2) के खंड (क) और (ज) के साथ पठित उपचारा (1) द्वारा प्रवत शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. संजिप्त नाम.—(1) इन नियमों का संजिप्त नाम तट रक्षक (अनुग्रहात्मक) नियम, 1983 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

(3) ये नियम अधिनियम के अधीन सभी व्यक्तियों को लागू होंगे।

2. परिभाषा.—इन नियमों में जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—

(क) "अधिनियम" से तट रक्षक अधिनियम, 1978 (1978 का 30) अभिप्रेत है।

(ख) "परिचिह्न" से इन नियमों से उपचार विविध अभिप्रेत है।

(ग) "स्थायालय" से तट रक्षक स्थायालय अभिप्रेत है।

(घ) "कमान आफिसर" से वह आफिसर या अन्य व्यक्ति अभिप्रेत है जिसका वास्तविक कमान में पोत है।

(ङ) "द्वारा" से अधिनियम की कोई द्वारा अभिप्रेत है।

(च) इन नियमों में प्रयोग किए गए और अधिनियम में परिचालित शब्दों और वर्तों का वही अर्थ होगा जो उनका अधिनियम में है।

4. साधारण अधीक्षक, नियंत्रण और निवेश.—(1) बल साधारण अधीक्षक निदेशन और नियंत्रण केन्द्रीय सरकार में विद्वित और जल्दी द्वारा प्रयोग किया जाएगा, और इसके तथा इस अधिनियम और नियमों के उपबन्धों के अधीन द्वारा तट रक्षक की कमान और पर्यावरण, केन्द्रीय सरकार द्वारा तट रक्षक में महानिवेशक के क्षम में नियुक्त किए जाने वाले आफिसर में निहित होगा।

(2) महानिवेशक की इस अधिनियम के अधीन अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने में ऐसे महानिरीक्षकों, उप-महानिरीक्षकों, कमांडेंटों और अन्य आफिसरों द्वारा जो केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किए जाएंगे सहायता की जाएगी।

5. गिरफ्तारी और अन्वेषण.—गिरफ्तारी का प्रारूप (1) गिरफ्तारी से बुली गिरफ्तारी या बद्य गिरफ्तारी होगी।

(2) किसी गिरफ्तारी से जब तक कि अन्यथा विनिश्चित न किया जाए, बुली गिरफ्तारी अभिप्रेत होगी।

(3) गिरफ्तारी अविरोपित करने वाले आदेश की संतुष्टगत गिरफ्तार किए जाने वाले व्यक्ति को या तो मरियादित या विवित रूप में ही जाएगी।

6. गिरफ्तारी का आदेश करने वाला प्राधिकारी.—(1) अधिनियम के अधीन किसी व्यक्ति को, अधिनियम के अधीन किसी वारोप पर उन-

पर कमान की व्यक्ति रखने वाले किसी बरिष्ठ आफिसर के आदेशों के अधीन और अनुसार ही गिरफ्तार किया जाएगा अन्यथा नहीं।

(2) उप-नियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, अधिनियम के अधीन किसी व्यक्ति की किसी बरिष्ठ आफिसर द्वारा तब ही गिरफ्तार किया जाएगा,—

(क) यदि वह ऐसे बरिष्ठ आफिसर के विशद् कोई अपराध करता है, या ।

(ख) यदि वह ऐसे बरिष्ठ अधिकारी की दृष्टिगोचरता में कोई अपराध करता है, या ।

(ग) यदि वह विचार्यालतापूर्वक व्यवहार कर रहा है और उक्त बरिष्ठ आफिसर ऐसे विचार्यालतापूर्वक व्यवहार को रोकने के लिए, ऐसे किसी व्यक्ति को गिरफ्तार करना आवश्यक समझता है।

(3) उप-नियम (2) के अधीन गिरफ्तार करने वाला बरिष्ठ आफिसर ऐसी गिरफ्तारी की रिपोर्ट गिरफ्तार किए गए व्यक्ति के कमान आफिसर को यथा संभव शीघ्र और हर हालत में जीवीस घटे के भीतर भेजेगा और कमांडेंट के रैक और उसमें ऊपर के रैक के किसी आफिसर की गिरफ्तारी की दशा में उसके ठीक बरिष्ठ आफिसर की भेजेगा।

7. गिरफ्तारी किस प्रकार अधिरोपित की जाएगी—(क) बंद गिरफ्तारी—(1) (क) नाविकों और अस्थायीवित व्यक्तियों की दशा में बदल गिरफ्तारी, गिरफ्तार किए जाने वाले व्यक्तियों को सूचित करके और उसको किसी समान या उच्चतर रैक के व्यक्ति के अनुरक्षण के अधीन परिरोध के स्थान तक चलने का आवेदन करके अधिरोपित की जाएगी।

(ख) जहाँ ऐसा कोई अनुरक्षक उपलब्ध नहीं है वहाँ गिरफ्तार व्यक्ति को तट रक्कम, पुलिस अधिकारी या उसकी अनुस्थिति में उसके पीछे या केन्द्र या परिरोध के अन्य स्थान के अन्य इमूटी आफिसर के पास तुरत रिपोर्ट करने का आवेदन किया जाएगा।

2(क) आफिसरों और अधीनस्थ आफिसरों की दशा में बदल गिरफ्तारी ऐसे आफिसर मा अधीनस्थ आफिसर को किसी अन्य समान या उच्चतर रैक के व्यक्ति को अभिरक्षा में रख कर अधिरोपित की जाएगी और वहाँ कहीं यावश्यक समझा जाए ऐसे आफिसर या अधीनस्थ आफिसर को गार्ड के भारसान के अधीन परिणद किया जा सकेगा।

(क) गिरफ्तारी के अधीन व्यक्ति अपने ब्लांटर या परिरोध के ब्लांट को कमान आफिसर या उसके कमान आफिसर द्वारा इस निमित्त प्रशासित बरिष्ठ आफिसर की अनुका के बिना नहीं छोड़ेगा।

(ख) कुली गिरफ्तारी—3(क) कुली गिरफ्तारी, गिरफ्तार किए जाने वाले व्यक्ति को (वह कोई आफिसर, अधीनस्थ आफिसर, नाविक या कोई अन्य अस्थायीवित व्यक्ति है) वह सूचना दे कर कि वह कुली गिरफ्तारी के अधीन है और वह स्वयं ऐसी सीमाओं के भीतर रहेगा और कमान आफिसर या ऐसी गिरफ्तारी करने वाले संबंधित बरिष्ठ आफिसर द्वारा इस निमित्त विनियोजित की जाए।

(क) कमान आफिसर व उपर्युक्त खंड (क) में विनियोजित सीमाओं में समर्थ-समय पर परिवर्तन कर सकेगा।

8. गिरफ्तारी के पश्चात् अव्यवेषण—अभिरक्षा में लिए गए किसी व्यक्ति के विशद् जो अधिनियम के अधीन है लगाए गए आरोप का, उपर्युक्त प्राधिकारी द्वारा अविलम्ब अव्यवेषण किया जाएगा और उसके पश्चात् यथागत शीघ्र या तो ऐसे व्यक्ति के विचारण की कार्यवाही की जाएगी या उसके अभिरक्षण से निर्मुक्त कर दिया जाएगा।

9. अव्यवेषण के दौरान गिरफ्तारी से निर्मुक्त—नियम 7 के अधीन गिरफ्तार, किए गए किसी व्यक्ति को, कमान आफिसर या कमान आफिसर से बरिष्ठ इस आफिसर के आवेदन के अधीन गिरफ्तारी से निर्मुक्त कर दिया जाएगा।

(2) नियम 10 के उपबन्धों के अधीन रहते हुए, किसी व्यक्ति को, उसके विशद् नए साक्ष के भाष्यार पर ही, पुनः गिरफ्तार किया जाएगा अन्यथा नहीं।

10. पुनः गिरफ्तारी पर प्रतिकूल प्रभाव द्वाले बिना निर्मुक्ति—अव्यवेषण के पूरा होने मा किसी तट रक्कम व्यापालय के संयोजन के संबंधित रहने तक, किसी ऐसे व्यक्ति को जो गिरफ्तार किया गया है, पुनः गिरफ्तारी पर प्रतिकूल प्रभाव द्वाले बिना उसके कमान आफिसर से बरिष्ठ किसी आफिसर द्वारा निर्मुक्त किया जा सकेगा।

11. गिरफ्तारी कब अधिरोपित की जाएगी—(1) कोई व्यक्ति को निम्नलिखित से आरोपित है:

(क) धारा 19, 20, 21 या 22 के अधीन कोई अपराध;

(ख) मृत्यु या ग्राजीवत फारांदास से व्यवर्तीय कोई सिविल अपराध;

(ग) अधिनियम के अधीन कोई अन्य अपराध;—

(i) यदि अत्युपासन के हित में ऐसा अपेक्षित हो;

या

(ii) यदि संबंधित व्यक्ति जानवृत्तकर अनुकासन को जर्जर करता है; या

(iii) यदि संबंधित व्यक्ति हिस्तात्मक स्थान का है;

या

(iv) यदि संबंधित व्यक्ति के, खिचारण से बचने की दृष्टि से अनुपस्थित रहने की संभावना है;

या

(v) यदि संबंधित व्यक्ति द्वारा साक्षियों की बातों बालंगे या साक्ष बिगाड़ने की संभावना है;

गिरफ्तार किया जाएगा।

(2) जहाँ किसी गिरफ्तार व्यक्ति में शीमारी के स्वरूप हों यहाँ ऐसे व्यक्ति को विकिसीय सहायता दी जाएगी।

13. मत व्यक्तियों को गिरफ्तारी की दशा में विशेष उपबन्ध—

(1) जहाँ किसी मत व्यक्ति की गिरफ्तार किया गया है यहाँ उसे जहाँ तक संभव हो भ्रष्टग से परिवर्द्ध किया जाएगा और हर दो घटे में एक बार, इमूटी आफिसर, इमूटी अधीनस्थ आफिसर या तट के भारसान के व्यक्ति द्वारा उसका परिवर्तन किया जाएगा।

(2) किसी मत व्यक्ति को उसके मामले के अव्यवेषण के लिए किसी बरिष्ठ आफिसर के समक्ष तब तक नहीं दे जाया जाएगा, जब तक कि वह अमत नहीं हो गया है।

13. उन व्यक्तियों की दशा में गिरफ्तारी जिनके विचारण के लिए अव्यवेषण कर विधा गया है—जब तक कि संयोजक प्राधिकारी अस्थायी विनियोजित न कर, तब रक्कम व्यापालय द्वारा किसी व्यक्ति के, विचारण के प्रारम्भ पर, उक्त व्यक्ति की गिरफ्तार कर नियम जाएगा और विचारण के द्वारान गिरफ्तार रहेगा।

(2) जहाँ किसी तट रक्कम व्यापालय द्वारा कार्रवास से कम का बोई दंडादेश परित किया जाता है वहाँ गिरफ्तार व्यक्ति को कमन आफिसर द्वारा निर्मुक्त कर दिया जाएगा।

परन्तु यह कि किसी ऐसे व्यक्ति को, जिसे अव्यवेषण किए जाने का दंडादेश दिया गया है कर्तव्य वर महीं रखा जाएगा।

14. विलम्ब की रिपोर्ट --

(1) (क) विलम्ब के लिए धारा 60 के अधीन यथा अवैधत कारणों पर रिपोर्ट परिषिद्ध 1 में उल्लिखित प्रलय में होगी और यह कमान आफिसर द्वारा उस उप-महानिरीक्षक की जिसके अधीन अभियुक्त सेवा कर रहा है, आरनिम्फ रिपोर्ट के पश्चात प्रत्येक आठ दिन के अन्तराल पर भेजो जाएगी।

(ब) प्रत्येक विलम्ब की रिपोर्ट की एक प्रति उस महानिरीक्षक को भी भेजी जाएगी जिसके अधीन अभियुक्त सेवा कर रहा है।

(2) जहां अभियुक्त को विचारण किए जिता तात मास से अधिक की अधिकता के लिए गिरफ्तार रखा जाता है वहां कमान आफिसर द्वारा की गई कार्रवाई से संबंधित एक विशेष रिपोर्ट और विलम्ब का कारण महानिरीक्षक यो भेजी जाएगी जिसकी एक-एक प्रति संबंधित उप-महानिरीक्षक और महानिरीक्षक को भी भेजी जाएगी।

15. गिरफ्तार व्यक्ति के अधिकार -- (1) (क) गिरफ्तार किए गए किसी व्यक्ति को गिरफ्तार करते समय उसके विद्वान आरोग्यों को विशिष्टियों की सुचना गिरफ्तार करते ताले आफिसर द्वारा, लिखित में ही जाएगी।

(ब) उक्त विशिष्टियों साथारण भाग में होगी और अभियुक्त की स्पष्ट भी को जाएगी।

(ग) बांड (क) में 1कसी बात के लिए हुए भी जहां अन्वेषण के दौरान, अभियुक्त द्वारा किए गए अन्य अपराधों का पता चलता है वहां ऐसे व्यक्ति की उन अपराधों से आरोपित करना विप्रिपूर्ण होगा।

(2) (क) डम्पटी आफिसर या डम्पटी अधीनस्थ आफिसर गिरफ्तार व्यक्ति का प्रतिदिन परिवर्तन करेगा और गिरफ्तार व्यक्ति के द्वारा किए गए कसी अनुरोध और अन्यायोदय पर कमान आफिसर के आवेदन लेगा।

(ब) गिरफ्तार व्यक्ति द्वारा किए गए अनुरोध या अन्यायोदय परिषिद्ध II में उल्लिखित प्रलय में कर्ता किए जाएंगे।

तट रक्षक न्यायालय और दण्ड न्यायालय के बीच अविकारिता का अन्यन

16. तट रक्षक न्यायालय या दण्ड न्यायालय द्वारा मामलों का विचारण न्यायालय (1) जहां कोई अपराध किसी दण्ड न्यायालय और किसी तट रक्षक न्यायालय, दोनों द्वारा विचारणीय है वहां धारा 71 में निर्दिष्ट कोई आफिसर,

(क) (i) जहां अपराध, अभियुक्त द्वारा तट रक्षक के सदस्य के द्वारा उसके कर्तव्य के अनुकूलन के अनुकूल में किया गया है, या

(ii) जहां आरोप सरकारी या तट रक्षक, या अधिनियम के अधीन किसी व्यक्ति की संपत्ति के संबंध में किया गया जाता है, या

(iii) जहां अपराध, अधिनियम के अधीन किसी व्यक्ति के विरुद्ध किया जाता है,

(ब) किसी अन्य मामले में,

विविषय कर सकेगा कि अनश्वसन के हितों में यह आवश्यक होगा या नहीं कि किसी व्यक्ति के, जो अधिनियम के अधीन है, जिसके द्वारा ऐसे अपराध का किया जाना अधिकारित है, तट रक्षक न्यायालय द्वारा विचारण का द्वारा किया जाए

(2) तट रक्षक न्यायालय द्वारा किसी अपराधी के विचारण के पाद विविषय करते समय, धारा 71 में निर्दिष्ट कोई आफिसर निम्नलिखित सभी बातों या उनमें से किसी को छान में रखेगा, अर्थात् :-

(क) अपराधी मन्त्रिय इयूटी पर है या सक्रिय इयूटी के लिए उसे बेलावनी दे दी गई है और यह महसूस किया जाता है कि वह ऐसी इयूटी से बचने का प्रयत्न कर रहा है;

(ब) अपराधी एक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा किसी व्यक्ति है और अपराध गंभीर नहीं है और अपराधी का किसी वंड न्यायालय द्वारा विचारण उसके प्रशिक्षण पर सारकान रूप से प्रभाव दालेगा,

(ग) अपराधी की बायत, मामले की प्रक्रिया को बेचते हुए अधिनियम के अधीन संक्षिप्त कार्यवाही की जा सकती है।

17. तट रक्षक न्यायालय द्वारा विचारण न किए जाने वाले मामले नियम 16 के उपनियम (1) के उपबन्ध पर प्रतिकूल प्रभाव डाले जिन, किसी अपराधी की बाबत तट रक्षक न्यायालय द्वारा विचारण करने के लिए बाबा नहीं किया जा सकेगा --

(क) जहां अपराध उसके द्वारा किसी ऐसे अन्य व्यक्ति के साथ मिलकर किया जाता है जो अधिनियम के अधीन नहीं है और जिसकी पहचान का पता है, या

(ब) जहां अपराध उसके द्वारा कुट्टी या कुट्टी के जिता अनुपस्थित के दौरान किया जाता है।

अन्वेषण और संक्षिप्त निपटाग

18. अपराध की रिपोर्ट :- जहां यह अधिकारित किया जाता है कि किसी व्यक्ति ने, जो अधिनियम के अधीन है उसके अधीन दण्डनाये कोई अपराध किया है वहां अभिकथन, परिषिद्ध III में उल्लिखित प्रलय में लेखाबृद्धि किया जाएगा।

19. दिन के आफिसर/निरानी के आफिसर कार्यपालक आफिसर द्वारा सुनाया गया कार्यपालक

(1) (क) आफिसर से भिन्न ऐसी किसी व्यक्ति की बात में, जो अधिनियम के अधीन है मामले की सुनवाई प्रयत्नतः कमान आफिसर यथास्थिति द्वारा आफिसर/निरानी आफिसर द्वारा और उसके पश्चात कार्यपालक द्वारा की जाएगी।

(ब) मामले, अभियुक्त की उपलब्धि में साक्ष्य देंगे, जिसे उसकी प्रति परीक्षा का अधिकार होगा।

(ग) अभियुक्त को अपनी प्रति परीक्षा में साक्षियों को बुलाने और कथन करने का अधिकार होगा।

(2) आरोप की उपनियम (1) के अधीन सुनाया है के पश्चात प्रभागीय आफिसर और कार्यपालक आफिसर --

(क) कोई ऐसा वंड अधिनियम कर सकेगा जिसे अधिनियम के लिए वह समझता है, या

(ब) जब आरोप साक्षियों मही होता है तब आरोप को खारिज कर सकेगा, या

(ग) मामला, कमान आफिसर को निर्दिष्ट कर सकेगा, परन्तु यह कि वह आरोप को खारिज नहीं करेगा या वंड अधिनियम कर्ता करेगा --

(क) यदि मामला कमान आफिसर द्वारा स्वयं निपटाने के लिए आवश्यक किया जाता है, या

(ब) यदि अभियुक्त दण्ड निरस्तारी में है।

20 कमान आफिसर द्वारा सुनवाई

कमान आफिसर इस अधिनियम के अधीन अधिकारी के विरुद्ध आरोपी की सुनवाई करेगा और :—

- (क) उन बड़ों में से, जो अधिनियम करने के लिए वह साक्षत हैं, कोई दण्ड अधिनियम कर सकेगा या
- (ख) आरोप को आरिज कर सकेगा, या
- (ग) साक्ष्य का अभिलेख तैयार करने या उसके विरुद्ध साक्ष्य का सर तंत्र कर करने के लिए अभियुक्त को प्रतिप्रेषित करेगा।
- (घ) उठ रखकर स्थायालय द्वारा विचारण के लिए उसका प्रतिप्रेषण कर सकेगा :

परन्तु उन मामलों में जहाँ कमान आफिसर धारा 57 के अधीन किसी दण्ड के अधिनियम की प्रस्थापना करता है जिसका अनुमोदित किया जाना अपेक्षित है वहाँ वह साक्ष्य का अभिलेख या साक्ष्य का सार तैयार करेगा परन्तु वह और कि वह आरोप को आरिज करेगा यदि उसकी राय में आरोप साक्षित नहीं हुआ है या वह आरोप को आरिज कर सकेगा यदि अभियुक्त के पूर्व चरित्र और उसके विरुद्ध आरोप की प्रकृति के कारण वह समझता है कि उसमें आगे कार्यवाही करता उन्हीं है।

परन्तु यह भी कि उन सभी अपराधों की दशा में जो मृत्यु से दण्डनीय है। साक्ष्य लेखकद्वारा किया जाएगा।

21. अपराध से सम्बद्ध करना —कमान आफिसर किसी ऐसे नियम में कोई कार्यवाही नहीं करेगा :—

- (क) जहाँ अपराध, जिससे अभियुक्त आरोपित है स्वयं कमान आफिसर के विरुद्ध है; या
- (ख) जहाँ कमान अधिकारी स्वयं अभियुक्त के विरुद्ध मामले में साक्षी है, या
- (ग) जहाँ कमान आफिसर मामले में व्यापकतगत रूप से अन्यथा हितबद्ध है वहाँ अभियुक्त को मामले के नियमार्थ के लिए डिस्ट्रिक्ट कमांडर या प्रादेशिक कमांडर के अधीन दूसरे पोस्ट या स्टेशन पर सगा दिया जाएगा;

परन्तु यह कि कमान आफिसर किसी आरोप की सुनवाई करने के लिए केवल इस कारण से निरहित नहीं होगा कि अपराध उत उठ रखकर स्थायालय या थेंड या संसद्या को संपत्ति के विरुद्ध किया गया है जिसका कि वह कमान आफिसर स्वयं या न्यासी है या इस कारण से कि अपराध ऐसे कमान आफिसर के आदेशों की घवता का है।

22. आरोपों पर संक्षिप्त कार्यवाही न की जाना :

धारा 17 या धारा 19 के छंड (क) या धारा 23 के छंड (क) धारा 40 के साधारण उपर्युक्त या थोरी को छोड़कर अधीन किसी अपराध के आरोप या इन अपराधों में से किसी के दुष्प्रेरण के या किसी उन्हें करने के प्रयास करने के आरोप के बारे में संक्षिप्त कार्यवाही नहीं की जाएगी।

23. साक्ष्य का अभिलेख :

- (1) कमान आफिसर या तो स्वयं साक्ष्य का अभिलेख तैयार करेगा या ऐसा करने के लिए दूसरे आफिसर को भेजेगा।
- (2) साक्षी, अभियुक्त की उपर्युक्ति में अपना साक्ष्य देंगे और अभियुक्त को उम सभी साक्षियों की, जिन्होंने उसके विरुद्ध साक्ष्य दिया है, प्रतिपरीका करने का अधिकार होगा।

(3) अभियुक्त के विरुद्ध सभी साक्षियों को परीक्षा के पश्चात्, उसको निम्नलिखित शब्दों में चेतावनी दी जाएगी :—

“यदि आप वाहें तो आप कोई कथन कर सकते हैं, आप ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं हैं और जो कुछ भी आप कथन करेंगे लिख लिया जाएगा और साक्ष्य में उसका प्रयोग किया जा सकेगा।”

उपरोक्त रीति में चेतावनी दिए जाने के पश्चात् अभियुक्त जो कथन करता है उसको लिख लिया जाएगा।

(4) अभियुक्त अपनी प्रतिरक्षा में साक्षियों को बुलावा सकेगा और साक्ष्य को लेखकद्वारा करने वाला आफिसर ऐसा कोई प्रश्न पूछ सकेगा जो ऐसे साक्षियों द्वारा दिए गए साक्ष्य को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक है।

(5) सभी साक्षी साक्ष्य पर या प्रतिशान पर साक्ष देंगे : परन्तु अभियुक्त को कोई साक्ष्य या प्रतिशान नहीं बिलाया जाएगा और नहीं उसकी प्रतिपरीका की जाएगी।

(6) (क) साक्षी द्वारा किए गए कथन सामान्यतया बुतात के रूप में अभिलिखित किए जाएंगे और साक्ष्य को अभिलिखित करने वाला आफिसर अभियुक्त के अनुरोध पर साक्ष्य के किसी भाग को प्रश्न और उत्तर के रूप में अभिलिखित करने की अनुमति दे सकेगा।

(ज) साक्षी अपने कथनों पर, उनको पढ़ कर सुनाए जाने और स्पष्ट कर दिए जाने के पश्चात् हस्ताक्षर करेंगे।

(7) जहाँ किसी साक्षी को हजिर होने के लिए बिलाया नहीं किया जा सकता या वह उपलब्ध नहीं है या उसकी ज्ञानिरी अनुचित बिलम्ब और व्यय के बिना नहीं कराई जा सकती और साक्ष्य अभिलिखित करने वाले आफिसर द्वारा इस नियम कोई प्रमाण-पत्र देने के पश्चात्, ऐसे साक्षी द्वारा हस्ताक्षरित लिखित कथन अभियुक्त को पढ़कर सुनाया जाएगा और साक्ष्य के अभिलेख में सम्प्रसित कर लिया जाएगा।

(8) साक्ष्य को अभिलिखित कर देने के पश्चात् साक्ष्य अभिलिखित करने वाला आफिसर निम्नलिखित प्रश्न में एक प्रमाण-पत्र देगा :—

“प्रमाणित किया जाता है कि _____ द्वारा आचिष्ट साक्ष्य का अभिलेख अभियुक्त की उपर्युक्ति और अवण गोचरता में किया गया या और नियम 23 के उपरांतों का अनुपालन किया गया है।”

24. साक्ष्य का सार—साक्ष्य का सार, कमान आफिसर या उसके द्वारा प्रतिनियुक्त किसी आफिसर द्वारा तैयार किया जाएगा।

(2) साक्ष्य के सार में निम्नलिखित होगा।

(क) (i) साक्षियों के हस्ताक्षरित कथन जहाँ कहीं उपलब्ध हों या उनका सारांश;

(ii) विचारण के लिए प्रस्तुत की जाने के लिए आकाशित सभी दस्तावेजों की प्रतियाँ।

(ख) जहाँ किसी साक्षियों के हस्ताक्षरित कथन उपलब्ध नहीं है वहाँ साक्ष्य का सारांश।

(3) साक्ष्य के सार की एक प्रति, उसे तैयार करने वाले आफिसर द्वारा अभियुक्त की जाएगी और नियम 23 के उपर्युक्त

(3) में अधिकारित रीति से चेतावनी दिए जाने के पश्चात् यदि अभियुक्त कोई कथन करता आहता है तो उसे कथन करने का अवसर दिया जाएगा।

परन्तु यह कि अभियुक्त को अपना करने के लिए ऐसा समय दिया जाएगा जैसा कि परिस्थितियों में युक्ति-युक्त हो, परन्तु किन्तु वह किसी भी दशा में साक्ष का सार प्राप्त करने के पश्चात् जीवित बढ़े से कम का नहीं होगा।

25. पुलिस द्वारा मामलों का अन्वेषण :—जहाँ कमान आफिसर ऐसा करता आधिकारक समझता है वहाँ वह किसी मामले को अन्वेषण के लिए पुलिस में रिपोर्ट दें कर सकेगा।

26. साक्ष के सार को अभिविष्ट करने के पश्चात् कमान आफिसर द्वारा मामले का निपटान।

जहाँ किसी आफिसर को साक्ष का अभिलेख या उसका सार देयार करने के लिए प्रतिनियुक्त किया गया है वहाँ वह उसको कमान आफिसर को अधिवित करेगा।

(2) कमान आफिसर, साक्ष के अभिलेख या सार का अध्ययन करने के पश्चात् ;

(क) आरोप को बारिज कर सकेगा, या

(ख) आरोप की पुनः सुनवाई कर सकेगा और संक्षिप्त दण्डों में कोई एक अधिनिर्णीत कर सकेगा, या किसी अधिवित को तट रक्क के देखा, से पवर्युत करने का कोई आवेदन नहीं, उसके साथ अत्य दण्ड भी दिए गए हैं या नहीं, केवल, महानिदेशक के अनुमोदन से किया जाएगा।

(ग) धारा 57 के दण्ड (क), (ग), और (घ) में विविध दण्ड तब तक प्रभावी नहीं होंगे जब तक कि दण्ड अनुमोदन प्रलेप यथा स्थिति, उप महानिरीक्षक या उप-न्यायालीक द्वारा जिसके अधीन अपराधी सेवा कर रहा है, अनुमोदित नहीं कर दिया जाता है;

(घ) कारबास पवर्युति, निरोध या सामान्य सैनिकों में अवनति या निवारी पक्ष में अवनति के दण्डों के अधिनिर्णय के लिए दण्ड अनुमोदन प्रलेप के साथ साक्ष का अभिलेख या सार होगा।

(इ) यदि किसी दण्ड का अनुमोदन करने की शक्ति वाला कोई आफिसर किसी कारण से समझता है कि कोई प्रस्तावित दण्ड अधिभिमान्य अत्याधीय पूर्ण, या अत्यधिक है तो वह किसी कमान आफिसर को दण्ड देने की शक्तियों की सीमाओं के धोन्तर दण्ड को रद्द कर उसमें फेरकर या दण्ड का परिवर्तन कर सकेगा और इस प्रकार परिवर्तित दण्ड होगा।

(ज) अभियुक्त के विचारण के लिए किसी तट रक्क क्ष्यायालय के संगोष्ठी के लिए समोजक प्राविधिकारी को आवेदन करेगा।

27. तट रक्क क्ष्यायालय द्वारा विचारण के लिए आवेदन—

तट रक्क क्ष्यायालय द्वारा विचारण के लिए कोई आवेदन कमान आफिसर द्वारा परिशिष्ट 4 में उत्पर्युत प्रलेप में किया जाएगा और उसके साथ साक्ष के सार और आरोप के अभिलेख की पांच प्रतियाँ और ऐसी अत्य दस्तावेजों जो उस आवेदन प्रलेप से बर्जित हैं, भेजी जाएंगी।

28. संक्षिप्त दण्ड .—धारा 57 में प्रणीत दण्ड निम्नलिखित रूप में संक्षिप्त : अधिनिर्णीत किए जा सकेंगे .—

(क) यदि किसी अधीनस्थ आफिसर की धारा 52 के दण्ड (घ) के अधीन दण्डित किया जाता है और ऐसे अधीनस्थ आफिसर को अधीनस्थ आफिसर के रैक से सिस्टमदर रैक में घटनत किए जाने की दशा में तट रक्क सेवा में निम्नता होने का विकल्प दिया जाएगा,

(ख) किसी प्रपराध की रिपोर्ट का अनुमोदन करने की शक्ति रखने वाला आफिसर .—

(i) किसी कारण से यह समझता है कि प्रस्तावित दण्ड अत्यधिक है, तो वह किसी कमान आफिसर की दण्ड देने की शक्तियों की सीमा से भीतर दण्ड में परिवर्तन कर सकेगा और इस प्रकार परिवर्तित दण्ड अधिनिर्णीत दण्ड होगा।

(ii) किसी ऐसे दण्ड का प्रपराध रिपोर्ट का अनुमोदन कर सकेगा जो कमान आफिसर द्वारा प्रस्तावित से कम है;

(ग) दंडादेश के धोषित किए जाने के पूर्व किसी भी साक्ष कमान आफिसर को यदि और विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि ऐसा करता बांधीरी है तंडादेश में उपातर कर सकेगा या उसे आपस से सकेगा।

परन्तु यह कि यदि अपराध की रिपोर्ट अनुचित प्राधिकारी द्वारा अनुमोदित कर दी गई है तो दंडादेश को उस प्राधिकारी की सहमति के बिना उपातरित या आपस नहीं किया जाएगा।

(घ) हस्ताक्षर और अनुमोदन के पश्चात् जहाँ आवश्यकता हो वहाँ कमान आफिसर द्वारा प्रपराध की रिपोर्ट पर सारीख लिखी जाएगी और तुरन्त अपेक्षारिक रूप से अपराधी को पड़कर सुनाई जाएगी।

(ङ) प्रपराध की रिपोर्ट की तरीख और प्रपराध की रिपोर्ट को पढ़ने की तारीख एक ही होगी;

(च) किसी ऐसे अपराधी को, जिसके मामले का पूरी तरह अध्येतर कर लिया गया है, किसी अस्त्यालय को भेज दिया गया है तो उसकी प्रपराध की रिपोर्ट अपेक्षारिक रूप से पढ़कर सुनाई जाएगी जब तक कि विकिस कमान आफिसर यह प्रमाणित नहीं कर देता कि अपराधी विकिसक दृष्ट्यः इतना अयोग्य है कि अपराध की रिपोर्ट पढ़कर उसे सुनाई जा सके। उस मामले में अपेक्षारिक रूप से पढ़ने का कार्य कमान आफिसर द्वारा प्रयोग कार्यालय में अपराधी को अनुस्थिति में किया जा सकेगा और अपराध की रिपोर्ट का इस प्रकार अपेक्षारिक रूप से पढ़ने का वही प्रमाण होगा मानों वह अपराधी को पढ़कर सुनाई गई हो ही।

(छ) अपराधी की अनुस्थिति में अपराध की रिपोर्ट के पढ़ने के तथा कों प्रपराध की रिपोर्ट में वापसिवित किया जाएगा, और प्रपराध को इसकी सूचत उसके ऐसी सूचता प्राप्त करने के बीच अनुस्थिति में होते ही दी जाएंगी।

29. नविकों को दशा में सम्मत सैनिकों में अवनति या निम्नतर रैक में अवनति

किसी नाविक को किसी रैक या किसी निम्नतर रैक में अवनति को या सकेंगे परन्तु यह कि किसी नाविक की निम्नलिखित किसी रैक में अवनति नहीं की जाएगी—

(क) धारान्विति, नाविक या नाविक के रैक से नीचे,

(ख) उस रैक से बाहर में या सापेक्ष रैक से नीचे जिसमें उसने प्रथम प्रवेश किया है यदि सेवा तस्वीरात् जारी नहीं थी और पुनः प्रविष्टि तथा बदलनन्दन के अधीन की गई थी।

30. सिविल अपराधों की याचत जुमाना

यदि कोई अर्धांतस्थ आकिसर नविक या अन्य ग्राम्यवेषित व्यक्ति किसी सिविल अपराध का दोषी पाया जाता है तो उस पर संक्राप्तः वो सो रथ्ये से अधिक का जुमाना अधिरोपित किया जा सकेगा।

31. अनुचित अनुपस्थित के लिए बेतन और भर्तों का अपवर्तन

(1) प्रत्येक ऐसे ग्रामीणस्थ आकिसर, नविक या अन्य ग्राम्यवेषित व्यक्ति को जो अपने पोता या छुट्टी के स्थान पर यिनि छुट्टी अनुपस्थित या अनुचित रूप से छाँड़ने का दोषी पाया जाता है, वह निम्नलिखित मापमान के अनुसार बेतन के अपवर्तन और छुट्टी के रोके जाने के दण्ड से दंडित किया जाएगा अर्थात्—

(अ) जहाँ अनुपस्थित की अवधि तेन घंटे से अधिक नहीं है वहाँ एक दिन का बेतन और एक दिन की छुट्टी;

(ब) जहाँ अनुपस्थित की अवधि तीन घंटे से अधिक है और 36 घंटे से अधिक नहीं है, वहाँ प्रत्येक तीन घंटे या उसके भाग के लिए अनुपस्थित के लिए एक दिन का बेतन और एक दिन की छुट्टी;

(ग) जहाँ अनुपस्थित की अवधि छत्तीस घंटे से अधिक है, वहाँ छत्तीस घंटे तक प्रत्येक तीन घंटे के लिए एक दिन का बेतन और एक दिन की छुट्टी और तत्पश्चात् छह घंटे की अवधि या छह घंटे के भाग के लिए एक दिन का बेतन, तथापित किसी भी दशा में छुट्टी का रोका जाना साठ दिन से अधिक नहीं होगा;

(घ) जहाँ अनुपस्थित की अवधि तुच्छ है या जहाँ परिशमनारी परिस्थितियाँ हैं और अनुचित अनुपस्थित की अवधि छत्तीस घंटों से अधिक नहीं है वहाँ कमान आकिसर अपवर्तन को उत्तीर्ण रखने तक जिनता वह युक्ति युक्त ममते अपने विवेकानुसार कर सकेगा। छुट्टी को रोका जाना तत्समान सीमा तक कर किया जा सकेगा।

(ङ) उपनियम (घ) के उपरांत, छुट्टी के उपरांत छत्तीस घंटे तक अनुपस्थिति को, जिसके संबंध में कार्यवाही अन्य अपराधों के साथ-साथ की जाती है, लागू होगें।

(च) यदि अनुपस्थित की अवधि छत्तीस घंटे से अधिक है या अपराध गुरुतर या दोषारा किया जाता है तो उपनियम (1) में वर्णित मापमान पर बेतन के अपवर्तन और छुट्टी के रोके जाने के अतिरिक्त इन नियमों द्वारा अनुचित कोई अन्य रंड अपराध की मात्रा के अनुसार अधिनियम किया जा सकेगा और यदि आपदाधिक व्यवहार को न्यायोचित ठहराने के लिए घूमीकरण की परिस्थितियाँ हैं तो कमान अधिकारी इनपर विवेकानुसार, अपवर्तन में कामी कर सकेगा, परन्तु यह कि वास्तविक अपवर्तन (अर्थात् निरोध को छोड़कर) प्रत्येक दिन की अनुपस्थिति के लिए एक दिन से कम नहीं किया जाएगा और जहाँ छुट्टी का रोका जाना उसके मापमान के अनुसार तीस दिन या उत्तरे कम होगा वहाँ उसमें भी तत्समान रूप से कमी की जा सकेगी,

(छ) यदि उपनियम (1) के अनुसार अपवर्तन के दिनों की संख्या या यदि निरोध के रंड के कारण छुट्टी के उपरांत अनुपस्थित रहने आला अविक्षित, परिस्थित किया जाता है, और उसमें अपवर्तन के दिनों की संख्या मिलाकर, कुल साठ दिन से अधिक होगी, तो किसी अधिक अपवर्तन

को माफ कर दिया जाएगा, परन्तु यह कि किसी भी दशा में वास्तविक अपवर्तन (निरोध के दंड को छोड़कर) प्रत्येक दिन की अनुपस्थिति के लिए एक दिन के बेतन में कम नहीं किया जाएगा।

32. अपवर्तन से सर्वोच्चत साधारण उपबंध

(1) इन नियमों के फ्रैज़ेज़न के लिए एक दिन के बेतन के अंत गैरपूर बेतन और भर्ते छोंगे किन्तु धूमाई भमा, अतिरिक्त बेतन, विशेष बेतन या रक्त संबंधी बेतन इसके अंतर्गत नहीं होगा;

(2) अपवर्तन का मापमान अभियंत्रन में आरोपित व्यक्तियों भी दशा में लागू नहीं होगा।

33. धारा 26 के अधीन दंड की मीमां

(1) छुट्टी के उपरांत अनुपस्थित रहने के लिए अधिकतम दंड जो सिद्धांततः अधिनियमीत किया जाना चाहिए वह निरोध होगा और किसी गुरुतर अपराध से भिन्न अपराध के लिए ऐसा दंड तीस दिन से अधिक नहीं होगा।

(2) आवेदन किए गए समय पर इयूटी पर बापम न आने का कार्य अनुष्मान के विद्युत मुख्य अपराध गठित करेगा और आराध का गुरुतर होना उस समय पर आवधारित होगा जिसके लिए कोई अविक्षित अनुपस्थित रहता है जिसके संबंध में, प्रत्येक मामले में गुणाग्रण के आधार पर कार्य-वाही की जाएगी।

(3) छुट्टी के उपरांत अनुपस्थित रहने के अपराध, अपराध की रिपोर्ट में निम्नलिखित रूप में अभिनियमित किए जाएंगे—

“छुट्टी के उपरांत अधिकतम दंड से अधिक अनुपस्थित रहा।”

34. नियम 32 और 33 का लागू होना

नियम 32 और 33 के उपबंध, पोत से अनधिकृत रूप से खले जाने उत्तराई दल से अलग रहने जाने और अभियंत्रन से भिन्न अनुचित अनुपस्थिति के अन्य मामलों को, लागू होंगे, सिवाय इसके कि बेतन के अपवर्तन और छुट्टी के रोके जाने के अतिरिक्त अपराध को लागू कोई दंड अधिनियमीत किया जा सकेगा और इस प्रकार के अपराधों के सामान्य मामलों में निरोध की अवधि को करना आवश्यक नहीं होगा।

35. अनुपस्थिति की अवधि की संगणना

आरोग में गम्मिलित अनुचित अनुपस्थिति की अवधि की संगणना छुट्टी समाप्त होने के समय से (या अनधिकृत रूप में निराम जाने के समय में) पोत या इयूटी के स्थान पर बापम आने के समय तक की जाएगी।

(2) जब कोई व्यक्ति अस्थर्पण करता है या उस परिक्षेत्र से दूर, लंब कमान आकिसर, परिस्थितियों की व्यापार में रखते हुए, अनुपस्थिति को, ऐसे अस्थर्पण या पकड़े जाने के समय समाप्त होई समझेगा, किन्तु यदि उस स्थान तक, जहाँ पर छुट्टी समाप्त होई है, बापसी पहुंचने में एक लम्बी यात्रा अवधिनियमित है तो ऐसी यात्रा में लगा समय अनुपस्थिति की अवधि संगणना में सम्मिलित किया जा सकेगा।

(3) जब किसी अनुपस्थिति व्यक्ति को किसी अन्य आदान पर सिविल अधिकारी द्वारा पिरफ्लार किया जाता है और तत्पश्चात् लट रक्षक प्राधिकारियों के हवाले कर दिया जाता है तब उसको छुट्टी दिना अनुपस्थिति की अवधि को सिविल प्राधिकारी द्वारा उसकी गिरफ्तारी के समय में समाप्त होना माना जाएगा।

36. छुट्टी के उपरांत साधारण अनुपस्थिति—जब तक कि छुट्टी के उपरांत अनुपस्थित रहने की पूर्णावृत्ति नहीं की जाती है या अपराध गुरुतर नहीं किया जाता है तब तक छुट्टी के उपरांत अनुपस्थित रहने के

अपराध के, जिसमें 36 घंटे से अधिक की अनुचित अनुपस्थिति अवश्यित है, के लिए दंड बेतन के अपकर्तन और छूटी को रोके जाने तक सीमित होगा किन्तु यदि अपराध, पोत से या कर्तव्य स्थल से अनुचित रूप से चले जाने के परिणामस्वरूप हैं तो अन्य अतिरिक्त छह अधिनिर्णीत किए जा सकेंगे।

37. छूटी के उपरात अनुपस्थिति रहने का गुणतर अपराध।

नियम 31 से 36 के प्रयोजन के लिए छूटी के उपरात अनुपस्थिति रहने का अनाध गुणतर नमस्ता आएगा,

(क) यदि अनुपस्थिति 36 घंटे से अधिक होती है;

(ख) यदि अनुपस्थिति अपना पोत स्थानांतरण पर अपने पोत में नहीं आता है;

(ग) यदि जब छूटी मंजूर की गई थी तब एक बेताबनी दी गई थी कि पोत को जन्माता करने के आवेदन दे दिए गए हैं;

(घ) यदि अपराधी उस समय किसी प्रकार का वह भूल रहा था;

(इ) यदि कोई अन्य गंभीर परिस्थितियाँ हैं;

(2) छूटी के उपरात अनुपस्थिति के गुणतर बनाने के मामले में आरोप गुणतर बनाए गए अपराध के प्रति निर्वेश में हो जाएगा, किन्तु आरोप में कोई ऐसी बात नहीं होगी जो पूर्व अपराध को प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः निर्दिष्ट करें।

38. पुनरावृत अपराध—छूटी के उपरात अनुपस्थिति का पुनरावृत अपराध वह अपराध है जो पहली छूटी के उपरात अनुपस्थिति के अपराध के छह मास की अवधि से उसी पोत या कंद्रे में किया जाता है।

39. मस्ता उम सभी मस्ता के अपराधों के लिए जो किसी पोत में या छूटी से अनुपरिस्थिति के समय या टट से खापिस आने पर, वहाँ ऐसी बापमी स्वेच्छा में या अन्यथा एक दिन के बेतन का अपकर्तन अधिरोपित किया जाएगा। और कोई समस्त अपकर्तन ऐसे अविक्तियों पर अरोपित किया जाएगा जो उम समय मतल है। जब उन को टट रक्षक या अन्य अधिरक्षा में लिया जाता है वहाँ वह छूटी से आए हैं तो उनकी छूटी समाप्त हो गई या नहीं, जब तक कि अपराधी के संबंध में विक्रियावाकारी द्वारा पहले ही कार्यवाही भी की गई हो।

(2) किसी पांत में या इयूटी से अनुपस्थिति के समय, मस्ता के अपराध के लिए, कारावास या निरोध का दंड कमान आफिसर के लिवेकानुसार अधिनिर्णीत किया जा सकेगा।

(3) छूटी या मस्ता के लिए दंड अधिनिर्णीत करते समय कमान आफिसर द्वारा टट रक्षक सेवा को लगाए गए कलंक या हृष्ट अविक्तियों से प्रत्येक मामले की परिस्थितियों पर विचार किया जाएगा।

40. सवाचरण के बिल्लों से अंचित किया जाना—

(1). किसी ऐसे व्यक्ति को, जिसे कारावास या निरोध से दंडादिष्ट किया गया है या किसी नी सीनिक को सामाय सीनिकों में या किसी निम्नतर रैंक में अवनत किया गया है या किसी सवाचरण के बिल्ले से जो वह धारण करता है, अंचित किया जाएगा।

(2) प्रत्याहृत एक बिल्ला छह मास के “बहुत अच्छे आचरण के द्वारा पुरुष प्राप्त किया जा सकेगा और अतिरिक्त बिल्ले ऐसे मामले में पूर्ववर्ती प्रत्यावर्तन की गारीब से दंडादिष्ट छह मास और अवधि के प्रत्यावर्तन किए जा सकेंगे।

(3) यदि किसी व्यक्ति को, बास्तविक तीन वर्ष की सेवा के भीतर त्रुसरी बार बंचन से दंडादिष्ट किया गया है तो प्रथम प्रत्यावर्तन के लिए बारह मास और तत्पश्चात् प्रत्यावर्तन के लिए छह मास प्रत्यावर्तन अहंता होगा।

(4) ऐसा समय जो देने के प्रयोजन के लिए गणना में नहीं लिया जाता है उसको बिल्लों के प्रत्यावर्तन के लिए गणना में नहीं लिया जाएगा।

(5) जब प्रत्यावर्तन करने का समय हो जाता है, तब प्रत्यावर्तन किया जाएगा जाहे वह अंचित उसके लिए दावा करता है या नहीं।

41. धिवंड—धिवंड देवस, उत्तम नाविकों, उत्तम यांत्रिकों और उससे ऊपर के अव्यक्तियों को दिया जाएगा।

42. अतिरिक्त इयूटी और ड्रिल—नाविकों, यांत्रिकों और अन्य अस्थावैयित अविक्तियों को चीदू दिन तक का अतिरिक्त इयूटी और ड्रिल का दंड अधिनिर्णीत किया जा सकेगा। जब वे इस प्रकार बंदित किए जाएं तब वे निम्नलिखित नमी कार्यों के अधीन होंगे—

(क) छूटीयों का बंद होना ;

(ख) अकार्य घंटों के बीच देढ़ घंटे के लिए (17.00 से 18.30 तक) अतिरिक्त इयूटी या ड्रिल करना ;

(ग) बार बार हाजिरी देना ;

(घ) यदि कोई अविक्त अतिरिक्त इयूटी और ड्रिल के दंड के अधीन है तो वह केवल इयूटी पर पोत या केंद्र छोड़ने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा तथापि वह, कमान आफिसर के स्वत्रिवेकानुसार वाँची छूटी पर जाने के लिए अनुज्ञात किया जा सकेगा।

(इ) दंड, रविवार और छूटी के दिन जो तिराकित रहेना किस्त में दिन उस अवधि का भरन होंगे जिसके लिए दंड अधिनिर्णीत किया गया है।

43. छूटी का रोका जाना (1) जहाँ छूटी का रोका जाना छूटी के उपरात अनुपस्थिति रहने के लिए अधिनिर्णीत किया जाता है वहाँ घड़ गुणतर बनाए गए या पुनरावृत अपराध के लिए अधिकारित मापमान से अधिक नहीं होगा ;

(2) ममत्वित मामलों में किसी अन्य अपराध के लिए छूटी का रोका जाना केवल एक दंड के रूप में दो अन्य दंड सहित अधिनिर्णीत किया जा सकेगा

(3) किसी व्यक्ति को उस अवधि के दौरान जब उसकी छूटी रोक दी गई है इयूटी पर पांत या केंद्र छोड़ने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा अन्यथा नहीं।

44. भर्तना :—जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे अपराध के लिए जो स्वयं या स्वीकारण परिस्थितियों को दृष्टि से किसी अधिक गंभीर दंड के लिए योग्य नहीं समझा जाता है तब उसका, दोष अपकर्तन अधिरोपित नहीं किया जाता है छूटी के उपरात अनुपस्थिति रहने के प्रथम हुच्छ अपराध के रूप में भर्तना की जाएगी।

आरोपी और किसी तट रक्षक न्यावालय द्वारा विचारण के पूर्ववर्ती विषयों के संबंध में

45. आरोप-पत्र (1) किसी आरोप-पत्र में, एक बार में विचारण किए जाने वाला विवादक या सभी विवादकों होगे और यदि आरोप उन्हीं तथ्यों पर आधारित हैं या नहीं उसकी या समरूप स्वरूप के अपराधों की अंत्या में हैं तो उसमें एक से अधिक आरोप हो सकेंगे।

परंतु इस बात के होते हुए भी कि उस आरोप-पत्र में अन्य आरोप उन्हीं तथ्यों पर आधारित नहीं हैं दो उसी या समरूप प्रक्रिया के अपराधों की अंत्या में हैं, धारा 25, धारा 36 और धारा 41 के अधीन काई आरोप किसी आरोप-पत्र में सम्मिलित किया जा सकेगा।

(2) प्रत्येक आरोप-पत्र इन नियमों के परिशिष्ट में उपर्युक्त समुचित नमूने के अनुसार होगा।

46. आरोप (1) प्रत्येक अपराध के लिए एक बलग आरोप होगा
 (2)(क) यदि किसी एकत कार्य या कार्यों की आवश्यकी ऐसी किसी प्रकृति की है कि वह संवेदन्तुष्ट है जिसके तथ्य सावित किए जा सकते हैं कौन सा अपराध गठित करेंगे तो अभियुक्त को समझ या ऐसे अपराधों में से किसी एक के करने से आरोपित किया जा सकेगा और ऐसे अपराधों की किसी संधारक ने संबंध में तुरंत विचारण किया जा सकेगा या अनुकूलतः उसे उक्त अपराधों में से किसी एक अपराध के करने से आरोपित किया जा सकेगा।
 (ख) अधिक गंभीर अपराधों का आरोप किसी कम गंभीर अपराध के आरोप से पूर्ववती होगा।

(3) प्रत्येक आरोप में दो भाग होंगे, अर्थात्—

- (क) अपराध का कथन; और
- (ख) अपराध की विशिष्टियाँ।

(4) यदि विचारण अपराध नहीं है तो अपराध, यथानिकट साथ अविवितम के शब्दों में वर्णित किया जाएगा और यदि विचारण अपराध का पर्याप्ततः वर्णन कर सकें।

(5)(क) विशिष्टियों में, अभियुक्त अपराध का समय और स्थान और वह अभियुक्त (यदि कोई है) जिसके विचारण आरोपित किया या वह वस्तु (यदि कोई है) जिसकी वास्तव वह अपराध किया गया या किमित होगी और वह इस बात के लिए पर्याप्त होनी चाहिये कि अभियुक्त को उस विचारण की जिससे वह अधियुक्त है सूचना मिल जाए।
 (ख) उस बात में जिसमें ऐसी विशिष्टियाँ अभियुक्त को उस विचारण की जिससे वह आरोपित है, सूचना देने में पर्याप्त नहीं है, आरोप में उस रीति को जिसमें अपराध किया गया था, विशिष्टियों को जो उस प्रयोगक्रम के लिए पर्याप्त हो, होगी।

47. संयुक्त आरोप—(1) किसी भी संक्षय में अभियुक्त, ऐसे किसी अपराध के लिए जो उनके द्वारा किया गया है, संयुक्त रूप से आरोपित और एक साथ विचारित किए जाएंगे।

(2) किसी भी संक्षय में अभियुक्त आहे उनको संयुक्त रूप से आरोपित नहीं किया गया है, ऐसे किसी अपराध के लिए, जिसके बारे में वह प्रकाशन है कि वह उनमें से किसी एक या अधिक द्वारा किया गया है या अन्यथा अन्य या द्वारा उसका दृष्टिरेख किया गया है, भी एक साथ विचारित किए जा सकेंगे।

(3) जहां अभियुक्तों को उप-नियम (1) या उप-नियम (2) के अधीन इस प्रत्यारोपित किया जाता है जहां उनमें से एक या एक से अधिक किसी को ऐसे अन्य अपराध से, जिसके लिए उन्हें नियम 45 के उप-नियम (1) के अधीन आरोपित किया जा सकता है आरोपित और विचारित किए जा सकेंगे।

48. आरोप-पत्र की विविधाता :—कोई आरोप-पत्र केवल इस तथ्य के कारण से जवाहिमास्य नहीं होगा कि इसमें अभियुक्त के नाम या वर्णन का भूल है, और आरोप-पत्र का अर्थ लगाने में उनके बारे में युक्तियुक्त रूप से वह उपचारण की जाएगी कि वे प्रत्येक प्रतिपादना को जो उसमें विविध रूप से सम्मिलित है चाहे अभियुक्त नहीं है, पक्ष समर्थन करते हैं और अपराध का कथन और अपराध की विशिष्टियाँ एक साथ पढ़ी जाएंगी और उनका अर्थ लगाया जाएगा।

49. तट रक्षक व्यायालय द्वारा आरोप का वर्तनीयतमः—

(1) तट रक्षक व्यायालय द्वारा विचारण के दौरान किसी भी समय यदि व्यायालय को यह प्रतीत होता है कि आरोप-पत्र में,

(क) अभियुक्त के नाम या वर्णन को कोई भूल है, या

(ख) ऐसे वर्तनीयतमें जिसकी वर्तनी या लोप के कारण उह माना जा सकता है तो व्यायालय भूल छुड़ाने के लिए आरोपित का संक्षेप कर सकेगा।

(2) यदि विचारण के दौरान किसी समय तट रक्षक व्यायालय को अपने विज्ञानों पर विरोध बंद करने में पूर्व यह प्रतीत होता है कि व्यायालय के हितों में यह वाच्चाणीय है कि किसी आरोप में कोई परिवर्तन लोप या परिवर्तन किया जाए जो उप-नियम (1) के अधीन नहीं किया जा सकता हो, वह यदि ऐसा परिवर्तन, लोप या परिवर्तन अभियुक्त को किसी व्यक्तियों के विना किया जा सकता है, विधि आकिसर की घटमति आरोप का इस प्रकार संक्षेप कर सकता।

50. संयोजक प्राधिकारी द्वारा आरोप में वर्तनीयतमः—यह कोई तट रक्षक व्यायालय संयोजक प्राधिकारी को नियम 64 के अधीन रिपोर्ट करता है तथा संयोजक प्राधिकारी, उस आरोप में, जिसकी वास्तव व्यायालय ने ऐसे प्राधिकारी को रिपोर्ट की है ऐसा परिवर्तन, लोप या परिवर्तन करके जो उपरोक्त प्राधिकारी की राय में व्यायालय के हितों में वाच्चाणीय है और जो अभियुक्त को किसी व्यक्तियों के विना किया जा सकता है आरोप का संक्षेप कर सकता।

51. तट रक्षक व्यायालयों का संयोजन

कोई तट रक्षक व्यायालय में संयोजित करने के लिए आवेदन भागत होने पर संयोजक प्राधिकारी द्वारा कारबाही— संयोजक प्राधिकारी, किसी तट रक्षक व्यायालय के वर्तनीयतमः के लिए वावेदन भागत करने पर व्यायालय भी आरोप और अभियुक्त के विचार साक्ष भी, जहां आवेदन हो, यूक्त विधि आकिसर या किसी विधि आकिसर के परामर्श है, तंत्रिका करेगा, और

(i) जहां अभियुक्त के विचार पर्याप्त साक्ष नहीं है और अतिरिक्त साक्ष उपलब्ध होने की संभावना नहीं है दहां कानून आकिसर को आरोप आरिज करने का निवेदन देगा और यदि विचारण में अध्यर छोना अनुपयुक्त समझा जाए तो उसे ऐसा करने का निवेदन दे सकेगा, या

(ii) यदि ऐसा समझा जाए कि मामले में पर्याप्त कारबाही की जा सकती है तो मामला संक्षिप्त कार्यवाही करने के लिए कानून आकिसर को वापस कर सकेगा, या

(iii) यदि ऐसा समझा जाए कि पहले अभियुक्त किया जावाल अवधिपत्र है और, अतिरिक्त साक्ष उपलब्ध हो सकेगा तो मामलों को अतिरिक्त साक्ष अभियुक्त करने के लिए वापस कर सकेगा।

52. तट रक्षक व्यायालय में सेवा करने के लिए, आकिसरों की निरहृति:—किसी आकिसर को तट रक्षक व्यायालय में सेवा करने की निरहृति कर दिया जाएगा, यदि वह,—

(क) ऐसा आकिसर है जिसने तट रक्षक व्यायालय संयोजित किया था, या

(ख) अभियोजन या अभियोजन के लिए साक्षी है, या

(ग) मामले के अन्वेषण में भाग ले चुका है जिसमें ताक्षणी के किसी भाग या मामले के तथ्यों पर उसके द्वारा विचार करता था— या

(घ) अभियुक्त का कानून आकिसर है, या

(ङ) मामले में अभियुक्त हित रखता है।

53. तट रक्षक व्यायालय की संचरता—(1) कोई अभियोजन उह अधिकत के जिसका वह अभियोजन करता है, विचारण के लिए तट रक्षक व्यायालय में आहीन होने के लिए अहित नहीं होता।

(2) तट रक्षक न्यायालय का आदेश करने वाला आफिसर, उम्मीदाकारी सहायता द्वारा जो उस प्रौद्योगिक कामाल आफिसर था जिसका कि अधिकारित अपराध करने के समय अधियक्ष एक अंग था और अपराध की जांच पर्ने वाला आफिसर, ऐसे अधियुक्त के विचारण के लिए तट रक्षक न्यायालय में आसीन होने के लिए अद्वितीय नहीं होगा।

(3) जैसा इन विषयों में अन्यथा उपलब्धित है उम्मीदाकारी के सिवाएं तट रक्षक के आफिसर उस सट रक्षक सेवा की शाखा जो विचार में लाए बिना, जिसके कि वे अंग हैं, तट रक्षक न्यायालय के गवर्नर्स के रूप में आसीन होने के पात्र नहीं।

परन्तु यह कि --

(क) तट रक्षक न्यायालय के सदस्यों की अनुसंधान विषयों के लिए आफिसर भी है, तट रक्षक सेवा की साधारण इयूटी शाखा के आफिसरों की होगी, और

(ख) धारा 27, 28, 29, 30 और 31 के विशेष अपराधों के लिए विचारणों में, तट रक्षक की साधारण इयूटी शाखा में आफिसरों में विशेष आफिसर, आसीन होने के पाव नहीं होंगे।

(4) किसी तट रक्षक न्यायालय का पीठासीन आफिसर, उसका आदेश करने वाले प्राधिकारी या उस आफिसर द्वारा, जिसे ऐसे प्राधिकारी द्वारा पीठासीन आफिसर को नामित करने के लिए सशक्त किया गया है द्वारा सामित मत किया जाएगा।

(5) किसी उप-महानिरीक्षक के विचारण के लिए कोई तट रक्षक न्यायालय तब तक सम्यक् रूप से गठित नहीं होगा जब तक कि पीठासीन आफिसर उप-महानिरीक्षक या किसी उच्चतर रैक का नहीं है और न्यायालय में समाविष्ट होने वाले अन्य आफिसर कमांडेंट या उच्चतर रैक (रैकों) के आफिसर नहीं हैं।

(6) किसी कमांडेंट के विचारण के लिए कोई तट रक्षक न्यायालय तब तक सम्यक् रूप से गठित नहीं होगा जब तक कि पीठासीन आफिसर कोई कमांडेंट या उच्चतर रैक का नहीं है और दो अन्य सदस्य कमांडेंट या उच्चतर रैक (रैकों) के आफिसर नहीं हैं।

(7) कमांडेंट के रैक के नीचे के किसी व्यक्ति के विचारण के लिए कोई तट रक्षक न्यायालय तब तक सम्यक् रूप से गठित नहीं होगा जब तक कि पीठासीन आफिसर कमांडेंट या उच्चतर रैक का नहीं है और दो अन्य सदस्य कमांडेंट या उच्चतर रैक (रैकों) के आफिसर नहीं हैं।

(8) जब उच्चतर रैक के चार ऐसे आफिसर जो पीठासीन आफिसर से कनिष्ठ हैं उस स्थान पर, जहाँ तट रक्षक न्यायालय विधिविष्ट होता है, समेत हो सकते हैं, वहाँ किसी कमांडेंट या उप कमांडेंट या सहायक कमांडेंट से, तट रक्षक न्यायालय के सदस्य के रूप में आसीन होने की अपेक्षा नहीं की जाएगी, किन्तु किसी तट रक्षक न्यायालय की नियमितता और विधिमान्यता पर या उसकी कार्यवाहियों पर, किन्तु परिस्थितियों में, किसी कमांडेंट, उप कमांडेंट या सहायक कमांडेंट के उसमें आसीन होने की अपेक्षा से या आसीन होने से प्रभाव नहीं पड़ेगा और जब कोई कमांडेंट उप कमांडेंट या सहायक कमांडेंट किसी तट रक्षक न्यायालय में आसीन होगा है तब उसके सम्मय पांच में कम नहीं होंगे।

(9) कोई तट रक्षक न्यायालय तब तक गठित हुआ नहीं माना जाएगा जब तक कि उसमें, मुख्य विशेष आफिसर द्वारा उस प्रयोजन के लिए पदाधिकारी विधि आफिसर उपस्थित नहीं होता है।

54. संयोजक आफिसर के कर्तव्य, जब वह तट रक्षक न्यायालय के संयोजन करता है, वह कोई आफिसर किसी तट रक्षक न्यायालय का संयोजन करता है, तब वह—

(क) विधिविष्ट में उपर्युक्त प्रस्तुति में, एक संयोजन आदेश जारी करेगा;

(द) यह निदेश देगा कि किन आरोपों के लिए अधियुक्त का विचारण किया जाएगा और यह सुनिश्चित करेगा कि अधियुक्त का इन आरोपों की लिए किसी तट रक्षक न्यायालय द्वारा विचारण के लिए उसके कमान आफिसर द्वारा रिमांड कर दिया गया है;

(ग) यदि उसकी यह राय है कि आरोप एक अलग-अलग आरोप-पत्रों में होने से वह ऐसा निर्देश देगा जो वह भी निरेश देगा कि किस कम में उनका विचारण किया जाएगा;

(घ) यदि एक से अधिक अधियुक्त हैं तो यह निदेश देगा कि अधियुक्तों का संयुक्त रूप से या अलग-अलग विचारण किया जाएगा;

(इ) न्यायालय के सदस्यों और किन्हीं प्रतीक्षा सदस्यों की नियुक्ति करेगा;

(ज) किसी आफिसर की जो अधिनियम के अधीन है, या ऐसे किसी आफिसर द्वारा सहायता किए जाने वाले काउंसेल की अधियोजन करने के लिए नियुक्त करेगा या कमान आफिसर को किसी ऐसे आफिसर की जो अधिनियम के अधीन है अधियोजन करने के लिए नियुक्त करने का निर्देश देगा;

परन्तु यदि संयोजक प्राधिकारी ठीक समझता है तो वह अधियोजन करने के लिए एक से अधिक ऐसे आफिसरों की नियुक्त कर सकता।

(क) जहाँ आवश्यक हो, युभाषिये की नियुक्ति करेगा;

(ज) पीठासीन आफिसर को, आरोप-पत्र संयोजन आदेश भेजेगा;

(झ) नियम 118 में वर्णित कर्तव्यों का अनुपालन करने के लिए, और ऐसे कर्तव्यों का जो पीठासीन आफिसर या विधि आफिसर, तट रक्षक न्यायालय के प्रशासनिक कारबाह के सम्यक् संबंधी वहाँ र के अनुपालन के लिए नियुक्ति करे, एक आफिसर नियुक्त करेगा;

(ज) विधि आफिसर, तट रक्षक न्यायालय के प्रत्येक सदस्य और उसके प्रत्येक प्रतीक्षा सदस्य को आरोप-पत्र और संयोजन आदेश की एक प्रति भेजेगा;

(ट) अधियोजक को, आरोप पत्र और संयोजन आदेश की प्रतिपादा और साक्ष्य का मूल अभिलेख या उस का सार और उसकी असशोधित प्रति सन्दित लेखांश (यदि कोई है) विधित करते हुए, भेजेगा;

(झ) यह सुनिश्चित करेगा कि कमान आफिसर ने उन सभी अधियोजन साक्षियों और प्रतिरक्षा साक्षियों को, समन कर दिया है, जिनके नियम 56 के अधीन समन किए जाने के लिए अधियुक्त ने अनुरोध किया है।

55. अधियुक्त द्वारा प्रतिरक्षा तैयार करना—विचारण के लिए रिमांड किए गए किसी अधियुक्त को अपनी प्रतिरक्षा तैयार करने के लिए उपयुक्त अवसर प्रदान किया जाएगा और उसके प्रतिरक्षा आफिसर या काउंसेल के माध्य और उसके साक्षियों से संपर्क के लिए उपयुक्त सुविधा अनुग्रह की जाएगी।

(2) जब तक कि अधियुक्त लिखित रूप में यह कथन नहीं करता है कि वह कोई नियुक्ति नहीं कराना चाहता है विचारण के लिए रिमांड किए गए किसी अधियुक्त की प्रतिरक्षा करने के लिए एक प्रतिरक्षा आफिसर नियुक्त किया जाएगा।

(3) यदि अधियोजन विधिक रूप से अद्वितीय किसी अधिकारी या किसी काउंसेल द्वारा किया जाना है तो अधियुक्त को पर्याप्त समय में वह तथा अधिसूचित किया जाएगा, जिसमें कि वह, यदि वह ऐसा चाहता है अपनी प्रतिरक्षा के लिए विधिक रूप से अद्वितीय किसी आफिसर या किसी काउंसेल का प्रबंध करने के लिए समर्थ हो जाए।

(4) अभियुक्त का विचारण कराने का विनिष्ठय से लिए जाने के पश्चात् यथासाध्य शीघ्र और किसी भी दशा में, उसके विचारण से कम से कम सात बूँदें, उसे,—

(क) आरोप-पत्र की एक प्रति दी जाएगी;

(ख) साक्ष के अधिकारी या सार की एक असशोधित प्रति, वे नेतृत्व दर्शाते हुए (यदि कोई है) जिसका मंशोधन किया गया है, दी जाएगी;

(ग) किसी अतिरिक्त साक्ष की सूचना, जो अभियोजन पेश करना चाहता है दी जाएगी; और

(घ) यदि अभियुक्त ऐसी अपेक्षा करता है तो उन सदस्यों के, जिनसे तट रक्षक न्यायालय गठित होगा और किसी प्रतिरक्षा आफिसर के लिए, नामों और पोर्टों की सूची दी जाएगी।

(5) जब किसी अभियुक्त को आरोप-पत्र और इस नियम के अनुसार साक्ष के अधिकारी या सार की प्रति दी जाती है तब उसे :

(क) आरोप स्पष्ट किया जाएगा, और

(ख) सूचना दी जाएगी कि उसके विचारण से कम से कम छोड़ी घटे पूर्व उसके द्वारा कमान आफिसर को, उस साक्षी की उपस्थिति का अपेक्षा करते हुए (अभियोजन साक्षी से भिन्न) जिसे वह अपनी प्रतिरक्षा में दुप्राप्त चाहता है (ऐसे साक्षी का नाम उसके द्वारा किया जाएगा) लिखित अनुरोध करने पर उसके विचारण में किसी ऐसे साक्षी की उपस्थिति उपापत करने के लिए इन नियमों के अनुसार युक्तियुक्त करव उठाए जाएंगे।

56. प्रतिरक्षा मालियों को समन करना—(1) उप-नियम (2) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, कमान आफिसर, अभियुक्त द्वारा इस नियम अनुरोध करने पर, ऐसे मालियों को, जो अभियुक्त विनिर्दिष्ट करे समन करेगा।

(2) जहाँ कमान आफिसर का यह समाधान ही जाता है कि विचारण में किसी साक्षी द्वारा किया जाने वाले साक्ष के विनियम साक्षिक महायता की संभावना नहीं है वह ऐसे साक्षी को समन करने से इकार कर सकेगा।

(3) जहाँ कमान आफिसर ने उप-नियम (2) के अधीन साक्षियों को समन करने से इकार कर किया है वहाँ अभियुक्त तट रक्षक न्यायालय को, ऐसे साक्षी को समन करने के लिए, आवेदन कर सकेगा और तट रक्षक न्यायालय यदि न्याय के हित में समीचीन समझाता है तो ऐसे साक्षी को समन करने के आदेश दे सकेगा और यदि आवश्यक हो सो, ऐसे साक्षी की शाजियों के लिए कार्यवाहियों को स्थगित कर सकेगा।

टट रक्षक न्यायालयों की प्रक्रिया

57. टट रक्षक न्यायालयों का समवेत होना। और शपथ लेना—समवेत होने पर, टट रक्षक न्यायालय, विचारण आरंभ करने से पूर्व, बंद न्यायालय में यह समाधान करेगा कि :

(क) न्यायालय का संयोजन अधिनियम और इन नियमों के अनुसार किया गया है;

(ख) न्यायालय में अधिनियम में विनिर्दिष्ट आफिसरों की नूसतम संख्या से कम आफिसर नहीं है;

(ग) सदस्य अपेक्षित रैंक के हैं;

(घ) सदस्यों की नियुक्त गम्भीरता से की गई है, और अधिनियम के अधीन निर्णीत नहीं है;

(इ) विधि आफिसर, गम्भीर रूप से नियुक्त किया गया है;

(ख) आरोप-पत्र से प्रतीत होता है कि अभियुक्त इस अधिनियम के अधीन और न्यायालय की प्रशिकारिता के अधीन है; और

(छ) ऐसा आरोप विधि की दृष्टि से शुद्ध है और इन नियमों के अनुसार विचारित किया गया है।

(2) (क) जहाँ, अधिनियम के अधीन, न्यायालय के किसी सदस्य की निरहता के कारण रिक्त या उस समय अनुपस्थित होने पर जब न्यायालय ममवेत होता है कोई नियन्त्रित होती है वहाँ पीठासीन आफिसर उस रिक्तिको भरने के लिए किसी सम्पर्क रूप से अहिल प्रतीक्षा सदस्य के नियुक्त कर सकेगा।

(ख) पीठासीन आफिसर, यदि न्याय के हितों में ऐसा अपेक्षित होता है तो, संयोजक प्राधिकारी द्वारा नियुक्त किसी सदस्य के स्थान पर सम्पर्क रूप से अहिल किसी प्रतीक्षा सदस्य को प्रस्तापित कर सकेगा।

(3) यदि न्यायालय का उप-नियम (1) में वर्णित किसी विषय की बाबत समाधान नहीं होता है और अधिनियम या इन नियमों के अधीन ऐसे समाने की स्वयं परिणामित करने में सक्षम नहीं हैं तो न्यायालय विचारण प्रारंभ करने से पूर्व, संयोजक प्राधिकारी को इसकी नियोंट करेगा।

(4) जब, न्यायालय ने इन नियमों का अनुपालन कर दिया है और विचारण में अग्रमर होने के लिए तैयार है तो पीठासीन आफिसर, न्यायालय घोलेगा और विचारण प्रारंभ हो जाएगा।

58. विचारण का प्रारंभ—(1) ऐसे ही न्यायालय खोला जाएगा वैसे ही अभियुक्त को इसके समक्ष नाया जाएगा और अभियोजन, अभियुक्त की प्रतिरक्षा करने वाला/वाले व्यक्तियों, श्रोताओं को प्रवेश करने दिया जाएगा।

(2) न्यायालय का संयोजन करने वाला आदेश, और अभियुक्त का विचारण करने के लिए नियुक्त आफिसरों के नाम, विधि आफिसर द्वारा अभियुक्त को पढ़कर सुनाए जाएंगे और अभियुक्त को धारा 74 के अनुसार किसी आफिसर पर आक्षेप करने का अवसर दिया जाएगा।

(3) जब किसी न्यायालय को, एक से अधिक अभियुक्तों का अलग-अलग या संयुक्त रूप से विचारण करना है तब प्रत्येक अभियुक्त को, पूर्वानी उप-नियम के अनुसार न्यायालय के किसी आफिसर पर आक्षेप करने का अवसर दिया जाएगा और अलग से यह पृष्ठा जाएगा कि क्या उसका ऐसा कोई आक्षेप है।

(4) अभियुक्त, ऐसे पूर्व कि किसी आक्षेप का निपटारा किया जाए, उन गभीर आफिसरों के नाम छपित करेगा जिनपर वह आक्षेप करता है।

(5) यदि एक से अधिक आफिसर पर आक्षेप किया जाता है तो प्रत्येक आफिसर पर आक्षेप का अलग-अलग निपटारा किया जाएगा और निम्नलिखित के अफिसर पर आक्षेप को पढ़ने निपटाया जाएगा।

(6) कोई अभियुक्त कोई कथन कर सकता है और वह आक्षेप के समर्थन में कथन करने के लिए विद्युत अधिनियम को बुलवा सकेगा।

(7) ऐसा अधिकारी, जिस पर अभियुक्त ने आक्षेप किया है अभियुक्त को आक्षेप से सुनाया किसी बात का खुले न्यायालय ने, उसके समर्थन में या उसका व्यञ्जन करने में, कथन कर सकेगा।

(8) किसी आफिसर पर किए गए किसी आक्षेप पर बंद न्यायालय में, न्यायालय के सभी अध्य सवर्गों द्वारा विचार किया जाएगा और वह अधिकारी जिस पर आक्षेप किया गया है उस समय उपस्थित नहीं होगा।

(9) जब कोई आफिसर जिस पर आकेप किया गया है निवृत्ति शो जाना है और सम्बन्धित रूप से अहित एक प्रतीक्षा मददस्य हाजिर है तब पीठासीन आफिसर उसको, उस आफिसर का स्थान ग्रहण करने के लिए जो निवृत्ति हो गया है, सुरंग नियुक्त करेगा।

(10) न्यायालय आमा यह समाधान करेगा कि ऐसा प्रतीक्षा सदस्य जो न्यायालय में किसी मदद्य का स्थान ग्रहण करता है, अपेक्षित ऐक का है और अधिनियम के अधीन निर्गत नहीं है और अभियुक्त को उस पर आकेप उसने का अवसर देगा और किसी ऐसे आशेष का अधिनियम और इन नियमों के अनुसार निपटारा करेगा।

(11) किसी मदद्य के किसी आकेप के अनुकूलत किए जाने के परिणामस्वरूप यदि अधिनियम के अनुसासन में किसी न्यायालय का गठन करने के लिए उपलब्ध आफिसर पर्याप्त नहीं है तो न्यायालय विचारण में अग्रमर हुए बिना संयोजन प्राधिकारी को रिपोर्ट देगा और संयोजक प्राधिकारी रिक्स को भरने के लिए या तो किसी अन्य सदस्य को नियुक्त करेगा या अभियुक्त का विचारण करने के लिए नाना न्यायालय का संयोजन करेगा।

55. सदस्यों को शपथ विलापन और प्रतिज्ञान कराना:—जैसे ही न्यायालय का गठन सम्भव में ऐसे अधिकारियों से, जिन पर आकेप नहीं है किया गया है या जिनके बारे में आकेप नामजूर कर दिए गए हैं हो जाना है पीठासीन आफिसर और प्रयोग सदस्य को उसी की ज्येष्ठता के अनुसार उसमें प्रस्तुत व्यक्तियों में से किसी एक में या समान आशय के ऐसे अन्य प्रकृष्ट में जैसा न्यायालय संबंधित आफिसर के घर्म के अनुसार या अन्यथा उसके अंत करण पर आवश्यक सुनिश्चित करता है, विधि आफिसर द्वारा अभियुक्त को उपस्थिति में शपथ विलापी जाएगी या प्रतिज्ञान कराया जाएगा।

शपथ का प्रारूप

“मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर की शपथ लेता हूँ कि मैं न्यायालय के समक्ष साध्य के अनुसार अभियुक्त (अभियुक्त व्यक्तियों) का भर्ती भार्ति और सच्चाई से विचारण करूँगा तथा मैं बिना पक्षपात, अनुग्रह या स्नेह के, तट रक्षक अधिनियम, 1978 के अनुसार सम्बन्धित रूप से न्याय करूँगा, और मैं सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और सच्चाई से विचारण करूँगा तथा मैं बिना पक्षपात, अनुग्रह या स्नेह के, तट रक्षक अधिनियम, 1978 के अनुसार सम्बन्धित रूप से न्याय करूँगा, और मैं अगे सत्यनिष्ठा ईमानदारी और सच्चाई से विचारण करूँगा हूँ और प्रतिज्ञान करता हूँ कि जब तक कि किसी विधि न्यायालय द्वारा ऐसा साक्ष्य देने की अपेक्षा न की जाए तब तक मैं किसी भी कारण से किसी भी समय चाहे जो भी हो, न्यायालय के किसी विशिष्ट सदस्य का मत या उसकी राय प्रकट नहीं करूँगा।”

प्रतिज्ञान का प्रारूप

“मैं सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और सच्चाई से विचारण करता हूँ कि और प्रतिज्ञान करता हूँ कि मैं न्यायालय के रामकृष्ण माध्य के अनुसार अभियुक्त (या अभियुक्त व्यक्तियों) का भर्ती भार्ति और सच्चाई से विचारण करूँगा तथा मैं बिना पक्षपात, अनुग्रह या स्नेह के, तट रक्षक अधिनियम, 1978 के अनुसार सम्बन्धित रूप से न्याय करूँगा, और मैं अगे सत्यनिष्ठा ईमानदारी और सच्चाई से विचारण करता हूँ और प्रतिज्ञान करता हूँ कि जब तक कि किसी विधि न्यायालय द्वारा ऐसा साक्ष्य देने की अपेक्षा न की जाए तब तक मैं किसी भी कारण से किसी भी समय चाहे जो भी हो, न्यायालय के किसी विशिष्ट सदस्य का मत या उसकी राय प्रकट नहीं करूँगा।”

60. विधि आफिसर और अन्य आफिसरों द्वारा शपथ लेना और प्रतिज्ञान करना।

न्यायालय के भर्ती सदस्यों द्वारा शपथ लेने या प्रतिज्ञान करने के प्रचलान निम्नलिखित व्यक्तियों को या उनकों जो न्यायालय में उपस्थित हों निम्नलिखित प्रारूप में जो समुचित हैं निम्नलिखित प्रस्तुतों में से ऐसे प्रारूप में, जैसा उचित हो, या समान आशय के ऐसे अन्य प्रारूप में जैसा न्यायालय शपथ लेने या प्रतिज्ञान करने वाले व्यक्तियों के घर्म के अनुसार या अन्यथा उसके अंत करण पर, आवश्यक अभिनियम के, शपथ विलापी जाएगी या प्रतिज्ञान कराया जाएगा।

विधि आफिसर शपथ का प्रारूप

“मैं _____; सर्वशक्तिमान ईश्वर की शपथ लेता हूँ कि मैं, अपनी सर्वोत्तम योग्यता के अनुसार तट रक्षक अधिनियम, 1978 और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अनुसार त्रैर विधि पक्षपात, अनुग्रह या स्नेह के विधि आफिसर के कर्तव्य वा पालन करूँगा और मैं शपथ लेता हूँ कि मैं प्रतिज्ञान करता हूँ कि जब तक कि किसी विधि न्यायालय द्वारा ऐसा साक्ष्य देने की अपेक्षा न की जाए तब तक मैं किसी भी कारण से किसी भी समय चाहे जो भी हो, न्यायालय के किसी विशिष्ट सदस्य का मत या उसकी राय प्रकट नहीं करूँगा।”

प्रतिज्ञान का प्रारूप

“मैं _____; सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और सच्चाई से विचारण करता हूँ और प्रतिज्ञान करता हूँ कि मैं, अपनी गर्वोत्तम योग्यता के अनुसार बिना पक्षपात अधिनियम, 1978 या उसके अधीन बनाए गए नियमों के अनुसार बिना पक्षपात अनुग्रह या स्नेह के विधि आफिसर के कर्तव्यों का पालन करूँगा और सच्चाई से विचारण करता हूँ और प्रतिज्ञान करता हूँ कि मैं जब तक कि किसी विधि न्यायालय द्वारा ऐसा साक्ष्य देने की अपेक्षा न की जाए तब तक मैं किसी भी कारण से, किसी भी समय चाहे जो भी हो, न्यायालय के किसी विशिष्ट सदस्य का मत या उसकी राय प्रकट नहीं करूँगा।”

(अ) अमृदेश के प्रयोजनों के लिए हाजिर रहने वाला आफिसर

शपथ का प्रारूप

“मैं _____; सर्वशक्तिमान ईश्वर की शपथ लेता हूँ कि मैं जब तक कि किसी विधि न्यायालय द्वारा ऐसा साक्ष्य देने की अपेक्षा न की जाए तब तक मैं किसी भी कारण से किसी भी समय चाहे जो भी हो, न्यायालय के किसी विशिष्ट सदस्य का मत या उसकी राय प्रकट नहीं करूँगा।”

प्रतिज्ञान का प्रारूप

“मैं _____; सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और सच्चाई से विचारण करता हूँ और प्रतिज्ञान करता हूँ कि मैं जब तक कि किसी विधि न्यायालय द्वारा ऐसा साक्ष्य देने की अपेक्षा न की जाए तब तक मैं किसी भी कारण से, किसी भी समय चाहे जो भी हो, न्यायालय के किसी विशिष्ट सदस्य का मत या उसकी राय प्रकट नहीं करूँगा।”

(ग) आणुलिपि लेखक

शपथ का प्रारूप

“मैं _____; सर्वशक्तिमान ईश्वर की शपथ लेता हूँ कि मैं अपनी सर्वोत्तम शक्ति के अनुसार न्यायालय के समक्ष दिए जाने वाले साक्ष्य और ऐसे अन्य विषयों को जिन्हें लिखने के मुख्य संबंधित की जाए तब तक मैं किसी भी विधि न्यायालय को उसकी सही अनुलिपि दूँगा।”

प्रतिज्ञान का प्रारूप

“मैं _____; सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और सच्चाई से विचारण करता हूँ और प्रतिज्ञान करता हूँ कि मैं जब तक कि किसी विधि न्यायालय द्वारा ऐसा साक्ष्य देने की अपेक्षा न की जाए तब तक मैं किसी भी कारण से, किसी भी समय चाहे जो भी हो, न्यायालय के किसी विशिष्ट सदस्य का मत या उसकी राय प्रकट नहीं करूँगा।”

(८) न्यायालयः

शपथ का प्रलूप

मैं, सर्वेशक्तिमान ईश्वर की शपथ लेता हूँ कि मैं इस न्यायालय के समझ रखे गए विषयों का जिसका भाषांतर और अनुवाद करने को मुझसे अपेक्षा की जाएगी, यथार्थ भाषांतर और अनुवाद करूँगा।

प्रतिशान का प्रलूप

मैं, सर्वनिष्ठा ईमानदारी और सच्चाई से घोषणा करता हूँ और प्रतिशान करता हूँ कि मैं इस न्यायालय के समझ रखे गए विषयों का जिसका भाषांतर और अनुवाद करने को मुझसे अपेक्षा की जाएगी, यथार्थ भाषांतर और अनुवाद करूँगा।

६१. दुधारिए या आशुलिपि लेखक पर अपेक्षा

किसी व्यक्तिको यदि अभियुक्त ने उसकी भावत आशेप किया है दुधारिए, या आशुलिपि लेखक के रूप में तब तक शपथ नहीं दिलायी जाएगी या प्रतिशान नहीं कराया जाएगा जब तक कि न्यायालय, अभियुक्त एवं अधियोजक को सुनने के पश्चात् ऐसे आशेप को अपुक्तिपूक्त होने पर नामंजूर नहीं कर देता है।

६२. दोषारोपणः—(१) जब न्यायालय और विधि आफिसर को शपथ दिला दी गई है तब अभियुक्त को आरोप पह़ कर सुनाया जाएगा और यह पूछा जाएगा कि क्या वह आरोप या आरोपों का दोषी होने का अभिवचन करता है।

(२) यदि अभियुक्त के विशद् एक से अधिक आरोप हैं तो उससे, हर आरोप पर पृथक रूप से अभियोधन करने की अपेक्षा की जाएगी।

(३) यदि, न्यायालय के समझ अभियुक्त पर एक से अधिक आरोप हैं तो न्यायालय ऐसे आरोप पत्रों के पहले आरोप पर कार्यवाही करेगा और उस पर अपने निष्कर्ष की घोषणा करेगा और यदि अभियुक्त ने दोषी होने का अभिवचन किया है तो किसी पश्चात्वर्ती आरोप-पत्र में आरोपों के लिए उसे दोषारोपित करने के पूर्व नियम ४९ का अनुपालन करेगा।

६३. अधिकारिता के बारे में अभिवाहः—(१) अभियुक्त आरोप पर अभिवचन करने से पूर्व, न्यायालय की अधिकारिता के बारे में अभिवचन कर सकेगा, और ऐसी दशा में,

(क) अभियुक्त, अभिवचन के समर्थन में साक्ष्य पेश कर सकेगा और अधियोजक उसके उत्तर में साक्ष्य पेश कर सकेगा; और

(ख) अधियोजक अभिवचन के उत्तर में न्यायालय को संबोधित कर सकेगा और अभियुक्त अधियोजक के संबोधन का उत्तर दें सकेगा।

(२) यदि न्यायालय अभिवचन को मंजूर करता है तो वह स्थगित हो जाएगा और संयोजक प्राधिकारी की रिपोर्ट करेगा।

(३) जब न्यायालय संयोजक प्राधिकारी को इस नियम के अधीन रिपोर्ट करता है तो संयोजक प्राधिकारी, न्यायालय का विषट्टन कर देगा।

६४. आरोप के बारे में आशेपः—(१) किसी आरोप के बारे में अभिवचन करने के पूर्व कोई अभियुक्त इस आधार पर आशेप कर सकेगा कि वह विधि के अनुसार सही नहीं है या वह इन नियमों के अनुसार विरचित नहीं किया गया है, और यदि वह ऐसा करता है तो अधियोजक, आशेप के उत्तर में न्यायालय को संबोधित कर सकेगा और अभियुक्त अधियोजक के संबोधन का उत्तर दे सकेगा।

(२) यदि न्यायालय आशेप को मान्य ठहराता है तो यदि नियम ४९ के अधीन अनुशेष्य है तो वह या तो आरोप को संशोधित करेगा या स्थगित हो जाएगा और संयोजक प्राधिकारी को रिपोर्ट करेगा;

परन्तु यदि न्यायालय के समझ कोई अन्य आरोप पत्र है, तो न्यायालय इस नियम के अधीन स्थगित होने के पूर्व ऐसे अन्य आरोप या अन्य आरोप पत्र के विचारण की कार्यवाही कर सकेगा।

(३) जब न्यायालय संयोजक प्राधिकारी को इस नियम के अधीन रिपोर्ट करता है तो संयोजक प्राधिकारी, यदि वह, आशेप को अनुशासन करने के न्यायालय के विनियम द्वारा अनुमोदित करता है;

(i) न्यायालय का विषट्टन करेगा; या

(ii) जहाँ न्यायालय के समझ अन्य आरोप या अन्य आरोप-पत्र हैं जिससे अधिक अपेक्षा संबोधित नहीं है, और जिस का न्यायालय ने विचारण नहीं किया है, न्यायालय को, केवल ऐसे अन्य आरोप या आरोप पत्र का विचारण करने की कार्यवाही करने का निवेश करेगा; या

(iii) यदि नियम ५० के अधीन अनुशेष्य हो तो उम आरोप में संशोधन करेगा जिससे आधिक संबोधित है, और न्यायालय को इस प्रकार संशोधन आधिक पत्र पर विचारण का निदेश देगा।

६५. विचारण के बारें का अभिवचन—(१) कोई अभियुक्त किसी आरोप पर अभिवचन करने से पूर्व यह अभिवचन कर सकेगा कि विचारण घारा ५१ या घारा ६८ के अधीन वर्जित है। यदि वह ऐसा करता है तो—

(क) अभियुक्त, अभिवचन के समर्थन में साक्ष्य पेश कर सकेगा और अधियोजक उसके उत्तर में साक्ष्य पेश कर सकेगा; और

(ख) अधियोजक, अभिवचन के उत्तर न्यायालय को संबोधित कर सकेगा और अभियुक्त, अधियोजक के संबोधन का उत्तर दे सकेगा।

(२) यदि न्यायालय अभिवचन को अनुशासन करता है तो वह स्थगित हो जाएगा और संयोजक प्राधिकारी की रिपोर्ट करेगा:

परन्तु यह कि यदि न्यायालय के समझ अन्य आरोप या अन्य आरोप पत्र हैं तो न्यायालय इस नियम के अधीन स्थगित होने से पूर्व ऐसे अन्य आरोप या आरोप पत्र के विचारण की कार्यवाही कर सकेगा।

(३) जब न्यायालय संयोजक प्राधिकारी को इस नियम के अधीन रिपोर्ट करता है तो, संयोजक प्राधिकारी;

(i) न्यायालय का विषट्टन करेगा; या

(ii) जहाँ न्यायालय के समझ अन्य आरोप या अन्य आरोप पत्र हैं जिससे अभिवचन संबोधित नहीं है और जिसका न्यायालय ने विचारण नहीं किया है वहाँ केवल ऐसे अन्य आरोप या आरोप पत्र का विचारण करने की कार्यवाही करने का निदेश देगा।

६६. पृथक रूप से विचारण के लिए आवेदनः—(१) जहाँ शो या दो से अधिक अभियुक्त संयुक्त रूप से आरोपित किए जाते हैं, वहाँ अभियुक्तों में से कोई एक आरोप का अभिवचन करने से पूर्व, न्यायालय को इस आधार पर कि यदि उस का विचारण पृथक रूप से नहीं किया तो उसकी प्रतिरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा, पृथक रूप से विचारण किए जाने के लिए आवेदन कर सकेगा।

(२) जहाँ अभियुक्त ऐसा आवेदन करता है वहाँ अधियोजक उसके उत्तर में न्यायालय को संबोधित कर सकेगा और अभियुक्त अधियोजक के संबोधन का उत्तर दे सकेगा।

(३) जहाँ न्यायालय की यह राय है कि न्याय के हितों में ऐसा अपेक्षित है वहाँ यह आवेदन को मंजूर करेगा और उस अभियुक्त को जिसने आवेदन किया है, पृथक रूप से विचारण करेगा।

६७. पृथक आरोप पत्र पर विचारण के लिए आवेदनः—(१) जहाँ आरोप पत्र में एक से अधिक आरोप हैं वहाँ अभियुक्त आरोपों का अभिवचन करने से पूर्व, आरोप पत्र में से किसी आरोप के लिए पृथक रूप से विचारण

के लिए न्यायालय को इस आधार पर आवेदन कर सकेगा कि यदि उस आरोप के लिए उसका विचारण पृथक् रूप से नहीं किया गया तो उसकी प्रतिरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

(2) जहाँ अभियुक्त ऐसा आवेदन करता है वहाँ अभियोजक उसके उत्तर में न्यायालय को सबधिन कर सकेगा और अभियुक्त, अभियोजक के संबोधन का उत्तर दे सकेगा।

(3) जहाँ न्यायालय की यह राय है कि न्याय के द्वितीय में ऐसा अपेक्षित है वहाँ वह आवेदन को मंजूर करेगा और अभियुक्त का उस आरोप पर, जिसमें आवेदन सबधिन है इस प्रकार विचारण करेगा मानो वह आरोप किसी पृथक् आरोप पर से अंतः स्थापित किया गया है।

68 आरोप के बारे में अभिवनन (1) नियम 63 और 65 के अधीन किसी अभिवनन के बारे में कार्यवाही करने के पश्चात्, अभियुक्त में, उप नियम (2) के अधीन रहते हुए उस प्रथेक आरोप पर, जिसके लिए उसका दोषारोपण किया गया है दोषी होने का दोषी न होने का अभिवनन करने की अपेक्षा की जाएगी।

(2) जहाँ कोई न्यायालय किसी अभियुक्त को, ऐसी परिस्थितियों में, जिनमें कम कोटि का दंड अंतर्वित है आरोपित अपराध या किए गए अपराध का दोषी होने से भिन्न अपराध का दोषी पाने के लिए धारा 63 द्वारा संस्कृत है, वहाँ या जहाँ साक्ष की सूनवाई के पश्चात् वह नियमों के अनुगार अपवाह या पर्चिवर्तन के अधीन रहते हुए, दोषी पाने का विशेष निष्कर्ष देता है, वहाँ अभियुक्त ऐसे अन्य अपराध का या अपराध की ऐसी परिस्थितियों में किए जाने का अथवा आरोपित अपराध का ऐसे अपवादों या परिवर्तनों के अधीन रहते हुए; दोषी होने का अभिवाक् कर सकेगा।

69. दोषी होने के अभिवाक् की स्वीकृति—(1) जहाँ कोई अभियुक्त नियम 68 के या तो उप नियम (1) या उप नियम (2) के अधीन किसी आरोप का दोषी होने का अभिवाक् को स्वीकार करने का विनियमन करे अभियुक्त को आरोप की प्रकृति को और उसके अभिवाक् का साधारण प्रभाव तथा विशेष रूप से उस प्रक्रिया में अंतर जब अभियुक्त दोषी होने का अभिवाक् करता है और जब अभियुक्त दोषी न होने का अभिवाक् करता है, स्पष्ट करेगा।

(2) न्यायालय नियम 68 के उपनियम (1) या उपनियम (2) के अधीन दोषी होने का कोई अभिवाक् स्वीकार नहीं करेगा, यदि—

(क) न्यायालय का वह समाधान नहीं हो जाता है कि अभियुक्त आरोप की प्रकृति या अपने अभिवाक् का प्रभाव समझता है; या

(ख) पीठासीन आफिसर गर्भी परिस्थितियों का ध्यान में रखते हुए, यह ममक्षना है कि अभियुक्त दोषी न होने का अभिवाक् करेगा, या

(ग) अभियुक्त, यदि मिद्दोप ठहराया जाए तो मृत्युदंड से दण्डनाय है।

(2) (क) नियम 70 के अधीन दोषी होने के किसी अभिवाक् की दण्ड में न्यायालय अभिवाक् को तब तक स्वीकार नहीं करेगा जब तक कि संयोजन प्राधिकारी सहमत नहीं हो जाता है और ऐसी पद्धति की न्याय-संगति के बारे में उसका समाधान हो जाता है;

(ख) संयोजक प्राधिकारी की सहमति, अभियोजक द्वारा संज्ञापित का जा सकेगी।

(4) जब, नियम 68 के उप नियम (1) या उपनियम (2) के अधीन दोषी होने का कोई अभिवाक् स्वीकार कर लिया गया है, तो वह उसके दोषी होने का निष्कर्ष अभिलिखित करेगा।

20. अनुकूली आरोप का अभिवाक्—(1) जब कोई अभियुक्त दो या उससे अधिक अनुकूली आरोपों में से प्रथम के लिए दोषी होने का अभिवाक् करता है तब यदि न्यायालय दोषी होने के अभियुक्त को स्वीकार करता है तो पहले आरोप की बाबत दोषी होने के निष्कर्ष अभिलिखित करेगा और अभियोजक अभियुक्त पर दोषारोपण करने से पृथक् किसी अनुकूली आरोप को बापस ले सकता।

(2) जब कोई अभियुक्त अनुकूलपतः लगाए गए दो दोषों से अधिक आरोपों में से जो एक आरोप का दोषी होने का अभिवाक् करता है तब न्यायालय :

(क) ऐसे अप्रसर होना यानी अभियुक्त ने सभी आरोपों के लिए दोषी न होने का अभिवाक् किया है; या

(ख) (1) संयोजन प्राधिकारी की महमति से (जो अभियोजक द्वारा संशोधित की जा सकती), उस आरोप के लिए जिसके लिए अभियुक्त ने दोषी होने का अभिवाक् किया है, दोषी होने का निष्कर्ष और किसी उस अनुकूली आरोप के लिए जो आरोप पत्र में उसके समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, दोषी न होने का निष्कर्ष अभिलिखित करेगा;

(2) जहाँ न्यायालय ऐसा निष्कर्ष अभिलिखित करता है वहाँ अभियोजक, अभियुक्त पर दोषारोपण करने से पहले, ऐसे आरोप को जो उस आरोप का अनुकूली है जिस पर न्यायालय ने अभियुक्त को दोषी पाया है, और जो आरोप पत्र में उस के पश्चात् रखा गया है, वापस ले लेगा।

71. दोषी होने और दोषी न होने के अभिवाक् के मामले में, विचारण का आवेदन :

(1) दोषी होने का कोई निष्कर्ष अभिलिखित करने के पश्चात् न्यायालय, यदि उसी आरोप पत्र में जिसमें अभियुक्त ने उस आरोप पत्र के किसी आरोप का दोषी न होने का अभिवाक् किया है कोई अन्य आरोप नहीं है तो वह विचारण में इस प्रकार अप्रसर होना जैसा नियम 72 में निर्देशित है।

(2) जहाँ उस आरोप पत्र में कोई अन्य आरोप है जिसके लिए अभियुक्त ने दोषी न होने का अभिवाक् किया है या जहाँ कोई अन्य ऐसा अभियुक्त है जिसने उस आरोप पत्र में किसी आरोप का दोषी न होने का अभिवाक् किया है, वहाँ न्यायालय नियम 70 का तब तक अनुपालन नहीं करेगा जब तक कि उग्रने ऐसे अन्य आरोप के बारे में कार्यवाही न करती ही या ऐसे अन्य अभियुक्त का विचारण न कर लिया हो और उससे संबंधित निष्कर्ष की आवाजा कर सी हो और अभिलिखित कर लिया हो।

72. दोषी होने के अभिवाक् पर प्रक्रिया (1) जहाँ न्यायालय ने किसी ऐसे आरोप की बाबत दोषी होने का निष्कर्ष अभिलिखित किया है जिसके बारे में अभियुक्त ने दोषी होने का अभिवाक् किया है, वहाँ अभियोजक अभिलेख या साक्ष के मार की न्यायालय के ममक्ष पढ़ेगा या उसमें अंतर्विष्ट तथ्यों को उसे देगा।

(2) जहाँ साक्ष का कोई अभिलेख या मार नहीं है वहाँ न्यायालय दण्डादेश अवधारित करने के लिए पर्याप्त साक्ष इन नियमों के अनुसार अभिलिखित करेगा।

(3) उप नियम (1) और (2) के अनुपालन करने के पश्चात् अभियुक्त :

(क) दंड को कम करने की प्रकृति को और उसे कम करने के लिए साक्ष बेगा;

(ख) दण्ड को कम करने के लिए न्यायालय को संबंधित करेगा;

(ग) जब उप नियम (3) का अनुपालन कर लिया जाता है तो, उसके पश्चात् न्यायालय इस प्रकार अप्रसर होगा जैसा नियम 95 में निर्देशित है।

73. अभिवाक् में परिवर्तन (1) ऐसा अभियुक्त, जिसने बोधी न होने का अभिवाक् किया है, इसमें पहले किसी भी समय कि न्यायालय अपने निष्कर्ष पर विचार विमर्श करता बंद कर देता है अपने बोधी न होने के अभिवचन को बापस ने सकेगा और उसके स्थान पर दोषी होने अभिवाक् (जिसमें नियम 70 के अधीन दोषी होने का अभिवाक् भी है) करता है और उसे किसी मामले में न्यायालय, यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि वह अभियुक्त का परिवर्तित अभिवाक् इन नियमों के अधीन स्वीकार कर सकता है, अभियुक्त के परिवर्तित अभिवाक् के अनुसार निष्कर्ष अभिलिखित करेगा और जहाँ तक आवश्यक हो, ऐसे अप्रसर होगा ऐसे जैसे नियम 72 में निर्देशित है।

(2) जहाँ, विचारण के दौरान किसी समय न्यायालय को यह प्रदान होता है कि कोई अभियुक्त जिसने बोधी होने का अभिवाक् किया है, अपने अभिवाक् के प्रभाव या आरोप की प्रकृति को नहीं समझता है यह न्यायालय बोधी न होने का अभिवाक् अभिनिश्चित करेगा और विचारण में तदनुसार अप्रसर होगा।

(3) जब न्यायालय, उप-नियम (2) के अधीन किसी आरोप में संबंधित बोधी न होने के किसी अभिवाक् को अभिनिश्चित करता है तब यदि कोई अनुकल्पी आरोप या जिसे अभियोजक ने नियम 70 के अधीन बापस लिया है, ऐसे अनुकल्पी आरोप को, यथापूर्व करेगा, अभियुक्त पर दोषारोपण करेगा और विचारण में इस प्रकार अप्रसर होगा मानो आरोप बापस नहीं लिया गया था।

74. बोधी न होने के अभिवाक् पर प्रक्रिया:—किसी आरोप पर दोषी न होने का अभिवाक् अभिलिखित किए जाने के पश्चात्:—

(क) न्यायालय अभियुक्त से पूछेगा कि क्या वह इस आधार पर कि विचारण से पूर्व प्रक्रिया से संबंधित इन नियमों में से किसी का अनुपालन नहीं किया गया है और इसका उत्तर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, या इस आधार पर कि उसे अपनी प्रतिरक्षा की तैयारी करने के लिए पर्याप्त अवसर नहीं मिला है, स्थगन के लिए आवेदन करना जाहता है;

(ख) जहाँ अभियुक्त स्थगन के लिए आवेदन करता है, वहाँ

- (1) अभियुक्त अपने आवेदन के पक्ष में, साक्ष्य दे सकेगा और अभियोजक उसके उत्तर में साक्ष्य दे सकेगा, और
- (2) अभियोजक, आवेदन के उत्तर में न्यायालय को संबोधन का उत्तर दे सकेगा;

(ग) न्यायालय, यदि यह समझता है कि न्याय के हितों में ऐसा अपेक्षित है, तो स्थगन मंजूर कर सकेगा।

75. अर्टिफिशियल संबोधन:—(1) अभियोजक यदि वह ऐसा जाहता है और यदि न्यायालय द्वारा ऐसी अपेक्षा की जाए आरोप को और उस साक्ष्य को, जिसे यह देने की प्रस्थापना करता है, प्रकृति और माध्यारण प्रभाव को स्पष्ट करने हुए प्रारंभिक संबोधन करेगा,

(2) अभियोजन पक्ष के मालियों को, तब बूलाया जाएगा और वे अपना साक्ष्य देंगे।

76. अभिरिच्छत साथों:—जहाँ अभियोजक वह साक्ष्य जो वह केवल जाहता है जो किसी अभिलेख या अभियुक्त को दिए गए साक्ष्य के सार में अनिवार्य नहीं है, वहाँ ऐसी आरोप की सूचना साक्ष्य को विशिष्टियों सहित, जब साध्य हो, अभियुक्त को किसी गुणितकृत समय के भीतर साक्ष्य दिए जाने से पहले दी जायगी। यदि ऐसा साक्ष्य, ऐसी सूचना या विशिष्टियों

द्वारा बिना, विद्या जाता है तो स्थायालय, यदि अभियुक्त ऐसी बोला करता है तो साक्ष्य प्राप्त करने के पश्चात् या तो स्थगन अनुमति प्राप्त देगा या उस साक्ष्य से उद्भव, किसी प्रतिपरीक्षा को मूलतये करने की अनुमति दे सकेगा और न्यायालय, अभियुक्त के, ऐसे किसी स्थगन के लिए आवेदन करने के उसके अधिकार की सूचना देगा।

77. साक्षी का स्थगन:—अभियोजक उन भी साक्षियों को अभियुक्त के विशद बुलाने के लिए आवश्यक नहीं हैं जिनका साक्ष्य, साक्ष्य के मारे के अभिलेख में अनिवार्य है, और उन ही उसे किसी साक्षी को बुलाने के लिए आवश्यक है जब उसने अभियुक्त को, यह अधिसूचित किया है कि वह ऐसे साक्षी को नियम 76 के अधीन बुलाना चाहता है, परस्त यदि अभियोजक ऐसे साक्षी को साक्ष्य देने के लिए बुलाना नहीं चाहता है तो वह यह अभियुक्त द्वारा प्रतिपरीक्षा करने के लिए पेश करेगा या अभियुक्त को यह युक्तियुक्त सूचना देगा कि वह साक्षी को बुलाना नहीं चाहता है, और अभियुक्त को, यदि वह ऐसी बोला को और यदि साक्षी उपलब्ध हो, उससे समर्पक करते और उसकी प्रतिरक्षा करने के लिए साक्षी के रूप में बुलाने के लिए अनुमति किया जाएगा।

78. साक्षी का हट जाना:—किसी विचारण के दौरान अभियोजक या अभियुक्त से मिल्ने कोई सार्थक जब वह प्रतिकूली साक्षी हो जाता है, न्यायालय की दृग्भाव के बिना, न्यायालय में नहीं होगा और जब उसकी परीक्षा हो रही है तब यह जर्चरी होता है कि उसके साक्ष्य की बाबत कोई प्रस्त अनुकासन किया जाए या नहीं, तो न्यायालय, ऐसे जर्चरी के दौरान साक्षी को वहाँ से हट जाने का निर्देश दे सकेगा।

79. साक्षियों की परीक्षा:—(1) किसी साक्षी को उसको बुलाने वाले व्यक्ति द्वारा परीक्षा की जा सकेगी और कर्यवाही में दूसरे पक्षकार द्वारा उसकी प्रतिपरीक्षा की जा सकेगी। और किसी ऐसी प्रतिपरीक्षा की समाप्ति पर प्रतिपरीक्षा से उद्भव होने वाले बातों पर उसको पुनः परीक्षा उम अधिक द्वारा को जा सकती जिसने उसको बुलाया था।

(2) (क) किसी साक्षी की परीक्षा कारने वाला अधिक्षित, साक्षी में मौखिक प्रस्त पूछेगा और जब तक सार्थक, न्यायालय, यिथि अफिसर, अभियोजक या अभियुक्त द्वारा उम पर आक्षेप नहीं किया जाता है, साक्षी उसका उत्तर देगा।

(ख) जहाँ ऐसा कोई आक्षेप किया जाता है वहाँ साक्षी तब तक उत्तर नहीं देगा जब तक कि आक्षेप का निपटान नहीं कर दिया जाता है।

(3) न्यायालय किसी साक्षी की प्रति परीक्षा या पुनः परीक्षा को मूलतये करता अनुशासन कर सकेगा।

(4) किसी साक्षी की परीक्षा से पूर्व, उसे निम्ननिश्चित प्रस्ता में या समान आवश्यकता के ऐसे अन्य प्रस्ता में जो न्यायालय के उमके घर्म अनुशासन या अन्यथा उसके अंतर्गत पर आवश्यक रूप में अभिनिश्चित करता है या प्रतिक्रिया दिलाई जाएगी या प्रतिक्रिया करायी जाएगी।

सापथ का पर्णप

मैं, _____ सर्वशक्तिमान हैश्वर की शपथ लेता हूं कि मैं जो कुछ भी कहूंगा वह सत्य, पूर्ण सत्य होगा और गल्व के सिवाय कुछ नहीं होगा।

प्रतिक्रिया का पर्णप

मैं, _____ सर्वशक्तिमान हैश्वर में और ईमानदारी से घोषणा करता हूं वौर प्रतिक्रिया करता हूं कि मैं जो भी कहूंगा सत्य होगा, पूर्ण सत्य होगा और सत्य के गिराव कुछ नहीं होगा।

30. न्यायालय द्वारा प्रश्न करना '(1) फीडासीन आफिसर, विधि अधियोजक और न्यायालय का कोई अन्य गदम्य किसी साक्षी ने प्रश्न कर सकता।

(2) किसी ऐसे प्रश्न का उल्लंघन दिए जाने समय अधियोजक और अधियुक्त मालियों से ऐसे प्रश्न जो न्यायालय उचित समझ कर सकेगा ना उसके उस उल्लंघन से उद्भूत होने हैं, जो उसने दिया है।

31. साक्ष्य को पढ़ कर सुनाना (1) (क) वह अधिसेक्षण जो किसी साक्षी द्वारा दिए गए साक्ष्य से तैयार किया गया है, इससे पहले कि वह न्यायालय से जाए उसको पढ़कर सुनाया जाएगा और जब ऐसा किया जाता है तब वह अधिसेक्षण को शुद्ध करने के लिए, या उसके द्वारा दिए गए नाम्बर को स्पष्ट करने के लिए कह सकता।

(ख) जहाँ कोई ऐसी शुद्धि को जाती है, या स्पष्टीकरण दिया जाता है वहाँ, अधियोजक और अधियुक्त मालियों से शुद्धि या स्पष्टीकरण की जावन ऐसे प्रश्न कर सकेगा जो न्यायालय को उचित प्रतीत हो।

(2) जब किसी आपूर्णिपक्ष को नियंत्रित किया जाता है तब उप नियम (1) का अनुपालन करना आवश्यक नहीं होगा यदि, न्यायालय और विधि आफिसर की राय में ऐसा करना आवश्यक है,

परन्तु, यह कि यदि कोई साक्षी ऐसी मांग करता है तो उप नियम (1) का अनुपालन किया जाएगा।

32. न्यायालय द्वारा साक्षी को बुलाया जाना या पुनः बुलाया जाना (1) (क) न्यायालय किसी समय अपने निष्कर्ष पर चर्चा बंद करने से पहले या उससे पहले की विधि आफिसर उपसंहार करना प्रारम्भ करे साक्षी को बुलाएगा या पुनः बुलाएगा यदि न्यायालय की राय में ऐसा करना आवश्यक है।

(ख) जहाँ न्यायालय किसी साक्षी को इस नियम के अधीन बुलाता है या पुनः बुलाता है तो अधियोजक और अधियुक्त साक्षी से ऐसे प्रश्न कर सकेगा जो न्यायालय उचित समझे।

(2) अधियोजक और अधियुक्त उसमें पूर्व किसी भी समय जब न्यायालय अपने निष्कर्ष चर्चा करना बंद कर या इसमें पूर्व कि विधि आफिसर उपसंहार करना प्रारम्भ करे किसी साक्षी को न्यायालय की इजाजत से पुनः बुला सकेगा अधियोजक और अधियुक्त साक्षी से ऐसे प्रश्न कर सकेगा जो न्यायालय उचित समझे।

33. उल्लंघन के लिए कोई मामला न बनाने का विवेदन और मामलों का समाप्त किया जाना -- (1) (क) अधियोजन की ओर से मामले की नियमित पर, अधियुक्त न्यायालय का यह निवेदन कर सकेगा कि किसी आरोप की बाबत अधियोजन की ओर से प्रथम दृष्ट्या कोई मामला स्थापित नहीं हुआ है और उस आरोप की बाबत अपनी प्रतिशक्ति करने के लिए नहीं कहा जाना चाहिए।

(ख) जहाँ अधियुक्त ऐसा निवेदन करता है वहाँ अधियोजक उसका उल्लंघन में न्यायालय को संबोधित कर गवेगा और अधियुक्त, अधियोजन के संबोधन का उल्लंघन दे सकेगा।

(ग) न्यायालय, निवेदन की तब तक अनका नहीं देखा जाना तक कि उसका यह मामाधान नहीं हो जाना है कि,

(क) अधियोजन में लागू गए आरोप पर कोई प्रथम दृष्ट्या मामला सिद्ध नहीं किया है, और

(ख) वह साक्ष्य पर या तो भारा 83 या घारा 83 के उपनियम

(3) के अधीन विशेष निष्कर्ष नहीं दे सकता।

(3) (क) जहाँ न्यायालय, आवेदन करने की अनुमति देना वहाँ वहाँ अधियुक्त जो उस आरोप का नियमे के बंधन से बोधित है दोषी न होने का निष्कर्ष देगा और निष्कर्ष, छुले न्यायालय में धोखित किया जाएगा।

(4) न्यायालय, अधियोजन के मामले की सुनवाई गंद करने के पश्चात् और अधियोजक की सुनवाई के पश्चात् स्वप्रणाली से अधियुक्त का आरोप का दोषी भट्टोने का निष्कर्ष दे सकेगा और निष्कर्ष व्यापे न्यायालय में तुरंत घोषित किया जाएगा।

35. यौ परिवहन संबंधी विवरों पर साक्ष्य यौपरिवहन संबंधी मामलों । उपलब्ध कराए जाने वाले बस्तावेज़ -- (1) ऐसे सभी विचारणों में जनमें किसी एक पोत के यौपरिवहन पर साक्ष्य दिया जाना है अधियोजक अपना मामला प्रारंभ करने पर न्यायालय के समक्ष निम्नलिखित ऐसे दस्तावेज़ रखेगा जो विद्यमान है और मामले को लागू होते हैं, अर्थात् —

(क) पोत की लाग बुक;

(ख) दैजन कक्ष के रक और शब्द रजिस्टर।

(ग) नियंत्रण कक्ष की लाग बुक;

(घ) वह वे चार्ट और वे जारी नियंत्रण जिनमें पोत का दिक्षायन किया गया था;

(इ) विश्वाचक प्रारंभ की अनि सारणी।

(ख) विक्रान्त आंकड़ा पुस्तिका और वृष्टिक्षमाशी विश्वाचक नाम बुक;

(ए) कानान की गति आवेदन पुस्तिका, और

(ज) दिक्षायन आफिसर की टिप्पण उपस्थिता और कार्य पुस्तिका।

(2) अधियोजक द्वारा अपना मामला प्रारंभ करने के पश्चात् के पीठासीन आफिसर जब तक शब्द परिस्थितियों को हम प्रकार आपवार्षिक नहीं समझता है कि ऐसी प्रक्रिया में, समय नन्हे होंगा उप नियम (1) में निर्दिष्ट दस्तावेजों को, एक या एक से अधिक दिक्षायन नियंत्रण आपवार्षिक नाम गति आवेदन परिस्थितियों की, जो, नाविक समय पर्यन्त पोत तीर रोपणना का कार्य करेंगे सोने का आदेश देगा, और ऐसे अन्य झोरों सहित जो यथावैश्वित हो, परिशिष्ट में उपवर्णित प्रकृति में, मसो सुसंगत बातों में पूर्ण और इस प्रकार नियंत्रित आफिसर या आकिसरों के हस्ताक्षर द्वारा सन्मत्यापित, परिणाम न्यायालय को परिदृस्त किया जाएगा और तेसी आफिसर या आकिसरों को शपथ दिलाई जाएगी और इसकी शुद्धता की बाबत अधियोजन और प्रतिश्वासा द्वारा प्रतिपत्ति की जा सकेगी।

(3) यदि न्यायालय सहमत होता है तो पीठासीन आफिसर ऐसी रिपोर्ट को अनुमोदित रिपोर्ट के रूप में पृष्ठांकित करेगा और यदि भृत्यन नहीं होता है तो पीठासीन आफिसर द्वारा अपनी विनाशनि नियमी जाएगी और हस्ताक्षरित की जाएगी जिसमें यह दर्शित होगा कि विनाशनि किन बातों के बारे में है और उसके कारण क्या है।

(4) उस रिपोर्ट के साथ ऐसा आफिसर या ऐसे आफिसर उस चार्ट की प्रति या चार्ट का जिसके द्वारा पोत का दिक्षायन किया गया था जिस पर हम प्रकार पात यी अवधारित स्थिति दी गई है, और वह यह अवधारित स्थिति भी जब पात नट पर या खासे में है जैसे वह लाग बुक में नोट की गई है और उसके कारण क्या है।

(5) धारा और ज्ञानीय धारा की गति और रिक्षा और ज्ञार की दशा सी यदि संबंध हो, अधिनियमित की जाएगी, क्षिति की जाएगी और शपथ पर सत्यापित की जानी जाहिं।

(6) परिशिष्ट में उपवर्णित प्रकृति में रिपोर्ट और नैया किया गया चार्ट, पोत की लाग बुक तथा डेंजन कक्ष रजिस्टर, या जान लाग स्थान में पात के भूमि छव्स्त होने या संकटगत होने भूमि से कम 18 बंटे पूर्व यदि इन्हाँ हैं, आरम्भ होने वाली नियंत्रण कक्ष लाग बुक की प्रगतित परि कार्यवृत्त के साथ होंगी।

(7) यह विचारणों में जिनमें किसी विमान के दिक्षालत परसाइर अधिकार हो ऐसे वस्त्रावेज जो विधान है और जो उपग्रहम (1) में उपवर्गित प्रयोजनों के समरूप प्रयोजन के निए उपलब्ध हो, वायुयान के क्रमान आफिसर द्वारा उपलब्ध कराए जाएंगे और न्यायालय ऐसे परिवर्तन महित जो शाब्दिक या नांदनीय हों। इस नियम में विहित प्रतिक्रिया वा अनुसरण करेगा।

85. वस्त्रावेजों का न होना: (1) यदि नियम 81 में वर्णित दस्तवेजों के न दोनों के कारण यह संभावना है कि उनमें वर्णित अकिसरों के लिए अपना कार्य न्यायालय के समाधानप्रद स्पष्ट में पूरा करना कठिन होगा तो अभियोजन का न्यायालय की सहायता करने के लिए विशेषज्ञ साक्षी (यदि संभव हो तो अहित दिक्षालत निवेदण आकिसर) को भूलाना अनुशंसा होगा।

(2) ऐसा साक्षी नियम 81 के अधीन नहीं बुलाया जाएगा और न्यायालय की अनुशा से साक्ष्य सूनते के लिए उम्मिद शोगा और नव चाट पर परिणामी दिशाएँ दिखाएगा।

(3) ऐसा साक्षी अनिवार्यत प्रतिपरीक्षा के अधीन होगा।

86. विवरालत दिवेश आफिसर की परीक्षा:—दिक्षालत निवेदण आकिसर या अन्य सक्षम आकिसरों की, जिन्हें नियम 84 में वर्णित कार्य के पालन के लिए निवेदण किए गए हैं, परीक्षा और प्रतिपरीक्षा न्यायालय के समक्ष रखे गए दस्तावेज की शुद्धता या अणुद्धता अभिनिश्चित करने का समिति होगी।

87. प्रतिरक्षा के लिए मामला: (1) अभियोजन की ओर से मामले को समाप्त करने के पश्चात् विधि आकिसर अभियुक्त को स्पष्ट करेगा कि—

(क) यदि वह चाहता है तो वह गांधी के रूप में शपथ पर साक्ष्य दे सकता है या शपथ लिए बिना कोई कथन कर सकता है किन्तु दोनों में से किसी एक को करने के लिए वह शाश्वत नहीं है;

(ख) यदि वह शपथ पर साक्ष्य देना है तो वह अभियोजक द्वारा प्रतिपरीक्षा किए जाने का और न्यायालय द्वारा प्रश्न किए जाने का भागी होगा।

(2) अभियुक्त को उसके विशद्ध माध्यम में जाने वाली किन्तु परिस्थितियों को स्पष्ट करने के लिए उसे समर्थ बनाने के पश्चात् उसे न्यायालय विचारण के किसी प्रक्रम पर, अभियुक्त को पूर्व चेतावनी दिए बिना उसमें कोई ऐसा प्रश्न कर सकेगा जो न्यायालय आदेशक समझता है और अभियोजन की ओर से भाक्षियों की परीक्षा के पश्चात् और आगानी प्रतिरक्षा करने की अपेक्षा किए जाने के पूर्व उपरोक्त प्रयोजन के लिए मामले के बारे में मान्यतान्वय प्रश्न करेगा।

(3) अभियुक्त ने प्रश्नों का उत्तर देने से छलकार करने के लिए या उनके मिथ्या उत्तर देने के लिए दो का भागी नहीं हो जाएगा।

(4) अभियुक्त द्वारा दिए गए उत्तर ऐसे विवार में विचार निए जाएंगे और उसके विशद्ध उसके किसी अन्य जांच में या किसी ऐसे अन्य उपराध के, जो ऐसे उन्होंने में प्रहीन होता है कि उन्होंने किया या विचारण में उसकी ओर में या उसके विशद्ध साक्ष्य में रखे जाएंगे।

(5) यदि अभियुक्त मामले के तथ्यों के बारे में अपने से भिन्न किसी साक्षी को भूलाना चाहिना है तो वह प्रतिरक्षा की ओर से साक्ष्य दिए जाने के पूर्व प्रतिरक्षा की ओर से मामले का सार देखे हुए आर्थिक संबोधन कर सकेगा।

88. प्रतिरक्षा की ओर से साक्षी: (1) नियम 87 का पालन किए जाने के पश्चात् प्रतिरक्षा की ओर से साक्षियों से अपना साक्ष्य देने की की अपेक्षा की जाएगी।

(2) नियम 79, 80 और 81 के उपलब्ध प्रतिरक्षा की ओर से साक्षियों को उसी प्रकार आगे होंगे जैसे वे अभियोजन की ओर से साक्षियों को लाए होते हैं।

89. जनर गें साक्षी- प्रतिरक्षा की ओर से साक्षियों द्वारा अपना शाश्वत विधि जाने के पश्चात् अभियुक्त द्वारा आगे प्रतिरक्षा में उठाए गए किसी विषय पर, जो अभियोजन, अभियुक्त द्वारा अपनी प्रतिरक्षा प्रकट करने के पूर्व न्यायालय को उचित रूप से वर्णित नहीं कर सकता या या जिसकी अभियुक्त युक्तियुक्त रूप से परिकल्पना नहीं कर सकता था, मास्ट्र देने के लिए किसी साक्षी को न्यायालय की द्वारा जनर में बुला सकेगा या पुनः बुला सकेगा।

90. समाप्त संबोधन:— (1) सभी मास्ट्र विधि जाने के पश्चात् अभियोजन और अभियुक्त न्यायालय को समाप्त संबोधन कर सकेंगे।

(2) अभियुक्त, अभियोजक द्वारा समाप्त संबोधन के पश्चात् नब अपना समाप्त संबोधन करने का हक्काशर होगा जब तक कि अभियुक्त ने तथ्यों के बारे में आपने से भिन्न किसी साक्षी को नहीं बुलाया है जिस दृश्य में, अभियुक्त द्वारा अपना समाप्त संबोधन करने के पश्चात् अभियोजक उपनियम (3) और (4) के अधीन रहे हुए अपना समाप्त संबोधन करने का हक्काशर होगा।

(3) जब दो या अधिक अभियुक्तों का संयुक्त विचारण किया जाता है तो उनमें से कोई एक, जिसने ऐसा कोई साक्षी नहीं बुलाया है, अभियोजक द्वारा अपना समाप्त संबोधन करने का हक्काशर होगा।

(4) (क) जहाँ दो या अधिक अभियुक्त का एक भी प्रतिरक्षा आकिसर या काउन्सेल द्वारा प्रतिनिष्ठित किया जाना है वहाँ दोनों के बहु केवल एक गमापन संबोधन कर सकेंगे;

(ख) जहाँ अभियुक्तों में से किसी एक ने, जिनके लिए वह हाजिर होता है, तथ्यों के बारे में आपने से भिन्न साक्षियों को नहीं बुलाया है वहाँ ऐसा प्रतिरक्षा आकिसर या काउन्सेल, अभियोजक द्वारा अपना समाप्त संबोधन करने के पश्चात् अपना समाप्त संबोधन करने का हक्काशर होगा।

91. विधि आफिसर द्वारा उपसंहार:— समाप्त संबोधन के पश्चात् विधि आफिसर मास्ट्र का उपसंहार करेगा और मामले से संबंधित विधि पर न्यायालय को अब न्यायालय में मलाह देगा।

92. निष्कर्ष पर विचार: (1) न्यायालय विधि आकिसर को उपनियम में अपने निष्कर्ष पर अंदर न्यायालय में विचार करेगा।

(2) निष्कर्ष के बारे में न्यायालय के प्रत्येक सदस्य को, प्रत्येक आरोप के बारे में गये जो कनिष्ठतम पक्षित के मद्दत से, प्रारम्भ होनी चाहिए रूप से वीं जाएगी।

93. निष्कर्षों का अभिनेत्र और घोषणा: (1) प्रत्येक आरोप पर, जिसमें अभियुक्त को दीवारेपिन किया जाता है, निष्कर्ष अभिनियम किया जाएगा और जैसा है इन नियमों में उल्लिखित है, उसके सिवाय साक्षारणतया “दोषी होने” या “दोषी न होने” को अभिनियम किया जाएगा।

(2) जहाँ किसी आरोप के बारे में न्यायालय की गया है कि साक्षित तथ्यों में आरोपित आग्राध गा कोई ऐसा अपराध जिसके लिए लगाए गए आरोप पर उसे अधिनियम के अधीन विधिक रूप से दोषी घोषिया जा सकता है, प्रकट नहीं होता है, वहाँ न्यायालय अभियुक्त को हम आरोप से शोषामृत कर देगा।

(3) जहाँ किसी आरोप के बारे में न्यायालय की गया है कि वे नाथ जिन्हें वह साक्ष्य में साक्षित हुए घोषिता है आरोप में विशिष्टियों के कथन में अधिकथित तथ्यों से तात्पर्यक रूप से भिन्न हैं किन्तु फिर भी आरोप में कथन अपराध को मावित करने के लिए पर्याप्त हैं और अंतर इन्हाँ तात्पर्यक नहीं हैं कि अभियुक्त की प्रतिरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव आये, वह दोषी न होने के निष्कर्ष की बजाए विशेष निष्कर्ष अभिनियम कर देगा।

(4) जिसेप निष्कर्ष में अभियुक्त के, आरोप में विनिविष्ट अपवाशों या परिवर्तनों के अधीन रहते हुए, दोषी होने का निष्कर्ष दिया जा सकेगा।

(5) जहाँ अनुकूली आरोप है और सबिल तथ्यों से न्यायालय को प्रतीत होता है कि वे अनुकूली आरोपों में से किसी में बरिणि अपराध गठित नहीं करते हैं वहाँ न्यायालय उस आरोप के लिए "दोषी न होने" का निष्कर्ष अभिनिविष्ट करेगा।

(6) न्यायालय अनुकूल्य में लगाए गए दो या अधिक भारोपों में से 1,0 से अधिक के लिए अभियुक्त के दोषी होने का निष्कर्ष होते देखा जाएँ के आरोप के लिए दोषसिद्धि अनुकूली आरोप या आरोपों के लिए दोषी होने का घोषन करनी है।

(7) प्रत्येक आरोप पर निष्कर्ष खुले न्यायालय में तुरंत मुक्ताया जाएगा।

94. वोयमुक्ति पर प्रक्रिया:- यदि सभी आरोपों के बारे में निष्कर्ष "दोषी न होने" का है तो फीटासीन आफिसर निष्कर्ष पर तारीख महिने अपने हस्ताक्षर करेगा और ऐसे हस्ताक्षर से सभी कार्यवाही अधिग्रामागत होगी तथा कार्यवाही विधि आफिसर द्वारा हस्ताक्षरित किए जाने पर संयोजक प्राधिकारी को तुरंत पारेषित की जाएगी।

95. वोयसिद्धि पर प्रक्रिया:- (1) यदि किसी आरोप पर निष्कर्ष "दोषी होने" का है तो दंड का अवधारण करने में न्यायालय के मार्गदर्शन के लिए दंड पर विचार करने से पूर्ण न्यायालय, जहाँ कहीं भी संभाव हो साक्ष लेगा और अभियुक्त के साधारण चरित्र, आगु, सेवा, ईक, शैयं को मान्यताप्राप्त कोई कार्य या विषिण्ट आकरण, अभियुक्त को किसी नट रक्षक न्यायालय या किसी वर्डिंग न्यायालय द्वारा दोषसिद्धियों या किसी अलंकरण या पुरस्कार, जो उसके कब्जे में है, या जिसका बहु हकदार है, का, जहाँ संभव हो, साक्ष देगा।

(2) ऐसे विवरण का, जिसमें अभियुक्त को सेवा पुस्तिका में से प्रविष्टियों की संक्षिप्ति है, सम्पादन करने वाले किसी साथी द्वारा इस विषय पर और उस महिनालिंग में निर्दिष्ट व्यक्ति के रूप में अभियुक्त की पहचान करने हुए इस विषय पर साक्ष दे सकेगा।

(3) अभियुक्त ऐसे किसी साथी को प्रतिपरीक्षा कर सकेगा और ऐसे साक्ष का ब्रेंडिंग करने के लिए साथियों को बुला सकेगा और यदि अभियुक्त इस प्रकार प्रार्थना करता है तो सेवा पुस्तिका या उसमें से तात्त्विक प्रविष्टियों की सम्पूर्ण रूप में प्रमाणित प्रति ऐसे की जाएगी, और यदि अभियुक्त यह अस्मिकायन करता है कि संक्षिप्ति किसी प्रकार से, यथास्थिति, सेवा या ऐसी प्रमाणित प्रति के अनुसार ही है तो न्यायालय पुस्तिका संक्षिप्ति का सेवा पुस्तिका या प्रति से मिलान करेगा और यदि उसका निष्कर्ष है कि यह उसके अनुसार नहीं है तो वह संक्षिप्ति में शुद्धि कराएगा या अभियुक्त का आधेष्ट्र अभिनिविष्ट कराएगा।

(4) जब ऊपर विषय की बाबत सभी मालियां दे दिया जाता है तथा अभियुक्त उस पर और दंड में कमी करने के लिए न्यायालय को संबोधित कर सकेगा।

96. दंडादेश:- न्यायालय सभी अपग्राधों की बाबत, जिसके लिए अभियुक्त दोषी पाया गया है एक दंडादेश अभिनिर्णीत करेगा और यह दोडादेश उसी के, जिसके बारे में यह विधिक रूप में दिया जा सकता है, बारे में विद्या गया समझा जाएगा और उसके बारे में नहीं दिया गया नहीं समझा जाएगा जिसके बारे में यह विधिक रूप में नहीं दिया जा सकता।

97. दंडादेश की धोधणा, कार्यवाही को हस्ताक्षर करना और उसका पारेषण—दंडादेश खुले न्यायालय में तुरंत व्यापित किया जाएगा। न्यायालय द्वारा दंडादेश अभिनिर्णीत किए जाने पर, फीटासीन आफिसर दंडादेश पर हस्ताक्षर करेगा तथा तारीख इनियोग और ऐसे हस्ताक्षर से भी कार्यवाही अधिग्रामागत होगी तथा विधि आफिसर द्वारा कार्यवाही पर हस्ताक्षर करने पर यह संयोजक प्राधिकारी को तुरंत पारेषित की जाएगी।

तट रक्षक न्यायालयों की प्रक्रिया और अनुवर्णित भारतीय

98. मवस्यों का स्थान प्रवृण—न्यायालय के मदस्य अपनी जोड़ता के अनुसार स्थान प्रवृण करेंगे।

99. पीठासीन आफिसर का उत्तरदायित्व:- (1) पीठासीन आफिसर, विधि आफिसर महिने विचारण के उचित होना से और अधिनियम नशा उसके अधीन बनाए गए, नियमों के अनुसार और न्यायालय के लिए अनुकूल रीति से संचालन करने के लिए उत्तरदायी है।

(2) पीठासीन आफिसर का कर्तव्य है कि यह देखे कि अभियुक्त का छुजु विचारण होता है और विनाशांगी अक्षिल की विधि या भावित्यों की परीक्षा या प्रतिपरीक्षा करने में उसको अमर्मना के प्रश्न में किसी मालिय कोई अनुचित फायदा न उठाए या उसे न देखा।

100. अभियोजक और अभियुक्त के संबोधन की बाबत न्यायालय को गणित:- (1) अभियोजक का यह कर्तव्य है कि वह न्यायालय प्रणाली में न्यायालय की मद्दायता करे, पथपाल रहिन व्यावहार करे, सभी संघव्यवहार न्यायालय के समक्ष लाए और अभियुक्त के पश्च में किसी मालिय का कोई अनुचित फायदा न उठाए या उसे न देखा।

(2) अभियोजक किसी ऐसे विवरण को, जो उस समय न्यायालय के समक्ष आरोप 'या आरोपों से सुरक्षित नहीं है, निर्दिष्ट नहीं कर सकेगा और उसे ऐसा करने में रोकता और अभियोजक की ओर से प्रवृक्ष भाषा को किसी अनुचित तीक्षणता तथा निष्पाक्षता या संवाचार की कमी को रोकता न्यायालय का कर्तव्य होगा।

(3) अभियुक्त प्रतिरक्षा कर सके इनमें न्यायालय उसे युक्तियुक्त युविधाएं देगा, अभियुक्त को न्यायालय के प्रति अवरेन्टना पूर्ण या अनादर्युर्ण विचार प्रकट करने से और अन्यों के प्रति अग्रिम और अपमानजनक भावा से प्रविरुद्ध रहना चाहिए किन्तु वह अपनी प्रतिरक्षा के प्रयोजन के लिए मालिय पर अधिक्षेप कर सकेगा और अन्य व्यक्तियों पर दोषारोपण कर सकेगा और अपराधकाना का भी आरोप लगा सकेगा किन्तु यह विधि वह ऐसा करता है तो वह उसके कारण उपगत व्यापित के अधीन होगा। न्यायालय अभियुक्त की उसकी प्रतिरक्षा को विसर्गनि के प्रति संबोधन कर सकेगा किन्तु जब तक कि विवेष मामला न हो, उसकी प्रतिरक्षा पूर्ण रूप में ऐसी विसर्गनि के आधार पर नहीं रोकेगा।

101. बदल न्यायालय में बैठक:- (1) न्यायालय, जहाँ हन नियमों द्वारा ऐसा निर्देशित है, बदल न्यायालय में अधिवेशन करेगा और किसी अन्य मामले में भी, सदस्यों के बीच किसी विचार-विमर्श के लिए बदल न्यायालय में अधिवेशन कर सकेगा।

(2) बदल न्यायालय में न्यायालय के सदस्यों, विधि आफिसर और किसी अन्य आफिसर, जिसे अनुदेश मिले हों, के मिवाय कोई अन्य व्यक्ति उपस्थित नहीं होगा।

(3) इस नियम के पूर्ववर्ती उपबंधों को प्रभावी करने के प्रयोजन के लिए न्यायालय एकात में जा सकेगा या उस स्थान को जहाँ वह बैठक करता है, ऐसे अन्य व्यक्तियों में खाली कर सकेगा जो वहाँ उपस्थित रहने के लकड़ा नहीं है।

(4) इसमें हनके पूर्व वर्णित के मिवाय सब कार्यवाहीयां, जिसके अन्तर्गत किसी स्थान का अवशोकन भी है, खुले न्यायालय में और उपनियम (5) के अधीन रहने हुए, अभियुक्त की उपस्थिति में को जाएंगी।

(5) न्यायालय को किसी ऐसे साथी को, जिसे अभी मालिय देना है या अभियुक्त से भिन्न किसी व्यक्ति को, जो उसकी कार्यवाहीयों में हस्तक्षेप करे, हटा देने की व्यक्ति होगी।

102. विचारण को जारी रखा जाना और न्यायालय का स्थगन:-

(1) जब न्यायालय एक बार सम्बोध कर दिया जाए और अभियुक्त और आरोपित कर दिया जाए तब न्यायालय इन नियमों के अनुसार

विचारण दिन प्रति दिन तब तक जारी रखा। मंगा जब तक कि न्यायालय को यह प्रतीत नहीं हो कि न्याय के उद्देश्य के लिए स्थगन आवश्यक है या विचारण इस प्रकार जारी रखना अवश्यक है।

(2) (क) न्यायालय ममय समय पर अपनी कार्यवाहियाँ स्थगित कर सकेगा और किसी ऐसे स्थान पर अधिवेशन कर सकेगा, जो गविधानक हो, और

(ख) जहाँ आवश्यक हो वहाँ घटनास्थल का अवलोकन कर सकेगा।

(3) न्यायालय, विधि आकिसर भी अनुपस्थिति में अप्रसर नहीं होगा और स्थगित हो जाएगा।

(4) यदि वह समय, जिसके लिए स्थगन किया जाता है, विनिर्विष्ट नहीं है तो स्थगन पीठासीन आकिसर का आगे आदेश हैं तक के लिए होगा और वह स्थान जिसके लिए स्थगन किया गया है, विनिर्विष्ट नहीं है तो स्थगन उसी स्थान या ऐसे अन्य स्थान के लिए होगा जो पीठासीन आकिसर के आगे और आदेश में विनिर्विष्ट किया जाए।

103. विचारण का निलंबनः—जहाँ न्यायालय की बैठक के समय उद्भूत किसी बात के परिणामस्वरूप नियम में विनिर्विष्ट विषट्ट के कारण या अन्यथा विचारण जारी रखने में असमर्थ है वहाँ पीठासीन आकिसर या उसकी अनुपस्थिति में उपस्थित ज्येष्ठनम् सबस्य, संयोजन प्राधिकारी तथ्यों की तुरंत रिपोर्ट करेगा।

104. अभियुक्त की मृत्यु या बीमारी की दशा में कार्यवाहियाँ—अभियुक्त की मृत्यु या ऐसी बीमारी की दशा में, जिसके कारण विचारण जारी रखना असमर्थ हो जाए, न्यायालय साक्ष लेकर मृत्यु या बीमारी का तथ्य अधिनिष्ठित करेगा और उसे अभिलिखित करेगा और स्थगित हो जाएगा तथा कार्यवाहियों को संयोजक प्राधिकारी को पारेषित करेगा।

105. पीठासीन आकिसर की मृत्यु, निवृत्ति या अनुपस्थिति—पीठासीन आकिसर की मृत्यु आपत्ति के कारण या अपरिहार्य अनुपस्थिति की दशा में अगला ज्येष्ठ आकिसर पीठासीन आकिसर का स्थान ग्रहण करेगा और यदि न्यायालय अपी भी आकिसरों की उस न्यूनतम संख्या से कम से संरचित नहीं है जो अधिनियम के अनुमार अपेक्षित है तो परीक्षण आगे जारी रहेगा।

106. न्यायालय के सभी सदस्यों का प्रारंभ से अंत तक उपस्थित रहना—न्यायालय का यह सदस्य जो अभियुक्त के विचारण में साक्ष के किसी भाग को ग्रहण किए जाने के दौरान अनुपस्थित रहा है, उस न्यायालय द्वारा उस व्यक्ति के विचारण में आगे कोई भाग नहीं लेगा, किन्तु न्यायालय पर इसका तब तक प्रभाव नहीं पड़ेगा जब तक कि उसकी संख्या न्यूनतम विधिक संख्या से कम नहीं हो जानी।

107. न्यायालय के मदस्यों की राय देना—न्यायालय के प्रत्येक सबस्य को हर प्रश्न पर, जिसका न्यायालय को विनिर्विष्ट करता है, मौखिक राय देनी चाहिए और इस बात के होते हुए भी कि उसने दोषमुक्ति के पक्ष में अपनी राय दी है उसे दंडादेश के बारे में भी अपनी राय देनी चाहिए।

(2) न्यायालय के सदस्यों की राय, क्रमानुसार ना जाएगी जो रैक में कठिनतम सबस्य से आरंभ होगी।

108. आनुरूपिक प्रबन्धों की बाबत प्रतिक्रिया—यदि विचारण के दौरान विधि, साक्ष या प्रक्रिया के किसी विषय पर अभियोजक द्वारा या अभियुक्त द्वारा या उसको और से कोई आक्षेप किया जाता है सां, न्यायालय, अभियोजक या अभियुक्त या काउंसिल या प्रतिक्रिया आकिसर को उसका उत्तर देने का अधिकार होगा और आक्षेप करने वाले व्यक्ति को उत्तर पाने का अधिकार होगा।

109. साक्ष का कब अनुवाद किया जाएगा—जब कोई साक्ष ऐसी भाषा में दिया जाता है जिसे न्यायालय की संरचना करने वाले आकिसरों में से कोई अभियुक्त या विधि आकिसर नहीं समझता है तो वह

साक्ष ऐसी भाषा में भाषान्वतरित किया जाएगा जिसे सब सम्बद्ध व्यक्ति समझते हैं।

110. यह रक्षक न्यायालय के संघवहार की कार्यवाहियों का अधिनेत्रः—

(1) न्यायालय में विधि आकिसर उस न्यायालय के सभी संघवहार अभिलिखित करेता या कराएगा और अभिलेख की (जिसे इन नियमों में कार्यवाहियाँ कहा गया है) परिशुद्धता के लिए उत्तरदायी होगा, और यदि विधि आकिसर को अभियुक्त ने साक्षी के रूप में बुलाया है सो पीठासीन आकिसर विधि आकिसर के साक्ष की कार्यवाहियों के अभिलेख की परिशुद्धता के लिए उत्तरदायी होगा।

(2) साक्ष वृत्तान्त में और साक्ष में प्रयुक्त शब्दों को पथासंभव वैसे हो सके में लिखा जाएगा किन्तु किसी ऐसे सामग्रे में जहाँ अभियोजक, अभियुक्त विधि आकिसर या न्यायालय यह तात्कालिक समझता है वहाँ प्रश्न और उत्तर साड़बाटः लिखे जाएँगा।

(3) जहाँ किसी प्रश्न पर या किसी साक्ष के गहरे या न्यायालय की प्रक्रिया पर आक्षेप किया गया है वहाँ ऐसे आक्षेप को यदि अभियोजक या अभियुक्त द्वारा आवेदन करता है या न्यायालय उचित समझता है तो आक्षेप के आवश्यकों को उस न्यायालय के विनिश्चयों सहित कार्यवाहियों में प्रशिष्ट किया जाएगा।

(4) जहाँ अभियोजक द्वारा या उसकी ओर से या अभियुक्त द्वारा या उसका और से किया गया कोई सम्बोधन लिखित रूप में नहीं है वहाँ उसे आगे या जैसा न्यायालय उचित समझता है उससे अन्यथा कार्यवाहियों में अभिनिष्ठित करना आवश्यक नहीं होगा किन्तु :

(क) न्यायालय हर सामग्रे में अभियुक्त द्वारा की गई प्रतिपरीक्षा का ऐसा अभिलेख अभिनिष्ठित करेगा जो पृष्ठिकरने वाले आकिसर को अभियुक्त द्वारा या उसकी ओर से उसके विरुद्ध तूर आरोप पर दिए गए उत्तर का निर्णय करने में समर्थ कर सके, और

(ख) न्यायालय अभियोजक या अभियुक्त द्वारा या उसकी ओर से किए गए संबोधन में से किन्हीं ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों को अभिनिष्ठित करना जिनकी यत्प्रस्थिति, अभियोजक या अभियुक्त निर्णय करे।

(5) न्यायालय कार्यवाहियों में कोई टीका-टिप्पणी या ऐसी कोई वात जो न्यायालय के समझ नहीं है या ऐसे किसी तथ्य की कोई रिपोर्ट जो विचारण का भाग नहीं है, कार्यवाहियों में दर्ज नहीं करेगा किन्तु यदि ऐसी कोई टीका टिप्पणी न्यायालय को आवश्यक प्रतीत होती है तो न्यायालय इसे पीठासीन आकिसर द्वारा हस्ताक्षरित कर कर पृष्ठक वस्तवों में उचित प्राधिकारी को अप्रेषित कर सकेगा।

111. कार्यवाहियों की अभिरक्षा और निरीक्षण—कार्यवाहियों विधि आकिसर की अभिरक्षा में समझी जाएगी किन्तु उसकी सुरक्षा को बाबत उचित साक्षाती वरताते हुए, न्यायालय के सदस्यों अभियोजक या अभियुक्त द्वारा, निष्कर्ष पर विचार विशेष करने के लिए न्यायालय के बदल होते से पूर्व किसी भी उचित समय पर निरीक्षित की जा सकेगी।

112. कार्यवाहियों का पारेषण—(1) वह अवित जिसकी अभिरक्षा में कार्यवाहियों है उन्हें तुरंत ऐसे व्यक्ति को जो न्यायालय संग्रहीत करने वाले अधिकारी से निर्दिष्ट हो या किसी ऐसे निदेश के अधाव में संयोजक प्राधिकारी को भेज देगा।

(2) कार्यवाहियों की प्रति के लिए आवेदन किए जाने की दशा में प्रथम अभियुक्त को एक प्रति देने के लिए तम समर्थ होने के लिए कार्यवाहियों की पर्याप्त प्रतिक्रिया भी जाएगी।

113. पोठासीन आफिसर द्वारा संयोजक प्राधिकारी को रिपोर्टः— न्यायालय के विवेदन के तुरन्त पर्वत पोठासीन आफिसर संयोजक प्राधिकारी को अधिकारी और वंडाईश स्था न्यायालय द्वारा अभियुक्त को विए गए वंड की सूचना देगा।

114. प्रतिरक्षा आफिसर अभियुक्त का मित्र और काउसेलः— (1) किसी तट रक्षक न्यायालय में अभियुक्त का प्रतिनिधित्व अधिनियम के अधीन किसी आफिसर द्वारा जो “प्रतिरक्षा आफिसर” कहलाएगा किया जा सकेगा या अभियुक्त की सहायता किसी व्यक्तिद्वारा की जा सकेगी जिसकी सेवाएं वह प्राप्त करने में समर्थ हो सके अर जा अभियुक्त का मित्र कहलाएगा।

(2) प्रतिरक्षा आफिसर के वही अधिकार और कर्तव्य होंगे जो काउसेल को इन नियमों के अधीन हैं और वह समान बाध्यताओं के अधीन होगा।

(3) अभियुक्त का मित्र सभी प्रश्नों पर अभियुक्त को सलाह दे सकेगा और साक्षियों से किए जाने वाले प्रश्न सुना सकेगा किन्तु वह साक्षि को परीक्षा या प्रतिपरीक्षा नहीं करेगा और न्यायालय का संबोधित करेगा।

115. काउसेल को उपस्थिति के लिए अपेक्षाएः— (1) काउसेल द्वारा प्रतिनिधित्व करने का आशय रखने वाला अभियुक्त अपने कमान आफिसर या संयोजक प्राधिकारी को ऐसे आशय की शीघ्रतम साध्य सूचना देगा और यदि पर्याप्त सूचना नहीं दी गई है तो न्यायालय, यदि वह उपस्थित समस्ता है, तो अभियोजक के अधिवेदन पर विचारण में अभियोजक की ओर से, काउसेल अभिप्राप्त करने में उसे समर्थ बताने के लिए स्वीकृत हो सकेगा।

(2) जहाँ संयोजक प्राधिकारी ऐसे तिवेश करता है वहाँ काउसेल अभियोजक के साथ उपस्थित हो सकेगा किन्तु उस दशा में जब तक कि उपनियम (1) में निर्दिष्ट सूचना अभियुक्त द्वारा नहीं दी जाती, काउसेल के उपस्थित होने के लिए तिवेश की सूचना अभियुक्त को विचारण से पूर्व ऐसे समय (जो किसी दशा में सात दिन के कम नहीं होगा) दी जाएगी; जिससे कि अभियुक्त विचारण में सहायता प्राप्त करने के लिए काउसेल अभिप्राप्त करने में समर्थ हो सके।

(3) काउसेल को, जो न्यायालय के सामने अभियोजक या अभियुक्त की ओर से उपस्थित होता है अभियोजक या अभियुक्त के समान, जिसके लिए वह उपस्थित होता है साक्षियों को बताने और मीलिक रूप से उनकी परीक्षा करने, प्रतिपरीक्षा करने और पूँँ : परीक्षा करने, कोई अभिवाक करने और कार्यवाहियों का निरोक्षण करने का अधिकार होगा और उस व्यक्ति के स्थान पर, जिसकी ओर से वह उपस्थित होता है, विचारण के अनुक्रम में अन्य कार्य करने का अधिकार होगा और वह इन नियमों का ऐसे पालन करेगा मात्र वह वह अभियुक्त हो और ऐसी दशा में उस व्यक्ति को नियम 87 के उपनियम (2) और नियम 95 के उपनियम (5) द्वारा अनुशासित करने की बाबत के तिथाएं, अधवा जमा न्यायालय उसे करने की अनुशा देता है उसके सिथाए उपर्युक्त मामलों में से किसी को स्वयं करने का अधिकार महीं होगा।

116. विधि आफिसर की निरहृताः— जो आफिसर न्यायालय में आसीन होने के लिए निरहृत है वह उस न्यायालय में विधि आफिसर के रूप में कार्य करने के लिए निरहृत होगा।

117. विधि आफिसर की शक्तियाँ और कर्तव्यः— (1) विधि आफिसर—

(क) जब कभी न्यायालय, अभियोजक या अभियुक्त द्वारा ऐसे अपेक्षित किया जाए तब आरोप (आरोपों) या विचारण में संबंधित विधि के किसी प्रश्न पर अपनी राय देगा।

(ख) न्यायालय की कार्यवाहियों में यदि कोई अप्रहिपक्ता या अनियंत्रिता है तो वह उसे सुचित करेगा।

(ग) वह आरोप में या न्यायालय के गठन में किसी अप्रहिपक्ता या त्रुटि की सूचना संयोजक आफिसर को या न्यायालय को देगा।

(घ) वह साध्य का उपसंहार करेगा और न्यायालय द्वारा उसके निष्पक्ष पर विचार विभाग करने से पूर्व मामले से विधि समझ प्रश्न पर अपनी राय देगा।

(2) यह सुनिश्चित करना विधि आफिसर का कर्तव्य होगा कि अभियुक्त का उसी स्थिति के कारण या साक्षियों की परीक्षा या प्रतिपरीक्षा करने में उसकी अनियंत्रिता या असमर्थता के कारण या अन्यथा कोई अहित नहीं होता है और उस प्रयोजन के लिए वह न्यायालय की अनुशा से साक्षियों को बुला सकेगा और उससे ऐसे प्रश्न कर सकेगा जो उसे आवश्यक या बाछानीय प्रश्न हों।

(3) अपने कर्तव्यों को पूरा करने में विधि आफिसर पूर्णरूप से निष्पक्ष स्थिति रखने को सतर्कता बरतेगा।

(4) जहाँ न्यायालय के समक्ष किसी मामले पर विधि आफिसर द्वारा कोई राय दी गई है वह यदि विधि आफिसर या न्यायालय ऐसा। जाहे तो कार्यवाहियों में प्रविष्ट की जाएगी।

118. न्यायालय के आफिसर के कर्तव्य नियम 54 के उपनियम (1) के अधीन नियुक्त न्यायालय का निष्पक्षित कर्तव्यों का पालन करेगा अपेक्षितः—

(क) वह विधि आफिसर के निवेशों के अधीन न्यायालय की बैठक के लिए सम्पक व्यवस्था करने के लिए उत्तरदायी होगा और उचित भोत से कर्तव्याचार और फिटिंग अभिप्राप्त करेगा और न्यायालय के उपर्योग के लिए अपेक्षित लेखन सामग्री का प्रदाय करेगा।

(ख) वह न्यायालय सदन के बाहर साक्षियों को इकठ्ठा करेगा और जैसे ही लट रक्षक न्यायालय संबंध हो जाता है तो वह पीठासीन आफिसर को रिपोर्ट करेगा कि वे हाजिर हैं।

(ग) जब पीठासीन आफिसर द्वारा ऐसे निरिष्ट किया जाए तब वह अभियुक्त को अन्वर दुसबाएगा और अभियुक्त और श्रीकांगण को अन्वर आने की अनुशा देगा।

(घ) वह यह सुनिश्चित करेगा कि कोई भी साक्षी न्यायालय की अनुशा से ही साध्य देने के लिए न्यायालय में प्रविष्ट होता है अन्यथा नहीं।

(5) वह यह सुनिश्चित करेगा कि साक्षी अपना साक्ष्य देने के पश्चात् यथासम्भव शीघ्र न्यायालय से बाहर चले जाते हैं और उन्हें अन्य साक्षियों से, जिन्होंने अभी साक्ष्य देगा है सम्पर्क करने की अनुशा नहीं दी जाती है।

(च) वह यह सुनिश्चित करेगा कि कोई भी साक्षी जो न्यायालय से बाहर नहीं जाता है।

(छ) जब न्यायालय विचार विभाग के लिए खाली करा लिया जाता है तो वह सुनिश्चित करेगा कि किसी भी व्यक्ति को न्यायालय के समीप रहने की अनुशा नहीं दी जाती है।

119. उन्मत्तता का निष्पक्षः— जहाँ न्यायालय इस निष्पक्ष पर पहुँचता है कि अभियुक्त या तो चिनिथिक्ति के कारण अपनी प्रतिरक्षा करने के लिए असमर्थ है अथवा उसने अभियुक्त कार्य किया है किन्तु चित्त चिह्नित के कारण वह कार्य की प्रकृति के सम्बन्धों के योग्य नहीं या

यायह समझने के बोध्यथा कि वह कार्य गलत या विधि विकृद या वहां पीठासीन आफिसर निष्कर्ष पर हस्ताक्षर करेगा और सारीख डालेगा जिस पर विधि आफिसर भी अपने हस्ताक्षर करेगा और तबपश्चात् कार्य वाहियों पर पुष्टि करने वाले प्राधिकारी को या समरी विचारण की दशा में उन्हें अनुमोदित करने के लिए संशक्त महानिरीक्षक या उप महानिरीक्षक को तुरन्त परिषित की जाएगी।

120. कार्यवाहियों का परिवरणः—प्रत्येक न्यायालय की कार्यवाहियों प्रबलापन के पश्चात् मुख्य विधि आफिसर के कार्यलय को अप्रतिप की जाएंगी और वहां कम से कम सात वर्ष के लिए या जब तक कि न्यायालय द्वारा अधिनियम किया गया वण्डादेश भवान नहीं होता है इसमें भी जो भी पश्चात् वर्षी हो परिवरण की जाएंगी।

121. विचारण किए गए व्यक्ति का कार्यवाहियों की प्रतियों के लिए अधिकारः—टट रक्षक न्यायालय द्वारा विचारण किया गया हर व्यक्ति मामल करने पर न्यायालय के निष्कर्ष की पुष्टि के पश्चात् किसी भी समय और कार्यवाहियों के नष्ट किए जाने के पूर्व मुख्य विधि आफिसर से उनकी प्रतिपिण्डि अभिप्राप्त करने का हक्कदार होगा।

122. कलिपन दशाओं में कार्यवाहियों की प्रतिलिपि का न दिया जाना:—नियम 121 में किसी बात के होने हुए भी यदि केन्द्रीय सरकार का अधिनियम किए गए कार्यों से समाधान हो जाता है कि कार्यवाहियों मा उनके किसी भाग की प्रतिलिपि की उप अधिनियम के अधीन अदूर्त करना गाज़ की सुरक्षा के लिए या विशेषी गाज़ों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों के विकृद होगा तो वहां अभियुक्त को ऐसी प्रतिलिपि नहीं दी जाएगी:

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार का यह समाधान हो जाता है कि प्रतिलिपि की मर्म करने वाला व्यक्ति अधिनियम के अनुसार अर्जी प्रस्तुत करने का या किसी निष्कर्ष या वण्डादेश के संबंध में किसी न्यायालय में कोई कार्यवाहिया संस्थित करने का हक्कदृक् है तो वह ऐसे व्यक्ति या उनके विधिक सलाहकार को, यदि कोई है, निम्नलिखित शर्तों के पर कार्यवाहियों का निरीक्षण करने की अनुमति देगा, अर्थात्:—

(क) निरीक्षण ऐसे समय और ऐसे स्थानों पर किया जाएगा जो केन्द्रीय सरकार या उनके द्वारा प्राधिकृत कोई प्राधिकारी निर्दिष्ट कर, और

(ख) कार्यवाहियों का निरीक्षण करने के लिए अनुमति व्यक्ति ऐसा निरीक्षण करने के पूर्वः—

(i) विधित में यह वचनबद्ध देगा कि वह कार्यवाहियों या उनके किसी भाग की प्रतिलिपियां नहीं बनाएगा और ऐसी कार्यवाहियों में भवित्वित जानकारी या दस्तावेजों का, अधिनियम के अनुसार अर्जी प्रस्तुत करने या उन निष्कर्ष या वण्डादेश के संबंध में न्यायालय में कार्यवाही संस्थित करने के प्रयोजन से भिन्न किसी भी प्रयोजन के लिए प्रयोग नहीं करेगा; और

(ii) एक प्रमाणपत्र देगा कि वह इस बात से भिन्न है कि यदि वह उक्त कार्यवाहियों में भवित्वित किन्तु दस्तावेजों या जानकारी के संबंध में भारतीय शासकीय गुण बात अधिनियम, 1923 (1923 का 19) की धारा 3 और धारा 5 में विविष्ट कोई कार्य करता है तो वह उक्त धाराओं के अधीन अभियोजन का भागी होगा।

123. कार्यवाहियों के अभिलेख का जो जाना:—यदि मूल कार्यवाही का अभिलेख या उसका कोई भाग जो जाता है और आगे, विष्कर्ष वण्डादेश और न्यायालय के मध्यशानों का पर्याप्त गाढ़ है तो वह साक्ष भी प्रयोग में विचारण का विधिमाला और परामित अभिलेख होगा।

124. सक्षियों और अस्य व्यक्तियों द्वारा अपराधः—जब किसी न्यायालय की गति है कि धारा 40 में निर्दिष्ट और उसके सामने दिए गए या कार्यवाहियों के दौरान उसके ध्यान में लाए गए किसी अपराध की, जो यदि अधिनियम के अधीन किसी व्यक्ति द्वारा किया गया होता तो ऐसा अपराध बनता, आख फरने के लिए सूचना आधार है तो ऐसा न्यायालय निम्नलिखित कार्यवाही कर सकेगा, अर्थात्:—

(क) यदि वह व्यक्ति, जिसे प्रतीत होता है कि अपराध किया है, अधिनियम के अधीन है तो न्यायालय उसके आखरण की सूचना उनके कमान आफिसर को दे सकेगा,

(ख) यदि वह व्यक्ति जिसे प्रतीत होता है कि वह कार्य किया है सेना, नीसेना, बायू सेना, सीमा सुरक्षा बल या किसी अन्य सेना विधि के अधीन है तो न्यायालय उसके आखरण की सूचना यथा स्थिति, उचित सेना नीसेना-बायू सेना, सीमा सुरक्षा बल या अन्य संस्थित सशस्त्र बल प्राधिकारी को दे सकेगा।

(ग) अन्य मामलों में वह आफिसर जिसने साक्षी को उपस्थित होने के लिए मन किया है या पीठासीन आफिसर अधिकारिता रखने वाले निकटतम प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट या महानगर न्यायिक मजिस्ट्रेट को नियुक्त शिकायत भेजेगा और उन कार्यों के मामले में जो यदि उस व्यक्ति द्वारा किए गए होते, जो अधिनियम के अधीन हैं तो धारा 40 के खंड (इ) के अधीन अपराध होते, न्यायालय प्रारंभिक जांच करने के पश्चात् जो आवश्यक हो, मामले की, अधिकारिता रखने वाले निकटतम प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट को, दंड प्रतिया भेजता, 1973 (1974 का अधिनियम 2) की धारा 340 के अनुसार जांच या विचारण के लिए भेज सकेगा।

भास्कर घोष, संयुक्त सचिव

परिषिष्ठ-1

(नियम 14)

विलम्ब रिपोर्ट का प्राप्त

सं०

टट रक्षक सेवा

तारीख

- सेवा में, _____
- अपराध _____
- अपराध की तारीख _____
- जह तारीख जिसको अपराध का पता चला _____
- गिरफतारी (बुली/बद्र) की तारीख _____

6. मुख्यी गिरफतारी के लिए निर्भुकित
की पुनः गिरफतार करने पर
प्रतिकूल प्रधान डाले बिना
निर्भुकित की तारीख (यदि निर्भुकित
नहीं किया गया, कारण) -----
7. वह तारीख जिसको साक्ष्य का
अधिसेव दिया गया (यदि अधिक-
लिखित नहीं किया गया तो, कारण) -----
8. विचारण के लिए आवेदन
किस तारीख को किया गया -----

9. वह तारीख जिसको विचारण
होना है -----
10. विलम्ब के लिए कारण -----

(कमान आफिसर)

प्रतिलिपि--

1. महानिरीक्षक

2. महानिरीक्षक (यदि अधिक्युक्त विचारण के बिना 3 मास से
अधिक के लिए बन्द गिरफतारी के अधीन हैं तो विशेष रिपोर्ट)

परिशिष्ट-2

(नियम 15)

(गिरफतारी के अधीन व्यक्ति/व्यक्तियों की प्रार्थना अस्वावेदन)

कम सारीख अधिक्युक्त का उम आफिसर/ अधीनीक्षा का नाम	प्रार्थना या अस्वावेदन को विशिष्टया नाम जिसको प्रार्थना या अस्वावेदन किया गया	कमान आफिसर के आवेदन	उस आफिसर या अधीनस्थ आफिसर के तारीख सहित हस्ताक्षर जो अधिक्युक्त को कमान आफिसर के आवेदन संतुष्टित करता है ।
1	2	3	4

परिशिष्ट 3 के

(नियम 18)

अपराध की रिपोर्ट

संख्या -----	रैक -----	तारीख -----	के विरुद्ध आरोप			
अपराध का स्थान और तारीख	अपराध की विशिष्टया	अधिकारी	साक्षी का नाम	अधिनिर्णीत वड़	उस आफिसर के हस्ताक्षर जिसके द्वारा अधिनिर्णीत किया गया है और विशेष अधिनिर्णीय को तारीख	टिप्पणियां
1	2	3	4	5	6	7

ठट रक्षक पोत तारीख----- कमान आफिसर के हस्ताक्षर

परिशिष्ट 3 ख

(नियम 20)

दृष्ट अनुमोदन प्राप्त्य

ठट रक्षक पोत-----

तारीख-----

संख्या -----

जल्द तारीख -----
 ठट रक्षक पोत में कार्यभार ग्रहण करने की सारीख -----
 निर्धारित अविद्या, अवश्यत -----
 उम कार्य के लिए, जो उमने किया, आरोपित किया गया -----
 (यहां प्रत्येक मामले में अपराध की तारीख से प्रारम्भ होने वाले अपराध/ अपराधों की विशिष्टियां अन्वेषणापूर्वक करें)

..... के लिए
 (यहां वह दण्ड विनिर्दिष्ट किया जाए, जिसके लिए अनुमोदन अपेक्षित है)
 नाम ----- रैक -----

संख्या -----
 सदाचारण पदक -----
 सदाचारण बैज -----

मैंने ----- के ----- मास -----
 दिन को व्यक्तिगत रूप से और सर्वमाधारण की उपस्थिति में परिवारी और अधिक्युक्त की उपस्थिति में मामले का अन्वेषण किया और अधिक्युक्त ने आरोप/ आरोपों का वोषी होने/दोषी न होने का अभिवचन किया।
 ----- का आरोप/आरोपों के नमर्यन में तथा जो कुछ अधिक्युक्त ने अपनी प्रतिरक्षा में कहना है और ----- का साक्ष्य जिसे उमने

अपनी ओर से बुलाया, मूनने के पश्चात् मैं विचार करता हूँ कि उसके बिन्दु आरोप मिछ हो गया है/हो गए हैं और इस बात का व्यापक रखते हुए कि उसकी आवश्यकता परिका पर रजिस्टर किया गया.....
.....अपराध है, मैं अधिनिर्णीत करता हूँ कि उसे निम्नलिखित प्रकार से वंचित किया जाएः—

(वण्ड/दण्डों की विशिष्टियों अन्तःस्थापित करें)

तट रक्षक पोत/स्थापन
के फलक पर भेंटे हस्ताक्षर से प्रवस।

कमान आफिसर के हस्ताक्षर और ऐक

अनुमोदन प्राधिकारी को प्रार्थना

तट रक्षक पोत
तारीख 198

महोदय,

मैं, उपरोक्त अभियुक्त को दिए जाने वाला/वाले निम्नलिखित दंडादेश आपके अनुमोदन के मिए भेज रखता हूँ—

2. अभियुक्त का सेवा प्रमाण पत्र, आवश्यक पुस्तिका और साक्ष्य
का अभिलेख या सार इसके साथ संलग्न है।

हस्ताक्षर

ऐक

अनुमोदन प्राधिकारी का विनिश्चय

हस्ताक्षर

ऐक

तारीख

कमान आफिसर
तट रक्षक पोत

अभियुक्त को आज 198 के की तारीख
को पछ कर सुनाया गया।

हस्ताक्षर

ऐक

नियुक्ति

परिशिष्ट 4

(नियम 27)

तट रक्षक न्यायालय के लिए आवेदन का प्रूष

तट रक्षक

केन्द्र

तारीख

तट रक्षक न्यायालय के लिए आवेदन

महोदय,

मैं, भेरे कमान के अधीन तट रक्षक पोत के संबंधित ईक नाम के बिन्दु आरोप प्रस्तुत करता है और आप से मंजूरी देने और तट रक्षक न्यायालय संघोनित करने की प्रार्थना करता हूँ:

मामले का अन्वेषण (क) द्वारा किया गया

अभियुक्त अब पर है। मैं निम्नलिखित दस्तावेज इसके साथ संलग्न करता हूँ—

1. आरोप पत्र (.....प्रतियां) (ब)

2. साक्ष्य का अभिलेख या सार, मूल (ग) और 5 प्रतियां

3. मूल प्रबंध (घ)

4. पक्षाचार (घ)

5. सेवा का अभिलेख (घ)

6. अभियोजन और प्रतिरक्षा के लिए साक्षियों की सूची (वर्तमान पते सहित) (घ)

7. प्रदर्शों की सूची (झ)

8. अभियुक्त का इस बारे में कथन की क्षमा वह संयोजक आफिसर द्वारा समनुदिष्ट आफिसर द्वारा विचारण में अपना प्रतिसिद्धित करना चाहता है या नहीं [(नियम 55) (2)(झ)]

कमान आफिसर के हस्ताक्षर

टिप्पण :

संयोजक प्राधिकारी

टिप्पण :

(क) यहां अन्तःस्थापित करें

(1) आफिसर जिसने आरोपों का अन्वेषण किया।

(2) आफिसर जिसने मामले की प्रारम्भिक मुनबाई की।

(3) आफिसर जिसने अभिलेख साक्ष्य या साक्ष्य का अभिलेख तैयार किया।

(4) पीठासीन आफिसर, विधि आफिसर, सबस्टें, अभियोजक और अभियुक्त को एक ऐक प्रति।

(ग) मूल अभिलेख या साक्ष्य का साक्ष्य या साक्ष्य का अभिलेख को भेजा जाएगा।

(घ) 3, 4, 5 और 6 अभियुक्त के कमान आफिसर को विचारण की सूचना सहित वापस किया जाएगा।

(झ) 7 और 8 पीठासीन आफिसर को भेजे जाएंगे।

परिशिष्ट 5

[नियम 45 (2)]

आरोप पत्र का नमूना

तट रक्षक का अभियुक्त संख्या ईक नाम निम्नलिखित से आगे पित किया जाता है :-

अपने परिषिष्ट आफिसर की विधिपूर्ण कमान का सवाल करना [तट-रक्षक अधिनियम 1978 की धारा 20 (2)]। उसमें को समय पर अपने परिषिष्ट आफिसर ईक नाम जो का है विभागीय अनुदेशों के लिए पंक्ति में छड़े होने के विधिपूर्ण समादेश का पंक्ति में छड़े न होकर अवश्या को।

कमान आफिसर	
टटरधक	
स्थान
तारीख
तट रक्षक न्यायालय द्वारा विचारित किया जाएगा ।	हस्ताक्षर
न्यायालय संयोजित करने के लिए प्राधिकृत आफिसर
स्थान
तारीख
परिशिष्ट 6
[नियम 54 (क)]	
तट रक्षक न्यायालय 1978 के अधीन तट रक्षक न्यायालय के समवेत होने के लिए आदेश का प्रस्तुत द्वारा आदेश
संस्था	(स्थान तारीख)
नीचे वर्णित आकिसरों के औरे जो नीचे वर्णित अभियुक्त व्यक्ति (व्यक्तियों) का तट रक्षक न्यायालय द्वारा विचारण करने के लिए की को पर समवेत होंगे । पर
जेठ आफिसर पीठामीन आफिसर के रूप में आसीन होगा ।
सदस्य
.....
.....
प्रतीक्षा सदस्य
विधि आफिसर	विधि आफिसर के रूप में नियुक्त किया जाता है ।
अभियोजक	अभियोजक के रूप में नियुक्त किया जाता है ।
अभियुक्त	नाम
रैक	संलग्न पोत
अभियुक्त को उपस्थित होने के लिए खेनावनी दी जाएगी और सभी साक्षियों से उपस्थित होने के लिए सम्मक्ष रूप में अपेक्षा की जाएगी ।
कार्यवाही (जिसको केवल चार प्रतियों की अपेक्षा है) को अप्रेपित की जाएगी ।
आज की	तारीख को
हस्ताभरित ।
6 संयोजक आफिसर	
परिशिष्ट 7	
[नियम 84 (6)]	
नीपरिवहन संबंधी अपनाघ के लिए विचारण पर न्यायालय का आदेश और विक्वालन की रिपोर्ट
तट रक्षक न्यायालय द्वारा विचारण
तट रक्षक पोत
न्यायालय द्वा आदेश
सेवा में
तट रक्षक पोत	के
तट रक्षक पोत	के

तट रक्षक पोत के भूविभास्त होने संकायात्रा हैं। जानेवाले जाने के संबंध में निम्नलिखित पुस्तकों/वार्ट आदि आपके हृदयों किए जाने हैं ।

- (क) पोत की लाग बुक
- (ख) इजन कम्ब के रफ/बुक रजिस्टर
- (ग) नियंत्रण वाले की लाग बुक
- (घ) दिक्षालन पथास्तर की अन्तिम सारणी
- (ङ) दिक्षालन आकड़ा पुस्तक
- (च) धूर्णास्त्रायी दिक्षालन ला लाग बुक
- (छ) कमान आफिसर को रात्रि आदेश पुस्तक
- (ज) विक्वालन अफिसर की रात्रि आदेश पुस्तक
- (झ) दिक्षालन आफिसर की टिप्पा पुस्तक
- (ट) दिक्षालन आफिसर की कार्य पुस्तक
- (ठ) विक्वालन अफिसर के दृश्य प्राप्त
- (ड) चक्कर और इजन आदेश पुस्तक
- (ण) वहाँ वार्ट और वे चालन आदेश जिनसे पोत का विक्वालन किया गया था ।

2. आपको निम्नलिखित अभियुक्तिवाले विचारण करना है और न्यायालय को रिपोर्ट करनी है ।

- (क) क्या मामले से संबंधित जन पर्यवेक्षीय प्रकाशनों और सभी जन पर्यवेक्षीय सूचनाओं से सुरंगत उचित चार्ट, नियंत्रण दिए गए थे, यदि हाँ, तो क्या उनका प्रयोग किया गया था और क्या प्रयोग किया गया था आपको यह कथन करता है कि क्या उन्होंने के मध्य विचारण में चार्ट प्रयोग में था ।
- (ख) घटना से पूर्व पोत की स्थिति को अलिन विश्वसनीय किसीसे कब और कैसे प्राप्त की गई थी और क्या मध्यालय में जन में वे पथ जिन पर पांत चाला गया था और दूसी तरफ को की गई थी, घटना से पहले अभियुक्तिवाले को गई थी और पोत की लाग बुक में ठीक रूप से अभियुक्तिवाले की गई थी ।
- (ग) क्या तालाबाहात की विवरण नियमों द्वारा विवादान्तर्क वालन किया जाता है ।
- (घ) मानक दिक्षालन के पथास्तर और चार्ट स्थाई रिस्ट्रूक्शन का शुद्धारा पर किस मात्रा तक विचारण किया जाता है, कौन सा दिक्षालन प्रयोग में था और क्या उस दिक्षालन को गती या नियमों के अनुप्राधित न्यायालय को दिया जाना है तथा आपको एवं विवादान्तर्क वालन के बारे में आप प्रतिपरोभा के अधीन होते हैं ।

3. आपको पोत का उन समय में जब उनसे स्थिति अतिम बार सही रूप से अभियुक्तिवाले की गई थी (या ऐसे समय से और ऐसे औरे महिने जिसको न्यायालय अंदर करे) पोत की लाग बुक, इन्हें कम्ब रजिस्टरों आदि से गती करती है और आपके हृदयालयों से अनुप्राधित न्यायालय को दिया जाना है तथा आपको एवं विवादान्तर्क वालन के बारे में आप प्रतिपरोभा के अधीन होते हैं ।

आपको अपनी रिपोर्ट के माथ चार्ट के जिनके द्वारा पोत का विक्वालन किया गया था, जिस पर इस प्रकार अवधारित पोत की स्थिति और वह अवधारित स्थिति भी जब पोत नट पर या छतरे में था, जैसा वह लाग बुक में नोट की गई है, आरेखन की एक प्रति न्यायालय की परिवर्तन करती है। धारा और उत्तरीय धारा की गति और दिशा और ज्वार की वजा भी जब पोत था अभियुक्तिवाले को जानी है और उसकी रिपोर्ट दी जानी है ।

4. न्यायालय को अपनी रिपोर्ट संबंध प्रस्तुत पर दी जाना है।

आज 19 के की नारीख को
मेरे हस्ताक्षर में प्रदत्त।

पीठासीन आहिना

(यह आदेश आकिसरों को न्यायालय में पढ़कर गुनाया जाना है और किस अनुगालन के लिए उन्हें दिया जाना है। वे इसे अपनी रिपोर्ट भलित न्यायालय की वापस करेंगे और तब यह कार्यवाही के अभिनेत्र में उचित स्थान पर अंतः स्थापित किया जाएगा।)

टिप्पणी:- नियम 84 (6) के अनुसार निवेशित आकिसर (आकिसरों) का/किं नाम अंतः स्थापित करें।

आवश्यक और पीठासीन आकिसर द्वारा अंतः स्थापित किए गए हैं।

यह जहां कहीं भी सम्भव हो आगेखन कागज पर, जो वास्तव में प्रयोग किए गए चार्ट के ऊपर रखा जा सकता है, किया जाना चाहिए।

दिक्कचालन निवेश आकिसर द्वारा न्यायालय को रिपोर्ट

प्रश्न

उत्तर

1. क्या मामले से संबंधित जन पर्यवेक्षण
सूचनाओं से मुसंगत उचित चार्ट, छालन
निवेश पोत को लिए गए थे

2. क्या आपने उन चार्टों और प्रकाशनों
का, जो छालन के ममतप्रयोग में कहे
जाते हैं, निरीक्षण किया है।

3. क्या ऐसे चार्टों और प्रकाशनों का
अस्तित्व संशोधन किया गया था

4. क्या घटना के ममत शेष का विशालानम
मापमान चार्ट प्रयोग में था और क्या
यह प्रतीत होता है कि समूचित प्रका-
शनों का पूर्ण प्रयोग किया गया है

5. घटना से पूर्व पोत की स्थिति की
अंतिम विश्वसनीय फिल्म कब और कैसे
प्राप्त की गई थी

6. क्या अंतिम विश्वसनीय फिल्म और
घटना के समय के बीच, वे पथ जिन
पर पोत चलाया गया था और दूसी तरफ
की गई थी, ठीक रूप से अभिनिविष्ट
किए गए थे और लाग बह में ठीक
रूप से अभिलिखित किए गए थे

7. तलाबगाहन की बाबत नियमों का
सावधानी पूर्वक पालन किया गया था।

8. क्या दिक्कसूचक की गलतियों को अधि-
निश्चित करने और अभिलेख करने
संबंधी विनियमों का पालन किया गया
था

9. क्या आपने पूरीकर्त्त्वादी दिक्कसूचक
लाग बह का विक्रालन आंकड़ा पुस्तक
और अंतिम पथाल्मर लारणी की
विश्वसनीयता की मात्रा को अभिनिविष्ट

करने के लिए जो प्रयुक्त दिक्कसूचक
संशोधन पर की जा सकती है,
निरीक्षण किया है।

10. क्या आप ऐसी विश्वसनीयता की मात्रा
को संतोषजनक रूपस्तवे है।

11. क्या प्रयोग में था, छूटें स्थायी
दिक्कसूचक या बुम्कीय दिक्कसूचक

12. क्या उस दिक्कसूचक के, यदि कोई हो,
की गलती का ठीक रूप से उपयोग
किया गया।

13. क्या आपने पोत की स्थिति की
अंतिम विश्वसनीय फिल्म के समय से
संगमित पोत की स्थिति गणना स्थिति
तैयार की है और चार्ट/आरेखन पर
पर रखी है।

14. क्या आपने पोत की स्थिति की अंतिम
विश्वसनीय फिल्म के समय से संगमित
पोत को अनुभाचित स्थिति तैयार की
और चार्ट/आरेखन पर रखी गई है।

15. क्या आपकी अनुमानित स्थिति की
संगणना करने में वायु और समुद्र के
लिए कोई गुजारी रखी गई थी

16. अपनी संगणना करने में क्या आपने
किन्हीं आंकड़ों का प्रयोग किया जो
पोत में उपलब्ध नहीं थे

17. एक परीक्षण धाराओं और ज्वारीय
धाराओं की क्या गतियां और दिशाएं
थीं

18. (क) वास्तव में अनुभव की गई,
अर्थात् श्री आर और घटना के
समय वास्तविक स्थिति में अंतर

(ख) जैसे आप द्वारा अनुमानित की
गई।

(ग) जैसे पोत में वास्तव में अनुक्रान
की गई।

19. जब पोत तब

ज्वार की क्या वजा थी

नारीख

आकिसर के हस्ताक्षर और
टैक्स

(यह रिपोर्ट विधि अधिकारी द्वारा न्यायालय को पढ़ कर सुनाई जाएगी।
यदि न्यायालय सहमत होता है तो रिपोर्ट पर अध्यक्ष द्वारा अनुमोदित के
रूप में पृष्ठोक्त किया जाएगा। यदि न्यायालय सहमत नहीं होता है तो
अध्यक्ष द्वारा हस्ताक्षरित एक कथन यह दर्शित करते हुए तिनि बातों
में और किन कारणों से न्यायालय रिपोर्ट से विसम्मत है, लगाया जाएगा।

रिपोर्ट न्यायालय के किसी कथन महिला नर कार्यवाहियों के अधिनेत्र
उचित स्थान पर अंतः स्थापित की जाएगी।

परिशिष्ट 8

तट रक्षक अधिकारीयम्, 1978 की धारा 100 और 103 के अधीन वारंट।

प्रकल्प "क"

जब कैदी आजीवन कारावास के लिए दण्डादिष्ट किया जाता है तब प्रयोग के लिए मुपर्यादी का वारंट।

सेवा में

अधीक्षक

कारागार

19..... के की तारीख
को अधिकारी तट रक्षक न्यायालय में, स०..... रैक.....
नाम युनिट

(यहां अपराध संक्षिप्त रूप में कथित किया जाएगा जैसे, यथास्थिति
"सक्रिय इयूटी पर अभियंजन" गतु के माय पक्षाचार या के लिए मिह्न-
घोष छहराया गया।)

और उक्त तट रक्षक न्यायालय ने 19..... के
की तारीख को उक्त (नाम) पर निम्नलिखित
दण्डादेश अर्थात् (पूर्ण दण्डादेश, किन्तु हस्ताक्षर को छोड़कर
प्रविष्ट किया जाएगा) पारित किया और उक्त दण्डादेश.....
भाग जैसा (इ) द्वारा अपेक्षित है (घ) द्वारा पुष्ट कर दिया गया है और
पुष्ट के बिना विधि के अनुसार विधिमाल्य है।

और उक्त दण्डादेश जैसा (ग) द्वारा अपेक्षित है (ब) द्वारा सम्मक्त
रूप से पुष्ट कर दिया गया था।

आप से अपेक्षा की जाती है और आप को प्राधिकृत किया जाता है
कि आप इन यारंट के माय, जैसा विधि द्वारा अपेक्षित है उक्त (माम.....)
को उक्त कारागार में अपनी अभिरक्षा में लें जब तक
कि वह कारावास का उपर्युक्त वृण्ड भोगने के प्रयोजन के लिए उक्त
वारंट के साय समूक्त प्राधिकारी को और अभिरक्षा में आपके द्वारा
नहीं दे दिया जाता।

उपरोक्त दण्डादेश (घ) से प्रभावी हुआ है।

आज 19..... के कीर.....
को मेरे हस्ताक्षर से प्रदत्त।

हस्ताक्षर

- (क) सिविल कारागार का नाम प्रविष्ट करें।
- (ख) पुष्ट करने वाले प्राधिकारी का नाम और वर्णन।
- (ग) यदि आवश्यक हो तो "....." को अनुजा से" जोड़ें।
- (घ) वह तारीख लिखें जिसको मूल दण्डादेश हस्ताक्षित किया
गया था।
- (छ) कैदी के कमान आफिसर या परिषिष्ट या अन्य विहित आफिसर
के हस्ताक्षर।

परिशिष्ट 8

प्रकल्प ख

जब कैदी ऐसे कारावास से दण्डादिष्ट किया जाता है जो सिविल
कारागार में भोगा जाता है तब प्रयोग के लिए वारंट (तट रक्षक अधि-
नियम की धारा 100)

सेवा में

अधीक्षक,

कारागार

19..... के को
तारीख को अधिकारी तट रक्षक न्यायालय में, स०.....
रैक..... नाम
युनिट

यहां अपराध संक्षिप्त रूप में कथित किया जाएगा, जैसे, यथास्थिति
अभियंजन, "जोरी", चुराया हुआ माल प्राप्त करना, "कपट" विधिपूर्ण
समादेश की अवज्ञा या (के लिए सम्मक्त रूप से सिद्धदोष
छहराया गया।)

और उक्त (ख) से तट रक्षक न्यायालय
ने 19..... के की तारीख को उक्त (नाम)
पर निम्नलिखित दण्डादेश अर्थात् (पूर्ण दण्डादेश किन्तु हस्ताक्षर को छोड़कर
प्रविष्ट किया जाएगा) पारित किया और उक्त दण्डादेश.....
भाग जैसा (इ) द्वारा अपेक्षित है (घ) द्वारा पुष्ट कर दिया गया है और
पुष्ट के बिना विधि के अनुसार विधिमाल्य है।

आपसे अपेक्षा की जाती है और आपको प्राधिकृत किया जाता है कि
आप इस वारंट के साय उक्त नाम (कि.....) को
अपनी अभिरक्षा में ले भी जहां कारावास के उपरोक्त दण्डादेश का विधि
के अनुसार निपादन करें दण्डादेश (च) से प्रभावी
है।

आज 19..... के की तारीख को मेरे हस्ताक्षर
में प्रदत्त।

हस्ताक्षर (छ)

- (क) सिविल कारागार का नाम प्रविष्ट करें।
- (ख) तट रक्षक न्यायालय या समरी न्यायालय।
- (ग) जो ग्रन्ट लागू न हों, उन्हें काट दें।
- (घ) पुष्ट करने वाले प्राधिकारी का नाम और वर्णन।
- (छ) यदि आवश्यक हो तो तो को "..... अनुजा से" जोड़ें।
- (च) वह तारीख लिखें जिसको मूल दण्डादेश हस्ताक्षित किया
गया था।
- (छ) कैदी के कमान आफिसर या परिषिष्ट या अन्य विहित आफिसर
के हस्ताक्षर।

परिशिष्ट 8

प्रकल्प "ग"

जब आजीवन कारावास का दण्डादेश वरिष्ठ प्राधिकारी द्वारा कम करके
किसी लम्बुतर अवधि का कर दिया जाता है (धारा 105)

सेवा में

- (क) कारागार अधीक्षक
- (भूतपूर्व) युनिट का (सं रैक नाम
पर अधिकारी (च)
तट रक्षक न्यायालय द्वारा उस पर पारित (ग)
के दण्डादेश के अनुसार में (छ) द्वारा जारी किए गए वारंट के अधीन
(क) कारागार में परिषिष्ट (ज)
.... ने तट रक्षक न्यायालय द्वारा उसको प्रदत्त शक्ति का प्रयोग
करते हुए उपरोक्त दण्डादेश की वालन निम्नलिखित आदेश अर्थात्
(च) पारित किया।

आपसे अपेक्षा की जाती है और आपको प्राधिकृत किया जाता है कि आप इस वारंट के साथ उक्त (नाम)..... को अपनी अभिभासा में तब तक रखें जैसे कि विधि द्वारा अपेक्षित है जब तक कि यह आजीवन कार्रवास का, उपरोक्त दंड भोगें के प्रयोजन के लिए उक्त वारंट के साथ समुचित प्राधिकारी को और अभिभासा में आपके द्वारा नहीं दे दिया जाता। और आपसे यह और अपेक्षा की जाती है तथा आपको प्राधिकृत किया जाता है कि आप मुश्तुर्गी का वह मूल वारंट जिसके अद्दे वह वारंट जारी किया जाता है मुझे बापस कर दें।

ऐसे कार्रवास को अधिकी की गणन, (छ) से कि जाएगी।

आज 19..... के को तारीख
को मेरे हस्ताक्षर से प्रवर्तत।

हस्ताक्षर (ज)

(क) सिविल कार्रवास का नाम प्रविष्ट करें।

(ख) उस आफिसर का नाम और पदाभिधान लिखें जिसने मूल वारंट पर व हस्ताक्षर किए।

(ग) मूल दंडादेश लिखें (यदि यह पुष्ट करने वाले आफिसर या अस्य बरिष्ठ प्राधिकारी द्वारा कम किया गया था तो दंडादेश इस प्रकार लिखा जाना चाहिए) — “आजीवन (कार्रावास पुष्ट करने वाले आफिसर द्वारा कम किए 10 रु किया गया)।

(घ) साधारण।

(ङ) दंडादेश में परिवर्तन करने वाले प्राधिकारी का नाम और पदाभिधान।

(च) आदेश पूर्ण रूप से उप वर्णित किया जाएगा।

(छ) वह तारीख लिखे जिसको मूल दंडादेश हस्ताक्षरित किया गया था।

(ज) निहित आफिसर के हस्ताक्षर।

परिषिष्ठ 8

प्रस्तु “घ”

जब ऐसी तट रक्षक अभिभासा में प्रदर्श दिया जाता है तो प्रयोग के लिए वारंट

सेवा में,

अधीक्षक

(क) कार्रावास

(भूतपूर्व) पूनिट का संधारक
रैक साम पर अधिकृष्ट (घ)

..... तट रक्षक, स्थायालय द्वारा उस पर पारित (ग)

..... के दंडादेश के अनुसरण में (घ).....

द्वारा जारी किए गए वारंट के अधीन (क).....

कार्रावास में परिवर्त है और (क)..... ने तट

रक्षक अधिभियम द्वारा उसको प्रदर्श शक्ति का प्रयोग करते हुए उपर्युक्त दंडादेश की बाबत निम्नलिखित आदेश, अर्यात्— (च)..... पारित किया।

आपसे अपेक्षा की जाती है और आपको प्राधिकृत किया जाता है कि आप इस वारंट को लाने वाले आफिसर को या अधीनस्थ आफिसर को उक्त (नाम) जो आपकी अभिभासा में है, तुरन्त परिवर्त कर दें।

आज 19..... के को तारीख को
हस्ताक्षर से प्रवर्तत।

हस्ताक्षर (छ)

(क) सिविल कार्रावास का नाम प्रविष्ट करें।

(ख) उस आफिसर का नाम और पदाभिधान लिखें जिसने मूल वारंट पर हस्ताक्षर किया।

(ग) मूल दंडादेश लिखे (यदि यह पुष्ट करने वाले आफिसर या अस्य बरिष्ठ प्राधिकारी द्वारा कम किया गया था तो दंडादेश इस प्रकार लिखा जाना चाहिए) —

“दो रुप्य का कठोर कार्रावास पुष्ट करने वाले आफिसर द्वारा कम करके एक रुप्य कर दिया गया।

(घ) तट रक्षक स्थायालय या समरी स्थायालय

(ङ) आदेश जारी करने वाले प्राधिकारी का नाम और पदाभिधान

(च) आदेश पूर्ण रूप से उत्पादित किया जाएगा।

(छ) निहित आफिसर के हस्ताक्षर।

परिषिष्ठ 8

(प्रस्तु ४)

मृत्यु दंडादेश का निष्पादन करने के सिए वारंट।

सेवा में,

अधीक्षक,

तट रक्षक पोत के केवी का नाम

(क) भूतपूर्व रैक का विचारण तट रक्षक स्थायालय

द्वारा को किया गया और मृत्यु से दंडित

किया गया तथा दार्ढर तारीख द्वारा आपकी अभिभासा में सुनुर्ख किया गया है;

उक्त दंडादेश की पुष्ट करने वाले केन्द्रीय सरकार के आदेश प्राप्त हो गए हैं जो इसके साथ सन्तुलन है;

आप उक्त को (ख)..... पर

जब तक वह मर नहीं जाए तब तक उसे मर्हन में काँसी लगा कर लटक वाले या उसे (ख) पर गोली से मरवाने द्वारा उक्त दंडादेश का निष्पादन

करें और वारंट मुझे इस पृष्ठाकृत के साथ बापस कर दें कि दंडादेश का निष्पादन कर दिया गया है।

आज 19..... के की
तारीख को मेरे हस्ताक्षर से प्रवर्तत।

मुझा

हस्ताक्षर

पदाभिधान

(क) जो आवश्यक हो उसे काट दें।

(ख) निष्पादन का समय तारीख और स्थान।

[फाइल सं.० एम०एफ०एन०डब्ल्य०/०२०२]

भास्कर घोष, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF DEFENCE
COAST GUARD DISCIPLINE RULES
NOTIFICATION

New Delhi, the 19th May, 1983

S.R.O. 46E.—In exercise of the powers conferred by Sub-section (1) read with clause (a), (h), (i), (j) and (k) of Sub-section (2) of Section 123 of the Coast Guard Act, 1978 (30 of 1978), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

1. Short title.—(1) These rules may be called the Coast Guard (Discipline) Rules, 1983.

(2) They shall come into force on the date of their publications in the official gazette.

(3) These rules shall apply to all persons subject to the Act.

2. Definitions.—In these rules unless the context otherwise requires,—

(a) "Act" means the Coast Guard Act, 1978 (30 of 1978).

(b) "Appendix" means an Appendix annexed to these rules.

(c) "Court" means a Coast Guard Court.

(d) "Commanding Officer" means the officer or other person in actual command of a ship.

(e) "Section" means a section of the Act.

(f) All other words and expressions used in these rules and defined in the Act shall have the same meaning as in the Act.

3. Reports and Applications.—Any report or application directed by these rules to be made to a Coast Guard authority, shall be made in writing through the proper channel unless the said authority, on account of exigencies of service or otherwise dispenses with the writing.

4. General Superintendence, control and direction.—

(1) The general superintendence, direction and control of the Force shall vest in, and be exercised by, the Central Government and subject thereto and to the provisions of this Act and the rules, the command and supervision of the Coast Guard shall vest in an officer to be appointed by the Central Government as the Director General of the Coast Guard.

(2) The Director-General shall, in the discharge of his duties under this Act, be assisted by such number of Inspectors-General, Deputy

Inspectors-General, Commandants and other officers as may be appointed by the Central Government.

ARREST AND INVESTIGATION

5. Forms of arrest.—(1) Arrest may be either open arrest or close arrest.

(2) An arrest, unless otherwise specified, shall mean an open arrest.

(3) An order imposing arrest may be communicated to the person to be arrested either orally or in writing.

6. Authority to order arrest.—(1) No person subject to the Act shall be arrested on a charge under the Act except under and in accordance with the orders of a superior officer having power of command over him.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-rule (1) any person subject to the Act may be placed under arrest by any superior officer :—

(a) if he commits an offence against such superior officer, or

(b) if he commits an offence in the view of superior officer, or

(c) if he is behaving in a disorderly manner and the said superior officer considers it necessary to place such a person under arrest with a view to stop such disorderly behaviour.

(3) A superior officer effecting arrest under sub-rule (2) shall, as soon as possible, and in any case within twenty four hours of such arrest send a report to the Commanding Officer of the arrested person and in case of the arrest of an officer of and above the rank of Commandant, to his immediate superior officer.

7. Arrest how imposed.—(A) Close Arrest.—
 (1) (a) Close arrest in the case of sailors and enrolled followers shall be imposed by informing the person to be arrested and ordering him to be marched to the place of confinement under an escort of person of similar or superior rank.

(b) Where no such escort is available the person arrested shall be ordered to report himself immediately to the Coast Guard Police Officer or in his absence to the duty officer of his ship or station or other place of confinement.

(2) (a) Close arrest in the case of officers and subordinate officers shall be imposed by placing such officer or subordinate officer under the custody of another person of similar or superior rank and wherever considered necessary such officer, or subordinate officer may be confined under charge of a guard.

(b) The person under arrest shall not leave his quarter or place of confinement without the permission of his Commanding Officer, or the superior officer designated by his Commanding Officer in this behalf.

(B) Open Arrest.—(3) (a) Open arrest shall be imposed by informing the person to be arrested (whether he is an officer, subordinate officer, sailor or any other enrolled person) that he is under open arrest and that he shall confine himself within such limits as may be specified in this behalf by the Commanding Officer or the concerned superior officer effecting such arrest.

(b) The Commanding Officer may, from time to time, vary the limits referred to in clause (a) above.

8. Investigation after arrest.—The charge made against any person subject to the Act taken into custody shall, without any delay, be investigated by the proper authority and as soon thereafter as may be, either proceeding shall be taken for the trial of such person, or he shall be released from custody.

9. Release from arrest during investigation.—(1) Any person arrested under Rule 7 may be released from arrest under the order of the Commanding Officer or an officer superior to the Commanding Officer.

(2) Subject to the provision of rule 10, no person except on the basis of fresh evidence against him to be re-arrested.

10. Release without prejudice to re-arrest.—Pending the completion of the investigation or convening of a Coast Guard Court, any person who was been placed under arrest may without prejudice to re-arrest be released by his Commanding Officer or by any officer superior to his Commanding Officer.

11. Arrest when to be imposed.—(1) Any person charged with :

- (a) an offence under sections 19,20, 21 or 22;
- (b) a civil offence punishable with death or imprisonment for life;
- (c) any other offence under the Act :—
 - (i) if the interest of discipline so require, or
 - (ii) if the person concerned deliberately undermines discipline, or
 - (iii) if the person concerned is of violent disposition, or
 - (iv) if the person concerned is likely to absent himself with a view to avoid trial, or

(v) if the person witnesses or temper evidence
shall be placed under arrest.

(2) where any person arrested shows symptoms of sickness, medical assistance shall be provided for such person.

12. Special Provision in case of arrest of intoxicated persons.—(1) Where any intoxicated person has been arrested, he shall, as far as possible be confined separately and shall be visited by the Duty Officer, or the Duty Subordinate Officer or the person incharge of the guard, once every two hours.

(2) An intoxicated person shall not be taken before a superior officer for investigation of his case until he has become sober.

13. Arrest in case of persons whose trial has been ordered.—(1) Unless the convening authority has otherwise directed, on the commencement of the trial of a person by the Coast Guard Court, the said person shall be placed under arrest and shall remain under arrest during the trial.

(2) Where a sentence lower than detention is passed by a Coast Guard Court, the arrested person shall be released by his Commanding Officer:

Provided that a person who has been sentenced to be dismissed shall not be put on any duty.

14. Delay Reports.—(1) (a) The report on reasons for delay as required under section 60 shall be in the form set out in Appendix I and it shall be sent by the Commanding Officer to the Deputy Inspector General under whom the accused may be serving at intervals of every eight days after the initial report.

(b) A copy of the eighth and subsequent delay reports shall also be sent to the Inspector General whom the accused may be serving.

(2) Where the accused is kep. under arrest for a period exceeding 3 months without being brought to trial, a special report regarding the action taken and the reason for the delay shall be sent by the Commanding Officer to the Director General with a copy each to the Deputy Inspector General and the Inspector General concerned

15. Rights of a person under arrest.—(1) (a) Any person placed under arrest shall, at the time of being placed under arrest, be given in writing by the officer effecting the arrest, particulars of the charges against him.

(b) The said particulars shall be rendered in simple language and also explaiued to the accused.

(c) Notwithstanding anything contained in clause (a), where during the investigation other offences committed by the

accused are discovered, if shall be lawful to charge such person with those offences.

- (2) (a) The Duty Officer or Duty Subordinate Officer shall every day make a visit to the person under arrest and take the orders of the Commanding Officer on any request or representation made by the person under arrest.
- (b) The request or representation made by the person under arrest shall be entered in the form set out in Appendix II.

CHOICE OF JURISDICTION BETWEEN COAST GUARD COURT AND CRIMINAL COURT

16. Trial of Cases either by Coast Guard Court or Criminal Court.—(1) Where an offence is triable by a criminal court and a Coast Guard Court, an officer referred to

- (a) (i) Where the offence is committed by the accused in the course of the performance of his duty as a member of the Coast Guard; or
- (ii) Where the offence is committed in relation to property belonging to the Government or Coast Guard or a person subject to the Act; or
- (iii) Where the offence is committed against a person subject to the Act,

direct that any person subject to the Act, who is alleged to have committed such an offence, be tried by a Court; and

- (b) in any other case, decide whether or not it would be necessary in the interests of discipline to claim for trial by a Coast Guard Court any person subject to the Act who is alleged to have committed such an offence.

(2) In taking a decision to claim an offender for trial by a Coast Guard Court, an officer referred in S. 71 may take into account all or any of the following factors, namely :

- (a) the offender is on active duty or has been warned for active duty and it is felt that he is trying to avoid such duty;
- (b) the offender is a young person undergoing training and the offence is not a serious one and the trial of the offender by a criminal court would materially affect his training;
- (c) the offender can, in view of the nature of the case, be dealt with summarily under the Act.

17. Cases not to be tried by Coast Guard Court.—Without prejudice to the provision of sub-rule (1) of rule 16 an offender may not be claimed for trial by a Coast Guard Court :—

- (a) where the offence is committed by him along with any other person not subject to the Act whose identity is known; or
- (b) where the offence is committed by him while on leave or during absence without leave.

INVESTIGATION AND SUMMARY DISPOSAL

18. Offence Report.—Where it is alleged that a person subject to the Act, has committed an offence punishable thereunder the allegation shall be reduced to writing in the form set out in Appendix III A.

19. Hearing by officer of the Day|Officer of the Watch and the Executive Officer.—(1) (a) In the case of a person subject to the Act, other than an officer, the case may, in the first instance, be heard by the officer of the Day|Officer of the Watch and then by the Executive Officer.

(b) The witnesses shall give evidence in the presence of the accused who shall have the right to cross-examine them.

(c) The accused shall have the right to call witnesses in defence and to make a statement.

(2) After hearing the charge under sub-rule (1), the Officer of the Day|Officer of the Watch or the Executive Officer may :—

- (a) award any punishment which he is empowered to award, or
- (b) dismiss the charge when the charge is not proved, or
- (c) refer the case to the Commanding Officer :

Provided that he shall not dismiss the charge empowered a punishment :

(a) if the case has been reserved by the Commanding Officer for disposal by himself; or

(b) if the accused is under close arrest.

20. Hearing by the Commanding Officer.—The Commanding Officer shall hear the charge against a person subject to the Act and may :—

- (a) award any of the punishments which he is empowered to award, or
- (b) dismiss the charge, or

(c) remand the accused, for preparing a record of evidence or for preparation of an abstract of evidence against him, or

(d) remand him for trial by a Coast Guard Court :

Provided that, in case where the Commanding Officer proposes to award any of the punishments under S. 57 which requires approval, he shall prepare a record of evidence or abstract if evidence and forward the same along with the punishment approval form set out in Appendix III B.

Provided further that he shall dismiss the charge if in his opinion the charge is not proved or may dismiss it if he considers that because of the previous character of the accused and the nature of the charge against him it is not advisable to proceed further with it.

21. Attachment to another unit.—The Commanding Officer shall not deal with any case :—

- (a) Where the offence with which the accused is charged is against the Commanding Officer himself; or
- (b) Where the Commanding Officer is himself a witness in the case against the accused; or
- (c) Where the Commanding Officer is otherwise personally interested in the case and the accused shall be attached to another ship or station for the disposal of the case under the orders of the District Commander or the Regional Commander :

Provided that a Commanding Officer shall not be disqualified from hearing a charge merely because the offence was committed against the property of a Coast Guard Mess or band or institution of which the Commanding Officer is a member or trustee or because the offence is one of disobedience of such Commanding Officer's orders.

22. Charges not to be dealt with summarily.—A charge for an offence under S. 17 or Clause (a) of S. 19 or Clause (a) of S. 23 or S. 49 (other than that for simple hurt or theft) or a charge for abetment of or an attempt to commit, any of these offences shall not be dealt with summarily.

23. Record of Evidence.—(1) The Commanding Officer may either prepare the record of evidence himself or detail another officer to do so.

(2) The witnesses shall be summoned in accordance with Section 79.

(3) The witness give their evidence in the presence of the accused and the accused shall have the right to cross-examine all witness who give evidence against him.

(4) After all the witnesses against the accused have been examined, he shall be cautioned in the following terms :—

"You may make a statement if you wish to do so, you are not bound to make one and whatever you state shall be taken down in writing and may be used in evidence".

(5) The accused may call witnesses in his defence and the officer recording the evidence may ask any question that may be necessary to clarify the evidence given by such witnesses.

(6) All witnesses shall give evidence on oath or affirmation :

Provided that, no oath or affirmation shall be given to the accused nor shall he be cross-examined.

(7) (a) The statement given by witness shall ordinarily be recorded in narrative form and the officer recording the evidence may, at the request of the accused, permit any portion of the evidence to be recorded in the form of question and answer.

(b) The witnesses shall sign their statements after the same have been read over and explained to them.

(8) Where a witness cannot be compelled to attend or is not available or his attendance cannot be procured without an undue expenditure of time or money and after the officer recording the evidence has given a certificate in this behalf, a written statement signed by such witness may be read to the accused and included in the record of evidence.

(9) After the recording of evidence is completed, the officer recording the evidence shall give a certificate in the following form :—

"Certified that the record of evidence ordered by _____ was made in the presence and hearing of the accused and the provisions of rule 23 have been complied with."

24. Abstract of evidence.—(1) An abstract of evidence shall be prepared either by the Commanding Officer or an officer detailed by him

(2) The abstract of evidence shall include :—

(a) (i) Signed statements of witnesses wherever available or a precis thereof;

- (ii) Copies of all documents intended to be produced at the trial;
- (iii) A precis of the evidence where signed statements of any witnesses are not available.

(3) A copy of the abstract of evidence shall be given, by the officer making the same to the accused and the accused shall be given an opportunity to make a statement if he so desires after he has been cautioned in the manner laid down in sub rule (3) of rule 23:

Provided that the accused shall be given such time as may be reasonable in the circumstances but in no case less than twenty four hours after receiving the abstract of evidence to make his statement.

25. Investigation of cases by Police.—Where the Commanding Officer considers it necessary so to do, he may lodge a report with the police for investigation of any case.

26. Disposal of case by Commanding Officer after Record or Abstract of evidence.—(1) Where an officer has been detailed to prepare the record of evidence or to make an abstract thereof he shall forward the same to the Commanding Officer.

(2) The Commanding Officer may, after going through the record or abstract of evidence;

- (a) dismiss the charge, or
- (b) rehear the charge and award one of the summary punishments, or
- (c) apply to the Convening Authority to convene a Coast Guard Court for the trial of the accused.

27. Application for trial by a Coast Guard Court.—An application for trial by a Coast Guard Court shall be made by the Commanding Officer in the form set out in Appendix IV and shall be accompanied by five copies of the record or abstract of evidence and charge sheet and such other documents as are mentioned in that application form.

28. Summary Punishments.—Punishments enumerated in section 57 may be awarded summarily as follows: —

- (a) An order for the dismissal of a person from Coast Guard Service whether accompanied by other punishments or not shall be made only with the approval of the Director General.
- (b) Punishments specified in clause (a), (c) and d) of section 57 shall not have

- effect unless the punishment approval form is approval by the Inspector General or Deputy Inspector General as the case may be, under whom the offender is serving;
- (c) the punishment approval form for award of punishments of imprisonment, dismissal, detention and reduction to the ranks or to a lower rank shall be accompanied by a record or abstract of evidence;
- (d) If an officer having power to approve a punishment may consider for any reason that the punishment proposed is illegal, unjust, or excessive he may cancel, vary or remit the punishment within the limits of the powers of punishment of a Commanding Officer and the punishment so altered shall be the punishment awarded.
- (e) At any time before the sentence is announced, the Commanding Officer may modify or withdraw the sentence if on further consideration it appears to him desirable to do so provided that if the punishment approval form has been approved by the appropriate authority, the sentence shall not be modified or withdrawn without the consent of that authority;
- (f) after signature and approval where necessary, the punishment approval form shall be dated and formally read forthwith to the offender by the Commanding Officer;
- (g) the date of the punishment approval form and the date of reading the offence report shall be the same;
- (h) When an offender whose case has been fully investigated has been sent to a hospital the punishment approval form shall be formally read to him in the hospital unless the Medical Officer certifies that the offender is medically unfit to have the punishment approval form read to him in which case the formal reading may be carried out by the Commanding Officer in this office in the absence of the offender and such formal reading of the punishment approval form shall have the same effect as if it had been read to the offender;
- (i) the fact of the punishment approval form having formally been read in the absence of the offender shall be recorded on the punishment approval

form and shall be intimated to the offender as soon as he is in a fit state to receive such intimation.

29. Reduction to the ranks or to a lower rank in the case of sailors.—A sailor may be reduced to any rank or to a lower rank provided that no sailor shall be reduced to rank :—

- (a) below the rank of Navik or Yantrik, as the case may be;
- (b) below, either actually or relatively the rank in which he first entered or re-entered if service in the later event was not continuous and re-entry was under a fresh engagement.

30. Fine in respect of civil offences.—A fine not exceeding rupees two hundred and fifty may be imposed summarily when a subordinate officer, sailor or other enrolled person is found guilty of a civil offence.

31. Mulcts of Pay and allowances for improper absence.—Every subordinate officer, sailor or other enrolled person who is guilty of absence without, leave or improperly leaving his ship or place of duty shall be punished with mulcts for pay and stoppage of leave in accordance with the following scale, namely :—

- (a) Where the period of absence does not exceed three hours, one day's pay and one day's leave;
- (b) Where the period of absence exceeds three hours, but does not exceed thirty six hours, one day's pay and one day's leave for every three hours of absence or part thereof;
- (c) where the period of absence exceeds thirty six hours, one day's pay and one day's leave for every three hours upto thirty six hours and one day's pay and one day's leave for each subsequent period of six hours or part of six hours, so, however, that the stoppage of leave, shall in no case exceed sixty days;
- (d) if the period of absence is trivial or if there are extenuating circumstances and the period of improper absence does not exceed thirty six hours, the Commanding Officer may at his discretion reduce the mulcts by such an amount as he may consider reasonable, the stoppage of leave being reduced to a corresponding extent;
- (e) the provision of sub-rule (b) shall apply to leave breaking upto thirty six

hours dealt with in conjunction with other offences;

- (f) if the period of absence exceeds thirty six hours or the offence is aggravated or repeated, any other punishment permitted by these rules may be awarded according to the degree of offence in addition to the mulcts of pay and stoppage of leave on the scale mentioned in sub-rule (a) and if there are mitigating circumstances justifying exceptional treatment the Commanding Officer may at his discretion reduce the mulcts, provided that the actual mulcts (i.e. excluding detention) shall not be reduced to less than one day's pay for each day's absence and where the stoppage of leave according to the said scale would amount to thirty days or less it may also be correspondingly reduced;
- (g) if the number of days mulcts in accordance with sub-rule (1) or if the period of sentence to which a leave breaker is confined by reason of the punishment of detention plus the number of days mulcts, would amount to a total of more than sixty days, any excess mulcts shall be remitted provided that in no case shall the actual mulcts (i.e. excluding the punishment of detention) be reduced to less than one day's pay for such day's absence.

32. General Provision regarding mulcts.—(1) For the purpose of these rules, a day's pay shall include full pay and allowances but shall not include the washing allowances, extra pay, special pay or kindred pay.

(2) The scale of mulcts shall not apply to in case of persons charged with desertion.

33. Limits of punishment under Section 26—
(1) The maximum summary punishment for leave breaking that should as a rule be awarded shall be detention and except for an aggravated offence such punishment shall not exceed thirty days.

(2) The act of not returning to duty at the time ordered shall constitute the main offence against discipline and the aggravation of the offence shall depend upon the time for which a person remains absent which shall be dealt with on its merits in each case.

(3) Leave breaking offences shall be recorded on the offence report as follows:—

“Did remain absent over leave..... hours minutes, namely from to”

34. Application of Rules 32 and 33—The provisions of rules 32 and 33 shall apply to breaking out of ship breaking away from a landing party and other cases of improper absence other than desertion, except that any punishment applicable to the offence may be awarded in addition to mulcts of pay and stoppage of leave and it shall not be necessary to limit the period of detention for offences of this description in ordinary cases.

35. Calculation of period absence—(1) The period of improper absence included in the charge shall be computed from the time when leave expires (or the time of breaking out) until the time of return to the ship or place of duty.

(2) When a person surrenders or is apprehended as an absentee away from the locality in which his leave expires, the Commanding Officer may, having regard to the circumstances, consider the absence as having terminated at the time of such surrender or apprehension, but if a lengthy journey is involved in returning to the place where leave expired, the time involved in such journey may be included in computing the period of absence.

(3) When an absentee is arrested by the civil authority handed on another charge and is subsequently handed over to the Coast Guard authorities, his absence without leave shall be regarded as ceasing from the time of his arrest by the civil authority.

36. Simple leave-breaking—Unless an offence of leave breaking is a repeated or aggravated offence, the punishment for the offence of leave-breaking involving improper absence of not more than thirty six hours shall be confined to mulcts of pay and stoppage of leave, but if the offence was the sequel to an offence of improperly leaving a ship or place of duty, other punishments may be awarded in addition.

tances.

37. Aggravated offence of leave breaking—(1) For the purpose of rules 31 to 36 an offence of leave-breaking shall be deemed to be aggravated :

- (a) if the absence exceeds thirty six hours;
- (b) if the absentee misses his ship or transfer;
- (c) if, when leave was granted, a warning was given that the ship was under sailing orders;
- (d) if the offender was undergoing any form of punishment at the time;
- (e) if there are any other serious circumstances.

(2) The charge in a case of aggravated leave-breaking may refer to the offence as aggravated, but the charge shall not contain anything which directly or indirectly refers to a previous offence.

38. Repeated offence—A repeated offence of leave-breaking is one committed in the same ship or station within six months of a previous leave-breaking offence.

39. Drunkenness.—(1) A mulct of one day's pay shall be inflicted for all offences of drunkenness in a ship or while absent on duty, or on returning from shore, whether such return is voluntary or otherwise and a similar mulct shall be inflicted upon persons who are drunk when received in the Coast Guard or other custody, whether from leave or not, and, if from leave, whether their leave has expired or not, unless the offender has already been dealt with by the civil authority.

(2) For the offence of drunkenness in a ship or while absent on duty punishment by way of imprisonment or detention may be awarded at the discretion of the Commanding Officer.

(3) In awarding punishment for drunkenness on leave, the Commanding Officer shall take into consideration the circumstances of each case as regards the disgrace or discredit brought to the Coast Guard service.

40. Deprivation of good conduct badges—(1) A person who is sentenced to imprisonment or detention or a sailor reduced to any ranks or to a lower rank shall be deprived of any good conduct badge he may hold.

(2) One badge lost may be regained by six months "very good conduct", and additional badges by further periods of six months reckoned in each case from the date of preceding restoration.

(3) If, however, a person has been sentenced to deprivation a second time within three years of actual service, the qualification for restoration shall be twelve months for the first restoration and six months for each subsequent restoration.

(4) Time which does not count for purposes of award shall not be reckoned towards restoration of badges.

(5) Restoration shall be made when they become due whether the person prefers his claim or not.

41. Reprimand—The punishment of reprimand shall be awarded only to Uttam Naviks, Uttam Yantriks and above.

42. Extra work and drill—Naviks, Yantriks and enrolled persons may be awarded the punishment of extra work and drill upto fourteen days. When so punished they shall be subject to the following routines :—

- (a) leave to be stopped;
- (b) to do extra work or drill during non-working hours i.e. (from 1700 to 1830) for one and half hours;
- (c) to be mustered frequently;
- (d) when a person is under punishment of extra work and drill, he shall be allowed to leave the ship or station only on duty though he may be allowed to proceed on long leave at the discretion of the Commanding Officer,
- (e) the punishment shall be suspended on Sundays and holidays, but these days shall count as part of the period for which any sentence is awarded.

43. Stoppage of leave—(1) When stoppage of leave is awarded for leave breaking, it shall not exceed the scale laid down except for aggravated or repeated offence.

(2) Stoppage of leave may also be awarded in appropriate cases for any other offence either as the only punishment or with another punishment.

(3) While under stoppage of leave, a person shall not be allowed to leave the ship or station except on duty.

44. Admonition.—When a person is found guilty of an offence which of itself or in view of the mitigating circumstances is not considered to deserve any more serious punishment, he shall be awarded the punishment of admonition.

ON CHARGES AND MATTERS ANTECEDENT TO TRIAL BY A COAST COURT

45. Charge-sheet—(1) A charge-sheet shall contain the whole of the issue or issues to be tried at one time and may contain more than one charge, if the charges are founded on the same facts or form part of series of offences of same or similar character :

Provided that a charge under section 25, section 26 and section 41 may be included in any charge-sheet, notwithstanding that other charges in that charge-sheet are not founded on the same facts or do not form part of series of offences of the same or similar character.

(2) Every charge-sheet shall in its lay out follow the appropriate specimen set out in Appendix V to these rules.

46. Charges.—(1) There shall be a separate charge for each offence.

(2) (a) If a single act or series of acts is of such a nature that it is doubtful which of several offences the facts which can be proved will constitute, the accused may be charged with having committed all or any of such offences, and any number of such charges may be tried at once or he may be charged in the alternative with having committed some one of the said offence.

(b) The charge for the more serious offences shall precede the one for the less serious offence.

(3) Each charge consist of two parts, namely—

- (a) Statement of the offence, and
- (b) particulars of the offence.

(4) The offence shall be stated, if not a civil offence, as nearly as practicable, in the words of the Act, and if a civil offence, in such words as would sufficiently describe that offence.

5. (a) The particulars shall state the time and place of the alleged offence and the person (if any) against whom, or the thing (if any) in respect of which, it was committed and these should be sufficient to give the accused notice of the matter with which he is charged.

(b) In case such particulars are not sufficient to give the accused notice of the matter with which he is charged, the charge shall also contain such particulars of the manner in which the offence was committed as will be sufficient for that purpose.

47. Joint Charges—(1) Any number of accused may be charged jointly and tried together for an offence averred to have been committed jointly by them.

(2) Any number of accused though not charged jointly may also be together for an offence averred to have been committed by one or more of them and abetted by other or others.

(3) Where the accused are so charged under sub-rule (1) or sub-rule (2) any one or more of them may be charged with and tried for any other offence with which they could have been charged under sub-rule (1) of rule 45.

48. Validity of charge-sheet—A charge-sheet shall not be invalid merely by reason of the fact that it contains any mistake in the name or description of the accused, and in the construction

of a charge-sheet these shall be resumed in favour of supporting every proposition which may reasonably be presumed to be impliedly included, though not expressed therein, and the statement of the offence and the particulars of the offence shall be read and construed together.

49. Amendment of the charge by the Coast Guard Court—(1) At any time during the trial by a Coast Guard Court if it appears to the court that there is in the charge-sheet;

- (a) a mistake in the name or description of the accused, or
- (b) a mistake, which is attributable to a clerical error or omission, the Court may amend the charge-sheet so as to correct the mistake.

(2) If at any time during a trial it appears to the Coast Guard Court before it closes to deliberate on its findings that it is desirable in the interests of justice to make any addition to, omission from, or alteration in a charge which cannot be made under sub-rule (1), it may, if such addition, omission, or alteration can be made without unfairness to the accused and with the concurrence of the Law Officer to amend the charge.

50. Amendment to charge by Convening Authority—When a Coast Guard Court reports to the Convening Authority under rule 64, the Convening Authority may amend the charge in respect of which, the Court has reported to such authority by making any addition to, omission from or alteration in the charge which, in the opinion of aforesaid authority is desirable in the interests of justice and which can be made without unfairness to the accused.

CONVENING OF COAST GUARD COURTS

51. Action by the Convening Authority on receiving an application for convening a Coast Guard Court—As soon as the Convening Authority receives an application for convening a Coast Guard Court it shall scrutinise the charge and the evidence against the accused where necessary in consultation with the Chief Law Officer or a Law Officer and

- (i) shall direct the Commanding Officer to dismiss the charge where the evidence against the accused is insufficient and further evidence is not likely to be available and may direct him to do so if considered inadvisable to proceed with the trial; or
- (ii) may return the case to the Commanding Officer for being dealt with summarily

if it is considered that the same can be adequately dealt with, or

- (iii) may return the case for recording further evidence if it is considered that the evidence already recorded is insufficient and further evidence may be available.

52. Disqualification of officers for serving on Coast Guard Court—An officer shall be disqualified from serving on a Coast Guard Court if due,—

- (a) is an officer who convened the Coast Guard Court, or
- (b) is the prosecutor or a witness for the prosecution, or
- (c) has taken any part in the investigation of the case, which would have necessitated in applying his mind to any part of the evidence or to the facts of the case, or
- (d) is the Commanding Officer of the accused, or
- (e) has a personal interest in the case.

53. Composition of the Coast Guard Court—

(1) A prosecutor shall not be qualified to sit on the Coast Guard Court for the trial of the person he prosecutes.

(2) The officer ordering the Coast Guard Court, the officer who was the Commanding Officer of the ship to which the accused belonged at the time of the commission of the alleged offence and the officer investigating the offence shall not be qualified to sit on a Coast Guard Court for the trial of such accused.

(3) Except as otherwise provided in these rules, officers of the Coast Guard shall be eligible to sit as members of a Coast Guard Court irrespective of the branch of the Coast Guard service to which they belong :

Provided that—

(a) the majority of the members of the Coast Guard Court, including the presiding officer, shall be officers of the General Duty branch of the Coast Guard service, and

(b) at trials for offences under sections 27, 28, 29, 30 and 31, officers other than officers of the General Duty Branch of the Coast Guard shall not be eligible to sit.

(4) The Presiding Officer of a Coast Guard Court shall be the senior member.

(5) No Coast Guard Court for the trial of a Deputy Inspector General shall be duly constituted unless the Presiding officer is a Deputy Inspector General or of a higher rank and the other officers comprising the court are Commandants or officers of higher rank(s).

(6) No Coast Guard Court for the trial of a Commandant shall be duly constituted unless the Presiding Officer is a Commandant or of a higher rank and two other members are Commandants or officers of higher rank(s).

(7) No Coast Guard Court for a person below the rank of Commandant shall be duly constituted unless the Presiding Officer is a substantive or acting Commandant or of higher rank.

(8) No Commandant or Deputy Commandant or Assistant Commandant shall be required to sit as a member of a Coast Guard Court when four officers of higher rank and junior to the Presiding Officer can be assembled at the place where the Coast Guard Court is to be held, but the regularity or validity of any Coast Guard Court or of the proceedings thereof shall not be affected by any Commandant, Deputy Commandant or Assistant Commandant being required to sit or sitting thereon under any circumstances and when any Commandant, Deputy Commandant or Assistant Commandant sits on any Coast Guard Court, the members of it shall not be less than five.

(9) No Coast Guard Court shall be deemed to have constituted unless attended by the Law Officer designated for that purpose by the Chief Law Officer.

54. Duties of convening officer when convening Coast Guard Courts—When an officer convene a Coast Guard Court he shall—

- (a) issue a convening order in the form set out in Appendix VI;
- (b) direct upon what charges the accused is to be tried and ensure that the accused has been remanded for trial by a Coast Guard Court upon these charges, by his Commanding Officer;
- (c) if he is of the opinion that charges shall be put in separate charge sheets, so direct and shall also direct the order in which they are to be tried;
- (d) direct, if there is more than one accused, whether the accused are to be tried jointly or separately;
- (e) appoint members of the court and any waiting members;

(f) appoint an officer, subject to the Act or a counsel assisted by such an officer to prosecute or direct his Commanding Officer to appoint an officer subject to the Act, to prosecute :

Provided that the Convening Authority may appoint more than one such officer to prosecute if he thinks fit.

- (g) appoint an interpreter wherever necessary;
- (h) send to the Presiding Officer the charge-sheet the convening order;
- (i) to appoint an officer to perform the duties mentioned in rule 118 and such other duties as may be directed by the Presiding Officer or the Law Officer to perform for the due transaction of the administrative business of the Coast Guard Court;
- (j) forward to the Law Officer, each member of the Coast Guard Court and to each waiting member thereof a copy of the charge-sheet and convening order;
- (k) forward to the prosecutor copies of the charge-sheet and convening order and the original record or abstract of evidence together with an unexpurgated copy thereof showing the passage (if any);
- (l) ensure that the Commanding Officer has summoned all prosecution witnesses and defence witnesses as the accused may have requested to, be summoned under rule 56.

55. Preparation of defence by the accused—(1) An accused, who has been remanded for trial, shall be afforded proper opportunity for preparing his defence and shall be allowed proper facilities with his defending officer or Council and with his witnesses.

(2) A defending officer shall be appointed to defend an accused who has been remanded for trial unless the accused states in writing that he does not wish an appointment to be made.

(3) If the prosecution is to be undertaken by a legally qualified officer or by a Counsel the accused shall be notified of the fact in sufficient time to enable him if he so desires, to make arrangements for a legally qualified officer or a Counsel to defend him.

(4) As soon as practicable after a decision has been taken to place the accused on trial and in any case not less than seven days before his trial, he shall be given—

- (a) a copy of the charge-sheet;

- (b) an unexpurgated copy of the record or abstract of evidence showing the passages (if any) which have been expurgated;
- (c) notice of any additional evidence which the prosecution intends to adduce and
- (d) if the accused so requires, a list of the ranks, names and ships of the members who are to form the Coast Guard Court and of any waiting member.

(5) When an accused is given a copy of the charge-sheet and of the record or abstract of evidence in accordance with this rule he shall—

- (a) have the charge explained to him, and
- (b) be informed that upon his making a written request to his Commanding Officer not less than twenty four hours before his trial requiring the attendance of a witness (other than the witness for the prosecution) whom he desires to call in his defence (such witness to be named by him), reasonable steps will be taken in accordance with these rules to procure the attendance of any such witness at his trial.

56. Summoning of defence witnesses—(1) Subject to provisions of sub-rule (2) the Commanding officer shall be request in this behalf by the accused, summon such witnesses as are specified by the accused.

(2) Where the Commanding Officer is satisfied that the evidence to be given by any witness is not likely to be of material assistance at the trial, he may refuse to summon such witness.

(3) Where the Commanding Officer has refused to summon the witnesses under sub rule (2) the accused may make an application to the Coast Guard Court for the summoning of such witness and the Coast Guard Court may, if it considers it to be expedient in the interest of justice, order the summoning of such witness and, if necessary adjourn the proceedings for the attendance of such witness.

PROCEDURE FOR COAST GUARD COURTS

57. Assembly and swearing of Coast Guard Courts—Upon assembling the Coast Guard Court shall before beginning the trial, satisfy in closed court—

- (a) that the court has been convened in accordance with the act and these rules;
- (b) that the court consists of not less than the minimum number of officers specified in the Act;
- (c) that the members are of the required rank;

- (d) that members have been duly appointed and are not disqualified under the Act;
- (e) that the Law Officer has been duly appointed;
- (f) that the accused appears from the charge-sheet, to be subject to the Act and to be subject to the jurisdiction of the court; and
- (g) that such charge is correct in law and framed in accordance with these rules.

(2)(a) Where a vacancy occurs by reason of disqualification of a member of the court under the Act or being absent when the court assembles, the Presiding Officer may appoint a duly qualified waiting member to fill that vacancy.

(b) The Presiding Officer may, if the interests of justice so require, substitute a duly qualified waiting member for a member appointed by the Convening Authority.

(3) If the court is not satisfied on any of the matters mentioned in sub-rule (1) and is not competent to rectify such matter itself under the Act or these rules, it shall, before commencing the trial, report thereon to the Convening Authority.

(4) When the court has complied with these rules and is ready to proceed with the trial, the Presiding Officer shall open the court and the trial shall begin.

58. Commencement of trial—(1) As soon as the Court has been opended, the accused shall be brought before it and the prosecution, the person or persons, if any defending the accused and the audience admitted.

(2) The order convening the court and the names of the officers appointed to try the accused shall be read over to the accused by the Law Officer and the accused shall be given an opportunity to object to any of the officers in accordance with section 74.

(3) When a court is to try more than one accused whether separately or jointly, each accused shall be given an opportunity to object to any officer on the court in accordance with the foregoing sub-rule and shall be asked separately whether he has any such objection.

(4) An accused shall state the names of all the officers to whom he objects before any objection is disposed of.

(5) If more than one officer is objected to, the objection to each officer shall be disposed of separately and the objection to the lowest in rank shall be disposed of first.

(6) An accused may make a statement and call any person to make a statement in support of his objection.

(7) An officer to whom the accused has objected may state in open court anything relevant to the objection of the accused whether in support or in rebuttal thereof.

(8) An objection to an officer shall be considered in closed court by all the other officers on the court and the officer objected to shall not be present at that time.

(9) When an officer objected to retires and there is a duly qualified waiting member in attendance, the presiding officer shall immediately appoint him to take the place of the officer who has retired.

(10) The court shall satisfy itself that a waiting member who takes the place of a member of the court is of the required rank and not disqualified under the Act and shall give the accused an opportunity to object to him and shall deal with any such objection in accordance with the Act and these rules.

(11) If as a result of the allowance of an objection to a member there are insufficient officers available to form a court in compliance with the Act; the court shall report to the Convening Authority without proceedings further with the trial and the Convening Authority may either appoint an other officer as a member to fill the vacancy or convene a fresh court to try the accused.

59. Swearing or affirming of members—As soon as the Court is constituted with the proper number of officers who are not objected to or objections in respect of whom have been over-ruled, on oath or affirmation shall be administered to the Presiding Officer and every member in the order of their seniority by the Law Officer in the presence of the accused in one of the following forms or in such other form to the same purport as the court ascertains to be according to the religion of the concerned officer or otherwise binding on his conscience.

FORM OF OATH

"I _____ swear by Almighty God, that I will well and truly try the accused (or accused person) before the court, according to the evidence, and that I will, duly administer justice according to the Coast Guard Act, 1978, without partiality, favour or affection; and I do further solemnly, sincerely and truly declare and affirm that I will not, on any account, at any time, whatsoever, discover, the vote or opinion of any particular member of the Court unless required to give evidence thereof by a court of law."

FORM OF AFFIRMATION

"I _____ do solemnly, sincerely and truly declare and affirm, that I will well and truly try the accused (or accused persons) before the court, according to the evidence, and that I will duly administer justice according to the Coast Guard Act, 1978 without partiality, favour or affection; and I do further solemnly, sincerely and truly declare and affirm that I will not on any account at any time whatsoever, disclose or discover, the vote or opinion of any particular member of this court unless required to give evidence thereof by court of law".

60. Swearing or affirmation of Law Officer and other officers.—After the members of the Court are all sworn or have made affirmation, an oath or affirmation shall be administered to the following persons or such of them as are present at the Court in such of the following forms as shall be appropriate, or in such other form to the same purport as the Court ascertains to be according to the religion or otherwise binding on the conscience of the person to be sworn or affirmed.

LAW OFFICER

FORM OF OATH

I _____ swear by Almighty God that I will, to the best of my ability, carry out the duties of Law Officer, in accordance with the Coast Guard Act, 1978 and the rules made thereunder without partiality, favour or affection, and I do further swear that I will not, on any account at any time whatsoever, disclose or discover the vote or opinion of any matter of any particular member of this Court, unless required to give evidence thereof by a Court of Law."

FORM OF AFFIRMATION

I _____ do hereby, solemnly, sincerely and truly declare and affirm that I will, to the best of my ability, carry out the duties of Law Officer in accordance with the Coast Guard Act, 1978 and the rules made thereunder without partiality, favour or affection, and I do further solemnly, sincerely, and truly declare and affirm, that I will not, on any account, at any time, whatsoever, disclose or discover the vote or opinion, on any matter, of any particular member of this Court, unless, required to give evidence thereof by a court of law.

(B) OFFICER ATTENDING FOR THE PURPOSE OF INSTRUCTION

FORM OF OATH

I _____ swear by Almighty God that I will not on any account; at any time whatsoever disclose or discover the vote or opinion of any particular member of this Court unless required to give evidence thereof by a court of law.

FORM OF AFFIRMATION

I, _____ do solemnly, sincerely and truly, declare and affirm that I will not on any account, at any time whatsoever, disclose or discover the vote or opinion of any particular member of this Court unless required to give evidence thereof by a court of law.

(C) SHORTHAND WRITER

FORM OF OATH

I, _____ swear by Almighty God that I will truly take down to the best of my power, the evidence to be given before this Court and such other matters as I may be required to take down and will, when required, deliver to the Court a true transcript of the same.

FORM OF AFFIRMATION

I, _____ do solemnly, sincerely and truly, declare and affirm, that I will truly take down to the best of my power the evidence to be given before this Court and such other matters as I may be required to take down and will, when required, deliver to the Court a true transcript of the same.

(D) INTERPRETER

FORM OF OATH

I, _____ swear by Almighty God that I will faithfully, interpret and translate, as I shall be required to do, touching the matter before this Court.

FORM OF AFFIRMATION

I, _____ do solemnly, sincerely and truly declare and affirm that I will faithfully interpret and translate, as I shall be required to do, touching the matter before this Court.

61. Objection to interpreter or shorthand writer—A person shall not be sworn or affirmed as an interpreter or shorthand writer, if he is objected to by the accused unless the court after hearing the accused and the prosecutor disallows such objection as being unreasonable.

62. Arraignment—(1) When the court and the Law Officer have been sworn, the charge shall be read to the accused and he shall be asked whether he pleads guilty or not guilty to the charge or charges.

(2) If there is more than one charge against the accused he shall be required to plead separately to each charge.

(3) If there is more than one charge against the accused before the court, the court shall proceed with the charges in the first of such charge-sheets

and shall announce its finding thereon and if the accused has pleaded guilty comply with rule 69 before it arraigns him upon the charges in any subsequent charge-sheet.

63. Plea to jurisdiction—(1) The accused, before pleading to the charge may offer a plea regarding the jurisdiction of the court, and in such case,

(a) the accused may adduce evidence in support of the plea and the prosecutor may adduce evidence in answer thereto; and

(b) the prosecutor may address the court in answer to the plea and the accused may reply to the prosecutor's address.

(2) If the court allows the plea it shall adjourn and report to the Convening Authority.

(3) When the court reports to the Convening Authority under this rule, the Convening Authority shall dissolve the court.

64. Objection to the charges—(1) An accused before pleading to a charge may object to it on grounds that it is not correct in law or is not framed in accordance with these rules and if he does so, the prosecutor may address the court in answer to the objection and the accused may reply to the prosecutor's address.

(2) If the court upholds the objection, it shall either amend the charge if permissible under rule 49 or adjourn and report to the Convening Authority;

Provided that if there is another charge sheet before the court, the court may, before, adjourning under this rule, proceed with the trial of such other charge or other charge-sheet.

(3) When the court reports to the Convening Authority under this rule, the Convening Authority shall if he approves the decision of the court to allow the objection;

(i) dissolve the court; or

(ii) where there is another charge or another charge-sheet before the court to which the objection does not relate and which the court has not tried, direct the court to proceed with the trial of such other charge or charge-sheet only; or

(iii) amend the charge to which the objection relates if permissible under rule 50 and direct the court to try it as amended.

65. Plea in bar of trial—(1) An accused before pleading to a charge may offer a plea that the trial is barred under section 51 or section 68. If he does so;

- (a) the accused may adduce evidence in support of the plea and the prosecutor may adduce evidence in answer thereto, and
- (b) the prosecutor may address the court in answer to the plea and the accused may reply to the prosecutor's address.

(2) If the court allows the plea, it shall adjourn and report to the Convening Authority—

Provided that if there is another charge or another charge-sheet before the court, the court may, before adjourning under this rule, proceed with the trial of such other charge or other charge-sheet.

(3) When a court reports to the Convening Authority under this rule, the Convening Authority shall;

- (i) dissolve the court; or
- (ii) where there is another charge or another charge-sheet before the court to which the plea does not relate and which the court has not tried, direct the court to proceed with the trial of such other charge or charge-sheet only.

66. Application for separate trial.—(1) Where two or more accused are charged jointly, any one of the accused may, before pleading to the charge, apply to the court to be tried separately on the ground that he would be prejudiced in his defence if he was not tried separately.

(2) Where the accused makes such an application, the prosecutor may address the court in answer thereto and the accused may reply to the prosecutor's address.

(3) Where the court is of the opinion that the interests of justice so require, it shall allow the application and try separately the accused who made it.

67. Application for trial on separate charge-sheet.—(1) When a charge-sheet contains more than one charge, the accused may, before pleading to the charges apply to the court to be tried separately on any charge in the charge sheet on the ground that he would be prejudiced in his defence if he were not tried separately on that charge.

(2) Where the accused makes such an application, the prosecutor may address the Court in answer thereto and the accused may reply to the prosecutor's address.

(3) Where the Court is of the opinion that interests of justice so require, it shall allow the application and try the accused separately on the charge to which it relates as if that charge had been inserted in a separate charge-sheet.

68. Pleading to the Charge.—(1) After any plea under rules 63 and 65 have been dealt with, the accused shall be required subject to sub-rule (2) to plead either guilty or not guilty to each charge on which he is arraigned.

(2) Where a court is empowered by Section 83 to find an accused guilty of an offence other than that charged or guilty of committing the offence, in circumstances involving a less degree of punishment or where it could after hearing the evidence, make a special finding of guilty subject to exception or variation in accordance with rules the accused may plead guilty to such other offence, or to the offence charged as having been committed in the circumstances involving a less degree of punishment or to the offence charged subject to such exception or variations.

69. Acceptance of plea of guilty.—(1) Where an accused pleads guilty to a charge under either sub-rule (1) or sub-rule (2) of rule 68 the Law Officer shall, before the court decides to accept the plea, explain to the accused the nature of the charge and the general effect of his plea and in particular the difference in procedure when an accused pleads guilty and when an accused pleads not guilty.

(2) A court shall not accept a plea of guilty under either sub-rule (1) or sub-rule (2) of rule 68, if—

- (a) the court is not satisfied that the accused understands the nature of the charge or the effect of his plea; or
 - (b) the presiding officer having regard to all the circumstances, considers that the accused shall plead not guilty; or
 - (c) the accused is liable, if convicted, to be sentenced to death;
- (3) (a) In the case of a plea of guilty under rule 70 court shall not accept the plea unless the Convening Authority concurs and it is satisfied of the justice of such course;
- (b) The concurrence of the Covening Authority may be signified by the prosecutor.

(4) When a plea of guilty under either sub-rule (1) or sub-rule (2) or rule 68, has been accepted it shall record a finding of guilty in respect thereof.

70. Plea of alternative charge.—(1) When an accused pleads guilty to the first of two or more alternative charges, the court, if it accepts the accused's plea of guilty, shall record a finding of guilty in respect of the first charge and the prosecutor shall withdraw any alternative charge before the accused is arraigned on it.

(2) When an accused pleads guilty to one of two or more charges which are laid in the alternative other than the first of such charges, the court may :

- (a) Proceed as if the accused had pleaded not guilty to all the charges ; or
- (i) with concurrence of the Convening Authority (which may be signified by the prosecutor) record a finding of guilty on the charge to which the accused has pleaded guilty and a finding of not guilty on any alternative charge which is placed before it in the charge-sheet ;
- (ii) where the court records such findings the prosecutor shall before the accused is arraigned on it withdraw any charge which is alternative to the charge of which the court has found the accused guilty and which is placed after it in the charge-sheet.

71. Order of trial in the case of plea of guilty and not guilty.—(1) After the court has recorded a finding of guilty, if there is no other charge in the same charge-sheet to which the accused has pleaded not guilty to a charge in that charge-sheet, it shall proceed with the trial as directed by rule 72.

(2) Where there is another charge in the charge-sheet to which the accused has pleaded not guilty or there is another accused who has pleaded not guilty to a charge in that charge-sheet, the court shall not comply with rule 70 until after it has dealt with such other charge or tried such accused and has announced and recorded its finding in respect thereof.

72. Procedure on plea of guilty—(1) When the court has recorded a finding of a guilty in respect of a charge to which an accused had pleaded guilty the prosecutor shall read the record or abstract of evidence to the court or inform the court of the facts contained therein.

(2) Where there is no record or abstract of evidence the court shall record in accordance with these rules sufficient evidence to enable it to determine the sentence.

(3) After sub-rule (1) and (2) have been complied with, the accused may —

- (a) adduce evidence of character and in mitigation of punishment,
- (b) address the court in mitigation of punishment.

(4) After sub-rule (3) has been complied with, the court shall proceed as directed in rule 95.

/3. Change of plea.—(1) An accused who has pleaded not guilty may at any time before the court closes to deliberate on its finding withdraw his plea of not guilty and substitute a plea of guilty (including a plea of guilty under rule 70) and in such a case the court shall, if it is satisfied that it can accept the accused's changed plea under these rules, record a finding in accordance with accused's changed plea and so far as is necessary proceed as directed by rule 72.

(2) Where at any time during the trial it appears to the court that an accused who has pleaded guilty does not understand the effect of his plea or the nature of the charge the court shall enter a plea of not guilty and proceed with the trial accordingly.

(3) When the court records a plea of not guilty in respect of any charge under sub-rule (2), it shall, if there was a charge laid in the alternative thereto which the prosecutor withdrew under rule 70 reinstate such alternative charge, arraign the accused thereon and proceed with the trial as if it had never been withdrawn.

74. Procedure on plea of not guilty.—After a plea of not guilty to any charge has been recorded,

- (a) the court shall ask the accused whether he wishes to apply for an adjournment on the ground that any of these rules relating to procedure before trial have not been complied with and that he has been prejudiced thereby or on the ground that he has not had sufficient opportunity for preparing his defence ;
- (b) Where the accused applies for an adjournment,
 - (i) the accused may adduce evidence in support of his application and the prosecutor may adduce evidence in answer thereto ; and
 - (ii) the prosecutor may address the court in answer to the application and the accused may reply to the prosecutor's address ;
 - (c) the court may grant an adjournment if it thinks the interests of justice so require.

75. Opening address.—(1) The prosecutor may if he so desire and shall if required by the court make an opening address explaining the charge and the nature and general effect of the evidence which he proposes to adduce ;

(2) The witness for the prosecution shall then be called and give their evidence.

76. Additional witnesses.—Where the prosecutor intends to adduce evidence which is not contained in any record or abstract of evidence given to the accused, notice of such intention together with the particulars of the evidence shall, when practicable, be given to the accused within a reasonable time before the evidence is adduced. If such evidence is adduced without such notice or particulars having been given, the court may if the accused so desires either adjourn after receiving the evidence or allow any cross examination arising out of that evidence to be postponed, and the court shall inform the accused of his right to apply for such an adjournment.

77. Dropping witness.—The prosecution shall not be bound to call all the witnesses against the accused whose evidence is contained in the record or abstract of evidence nor a witness when he has notified the accused that he intends to call under rule 76, but if the prosecutor does not intend to call such witness to give evidence, he shall either tender him for cross examination by the accused, or give the accused reasonable notice that he does not intend to call the witness and that the accused will be allowed to communicate with him and to call him as a witness for the defence, if he so desires and if the witness is available.

78. Withdrawal of witness.—During a trial a witness other than the prosecutor or accused shall not except by leave of the court be in court while not under examination, and while he is under examination a discussion arises as to whether a question is to be allowed or not with regard to his evidence, the court may direct the witness to withdraw during such discussions.

79. Examination of witnesses.—(1) A witness may be examined by the person calling him and may be cross-examined by the opposite party to the proceedings and on the conclusion of any such cross-examination may be re-examined by the person who called him on matters arising out of the cross-examination.

(2) (a) The person examining a witness shall put his question to his witness orally and unless an objection is made by the witness, the court, the Law Officer, the prosecutor or by the accused, the witness shall reply forthwith.

(b) Where such an objection is made the witness shall not reply until the objection has been disposed of.

(3) The court may allow the cross-examination or re-examination of a witness to be postponed.

(4) Before the examination of a witness, he shall be administered an oath or affirmation in the following form or in such other form to the same purport as the court ascertains to be in

accordance with his religion or otherwise binding on his conscience.

FORM OF OATH

I, _____ swear by Almighty God that whatever I shall state shall be the truth, the whole truth and nothing but the truth.

FORM OF AFFIRMATION

I, _____ do solemnly, truly and sincerely declare and affirm that whatever I shall state, shall be the truth, the whole truth and nothing but the truth.

80. Questioning by the court.—(1) The Presiding Officer, the Law Officer and any member of the court may put questions to a witness.

(2) Upon any such question being answered the prosecutor and the accused may put the witness such question arising from the answer which he has given as the court may think proper.

81. Reading over of evidence.—(1) (a) The record which has been made of the evidence given by a witness shall be read back to him before he leaves the court and when this is done he may ask for the record to be corrected or explain the evidence which he has given.

(b) Where any such correction is made or explanation given, the prosecutor and the accused may put such questions to the witness respecting the correction or explanation as seem proper to the court.

(2) When a shorthand writer is employed, it shall not be necessary to comply with sub-rule (1) if in the opinion of the court and the Law Officer, it is unnecessary to do so :

Provided that if any witness so demands, sub-rule (1) shall be complied with.

82. Calling or recalling witness by the court.—(1) (a) The court may at any time before it closes to deliberate on its finding or before the Law Officer begins to sum up, call a witness or recall a witness, if in the opinion of the court it is in the interest of justice to do so.

(b) Where the court calls a witness or recalls a witness under this rule, the prosecutor and the accused may put such questions to the witness as the court may think proper.

(2) The prosecutor and the accused may, at any time before the court closes to deliberate on its finding or before the Law Officer begins to sum up, recall a witness by leave of the court and the prosecutor and the accused may put such questions to the witness as the court may think proper.

83. Submission of no case to answer and stopping of cases.—(1) (a) At the close of the case for the prosecution the accused may submit to the court in respect of any charge that the prosecution has failed to establish a *prima-facie* case for him to answer and that he should not be called upon to make his defence to that charge.

(b) Where the accused makes such submission the prosecutor may address the court in answer thereto and the accused may reply to the prosecutor's address.

(2) The court shall not allow the submission unless it is satisfied that;

- (a) the prosecution has not established a *prima-facie* case on the charge as laid; and
- (b) it is not open to it on the evidence to make a special finding under either section 83 or sub-rule (3) of rule 93.

(3) (a) where the court allows the submission, it shall find and the accused not guilty of the charge to which it relates and finding shall forthwith be announced in open court;

- (b) where the court disallows the submission it shall proceed with the trial of the offence as charged.

(4) The court may, of its own motion, after the close of the hearing of the case for the prosecution, and after hearing the prosecutor find the accused not guilty of the charge and the finding shall forthwith be announced in open court.

84. Evidence on navigational matters.—Documents to be made available in navigational cases:—

(1) All trials at which evidence is to be given on the navigation of one of the ships, the prosecutor on opening his case shall lay before the court such of the following documents as exist and apply to the case, namely:—

- (a) the ship's log;
- (b) the rough and fair engine room registers;
- (c) control room log;
- (d) the chart or charts and sailing directions by which the ship was navigated;
- (e) the last table of compass deviations;
- (f) the navigational data book and the gyro-compass log;
- (g) the Captain's night order book; and
- (h) The Navigating Officer's note book and work book.

(2) After the prosecutor has opened his case, the Presiding Officer shall, unless he considers the circumstances so exceptional that such procedure would be a waste of time, order the documents referred to in sub-rule (1) to be handed to one or more Navigation Direction Officer of other competent officers who shall work up the ship's reckoning throughout the material etime; and the result, together with such other details as may be required, being delivered to the court in the form set out in Appendix VII completed in all relevant respects and attested by the signatures of the officer of officers so directed and such officer or offcitr shall be sworn and be subject to cross-examination by both prosecution and defence as to its accuracy.

(3) The Presiding Officer shall endorse such report approved if the court concurs, and if and if not, and expressed its dissent shall be added, signed by the Presiding Officer, showing in what respects and for what reasons it dissents.

(4) With the said report such officer or officers shall also deliver to the court a cop or tracing of the chart by which the ship was navigated on which the position of the ship so determined have been aid-off and also the determined position when ashore or in danger, as not in the log book.

(5) The fate and direction of the current and of the tidal stream and the state of the tide should also, if possible, be ascertained, stated, and verified on oath.

(6) The report in the form set out in Appendix VII and the prepared chart, as well as an attested copy of the ship's log book and the engine room register or of the control room log, commencing from at least 48 hours before the ship took the ground or was endangered, if so log fro ma known anchorage shall accompany the minutes.

(7) At trials at which evidence may be required on the navigation of an aircraft such documents as exist and may be available to serve a similar purpose to those set out in sub-rule (1) shall be made available by the Commanding Officer of the aircraft and the court may follow, with such variation as may be necessary or desirable, the procedure prescribed in this rule.

85. Absence of documents.—(1) Should the absence of any of the documents mentioned in rule 84 be likely to render it difficult for the officers mentioned therein to complete their task to the satisfaction of the court, it shall be permissible for the prosecution to call an expert witness (if possible a qualified Navigation Direction Officer) to assist the court.

(2) Such a witness shall not be called under rule 84 and shall, with the permission of the court, be present to hear the evidence and shall then lay out the resulting courses on the chart.

(3) Such witness shall be subject to unrestricted cross-examination.

86. Navigation Direction Officer examination and cross-examination.—The examination and cross-examination of the Navigation Direction Officer or other competent officers who have been directed to perform the duty mentioned in rule 84 shall be limited to ascertaining the accuracy or inaccuracy of the document laid before the court.

87. Case for the defence.—(1) After the close of the case for the prosecution, the Law Officer shall explain to the accused that :—

- (a) if he wishes, he may give evidence on oath as a witness or make a statement without being sworn but that he is not obliged to do either ;
- (b) if he gives evidence on oath, he shall be liable to be cross-examined by the prosecutor and to be questioned by the court.

(2) For the purpose of enabling the accused to explain any circumstances appearing in the evidence against him, the court may, at any stage of the trial, without previously warning the accused, put such question to him as the court considers necessary, and shall for the purpose aforesaid, question him generally on the case after the witness for the prosecution have been examined and before he is called on for his defence.

(3) The accused shall not render himself liable to punishment by refusing to answer such questions, or by giving false answers to them.

(4) The answers given by the accused may be taken into consideration in such trial and put in evidence for or against him in any other inquiry or trial for any other offence which such answers may tend to show he has committed.

(5) If the accused intends to call a witness to the facts of the case other than himself, he may make an opening address outlining the case for the defence before the evidence for the defence is given.

88. Witness for defence.—(1) After rule 87 has been complied with, the witnesses for the defence shall be called to give their evidence.

(2) The provisions of rules 79, 80, and 81 shall apply to the witnesses for the defence as they apply to the evidence of witnesses for the prosecution.

89. Witness in reply.—After the witnesses for the defence have given their evidence, the prosecutor may by leave of the court call a witness or recall

to give evidence on any matter raised by the accused in his defence which the prosecution could not properly have mentioned to the court before the accused disclosed his defence or which the prosecutor could not reasonably have foreseen.

90. Closing address.—(1) After all the evidence has been given the prosecutor and the accused may each make a closing address to the court.

(2) The accused shall be entitled to make his closing address after the closing address by the prosecutor unless accused has called a witness to facts other than himself in which case, the prosecutor shall be entitled, subject to sub-rule (3) and (4) to make his closing address after the accused has made the closing address.

(3) Where two or more accused are tried jointly, anyone of them who has called no such witness shall be entitled to make his closing address after the prosecutor has made the closing address.

(4) (a) Where two or more accused are represented by the same defending officer or counsel he may make one closing address only ;

(b) where any one of the accused for whom he appears has called no witnesses to facts other than himself such defending officer or counsel shall be entitled to make his closing address after the prosecutor has made the closing address.

91. Summing up by Law Officer.—After the closing address, the Law Officer shall sum up the evidence and advise the court on the law relating to the case in open court.

92. Deliberation on finding.—(1) The court shall deliberate on its finding in closed court in the presence of the Law Officer.

(2) The opinion of each member of the court as to the finding shall be given by word of mouth on each charge separately starting with the junior most rank.

93. Record and announcement of findings.—(1) The findings on every charge upon which the accused is arraigned shall be recorded and except as provided in these rules shall be recorded simply as a finding of "Guilty" or of "Not Guilty".

(2) Where the court is of opinion as regards any charge that the facts proved do not disclose the offence charged or any offence of which he might under the Act legally be found guilty on the charge as laid, the court shall acquit the accused of that charge.

(3) Where the court is of the opinion as regards any charge that the facts which it finds to be proved in evidence differ materially from the facts alleged

in the statement of particulars in the charge but are nevertheless sufficient to prove the offence stated in the charge, and that the difference is not so material as to have prejudiced the accused in his defence, it may, instead of a finding of "not guilty" record a special finding.

(4) The special finding may find the accused guilty on a charge subject to the statement of exceptions or variations specified therein.

(5) Where there are alternative charges, and the facts proved appear to the court not to constitute the offence mentioned in any of those alternative charges, the court shall record a finding of "not guilty" on that charge.

(6) The court shall not find the accused guilty on more than one of two or more charges laid in the alternative, even if conviction upon one charge necessarily connotes guilty upon the alternative charge or charges.

(7) The finding on each charge shall be announced forthwith in the open court.

94. Procedure on Acquittal.—If the finding on all the charges is "Not guilty" the Presiding Officer shall affix his signature date on the finding and such signatures shall authenticate the whole of the proceedings and the proceedings upon being signed by the Law Officer shall at once be transmitted to the Convening Authority.

95. Procedure on Conviction.—(1) If the finding on any charge is "guilty" then for the guidance of the court in determining its sentence, the court before deliberating on the sentence, shall, wherever possible, take evidence of and record the general character, age, service, rank, any recognised acts of gallantry or distinguished conduct of the accused, any previous convictions of the accused either by a Coast Guard Court or a Criminal Court and any decoration or reward, of which he may be in possession or to which he is entitled.

(2) Evidence on the above matter may be given by a witness verifying a statement which contains a summary of entries in the service book respecting the accused and identifying the accused as the person referred to in that summary.

(3) The accused may cross-examine any such witness and may call witness to rebut such evidence and if the accused so requests the service book or a duly certified copy of the material entries therein, shall be produced and if the accused alleges that the summary is in any respect not in accordance with the service book, or such certified copy, as the case may be, the court shall compare the summary with service book or copy and if it finds that it is not in accordance therewith, shall cause the summary to be corrected or the objection of the accused to be recorded.

(4) When all the evidence on the above matter has been given, the accused may address the court thereon and in mitigation of the punishment.

96. Sentence.—The court shall award a single sentence in respect of all the offences of which the accused is found guilty, and such sentence shall be deemed to be awarded in respect of which it can be legally given and not to be awarded in respect of which it cannot be legally given.

97. Announcement of sentence, signing and transmission of Proceedings.—The sentence shall be announced forthwith in open court. Upon the court awarding the sentence, the Presiding Officer shall affix his signature and date the sentence and such signatures shall authenticate the whole of the proceedings and the proceedings upon being signed by the Law Officer shall at once be transmitted to the Convening Authority.

PROCEDURE OF COAST GUARD COURTS AND INCIDENTAL MATTERS

98. Seating of Members.—The members of a Coast Guard Court shall take their seats according to their seniority.

99. Responsibility of Presiding Officer.—(1) The Presiding Officer together with the Law Officer is responsible for the trial being conducted in proper order, and in accordance with the Act, rules made thereunder and in a manner befitting a court of justice.

(2) It is the duty of the Presiding Officer to see that the accused has a fair trial, and that he does not suffer any disadvantage in consequences of his position as a person under trial, or of his incapacity to examine or cross-examine witnesses, or otherwise.

100. Power of Court over address of prosecutor and accused.—(1) It is the duty of the prosecutor to assist the court in the administration of justice, to behave impartially, to bring the whole of the transaction before the court and not to take any unfair advantage of, or suppress any evidence in favour of the accused.

(2) The prosecutor may not refer to any matter, not relevant to the charge or charges, than before the court and it is the duty of the court to stop him from so doing and also to restrain any undue violence or want of fairness or moderation on the part of the prosecutor.

(3) The court shall give reasonable facilities to the accused, in making his defence the accused must abstain from any remarks contemptuous or disrespectful towards the court, and from coarse and insulting language towards others, but he may for the purpose of his defence impeach the evidence and charge other persons with blame

and even criminality, subject, if he does so, to any liability which he may thereby incur. The court may caution the accused as to the irrelevance of his defence, but shall not, unless in special cases stop his defence solely on ground of such irrelevance.

101. Sitting in Closed Court.—(1) A court shall, where it is so directed by these rules, and may in any other case on any deliberation amongst the members, sit in closed court.

(2) No person shall be present in closed court except the members of the court, the Law Officer and any other officer under instruction.

(3) For the purpose of giving effect to the foregoing provisions of this rule, a Court may either retire or cause the place where it sits to be cleared of all other persons not entitled to be present.

(4) Except as hereinafter mentioned, all proceedings including the view of any place shall be in open court and in the presence of the accused subject to sub-rule (5).

(5) The court shall have the power to exclude from the court any witness who has yet to give evidence or any other person, other than the accused, who interferes with its proceedings.

102. Continuity of trial and Adjournment of Court.—(1) When a court is once assembled and the accused has been arranged, the court shall continue the trial from day to day in accordance with these rules unless it appears to the court that an adjournment is necessary for the ends of justice or that such continuance is impracticable.

(2) (a) A court may from time to time adjourn its proceedings and meet at such place as may be convenient, and

(b) Where necessary, visit the scene of occurrence.

(3) A court in the absence of a Law Officer shall not proceed and shall adjourn.

(4) If the time to which an adjournment is made is not specified, the adjournment shall be until further orders from the Presiding Officer, and, if the place to which the adjournment is made is not specified, the adjournment shall be to the same place or to such other place as may be specified in further orders from the presiding officer.

103. Suspension of trial.—Where, in consequence of anything arising while the court is sitting, the court is unable by reasons of dissolution as specified in section or otherwise, to continue the trial, the presiding officer or in his absence the senior member present, shall immediately report the facts to the Convening Authority.

104. Proceedings on death or illness of accused.—In case of the death of the accused or of such illness of the accused as renders it impossible to continue the trial, the court shall ascertain the fact of the death or illness by evidence and record the same and adjourn and transmit the proceedings to the convening authority.

105. Death, retirement or absence of Presiding Officer.—In the case of the death, retirement on challenge or unavoidable absence of the presiding officer the next senior officer shall take the place of the presiding officer and the trial shall proceed if the court is still composed of not less than the minimum number of officers required by the Act.

106. Presence throughout of all members of Court.—(1) A member of a court who has been absent while any part of the evidence on the trial of an accused person is taken, shall take no further part in the trial by that court of that person, but the court will not be affected unless it is reduced below the legal minimum.

107. Taking of opinions of members of Court.—(1) Every member of a court must give his opinion by word of mouth on every question which the court has to decide, and must give his opinion as to the sentence notwithstanding that he has given his opinion in favour of acquittal.

(2) The opinions of the members of the court shall be taken in succession, beginning with the member junior most in seniority.

108. Procedure on incidental question.—If any objection is raised on any matter of law, evidence or procedure, by the prosecutor or by or on behalf of the accused during the trial, the prosecutor or the accused or counsel on the defending officer, as the case may be, shall have a right to answer the same and the person raising the objection shall have right to reply.

109. Evidence when to be translated.—When any evidence is given in a language which any of the officers composing the court, the accused or the Law Officer does not understand, it shall be translated into a language which is understood by all concerned.

110. Record in proceedings of transactions of a Coast Guard Court.—(1) At a Court the Law Officer shall record or cause to be recorded all transactions of the Court, and shall be responsible for the accuracy of the record (in these rules referred to as the proceedings); and if the Law Officer is called as a witness by the accused, the Presiding Officer shall be responsible for the accuracy of the record in the proceedings of the evidence of the Law Officer.

(2) The evidence shall be taken down in a narrative form in as nearly as possible the words used, but in any case where the prosecutor, the accused, the Law Officer or the Court considers it material, the question and answer shall be taken down verbatim.

(3) Where an objection has been taken to any question or to the admission of any evidence or to the procedure of the Court, such objection shall if the prosecutor or accused so requests or the Court thinks fit, be entered upon the proceedings together with the grounds of the objection and the decision of the Court thereon.

(4) Where any address by, or on behalf of the prosecutor or the accused, is not in writing, it shall not be necessary to record the same in the proceedings further or otherwise than the Court thinks proper, except that :

- (a) The Court shall in every case make such record of the defence, made by the accused as will enable the confirming officer to judge of the reply made by, or on behalf of, the accused to each charge against him, and
- (b) the court shall also record any particular matters in the address by or on behalf of, the prosecutor or the accused which the prosecutor or the accused, as the case may be, may require.

(5) The Court shall not enter in the proceedings any comment or anything not before the the Court, or any report of any fact not forming part of the trial, but if any such comment or report seems to the Court necessary, the Court may forward it to the proper authority in a separate document, signed by the presiding officer.

111. Custody and Inspection of Proceedings.—The proceedings shall be deemed to be in the custody of the Law Officer but may, with proper precaution for their safety, be inspected by the member of the Court, the prosecutor and the accused, at all reasonable times before the Court is closed to consider the finding.

112. Transmission of Proceedings.—(1) The proceedings shall, at once, be sent by the person having the custody thereof to such person as may be directed by the order convening the court, or, in default of any such direction, to the convening authority.

(2) Sufficient copies of the proceedings shall be made to enable one to be supplied to each of the accused in the event of an application being made therefor.

113. Report by the Presiding Officer to Convening Authority.—As soon as the Court has been dissolved, the Presiding Officer shall inform the

Convening Authority the findings and the sentence, punishment awarded by the Court to the accused.

114. Defending Officer, Friend of Accused and Counsel.—(1) At any Coast Guard Court, an accused person may be represented by a counsel or by any officer subject to the Act who shall be called the "Defending Officer" or assisted by any person whose services he may be able to procure and who shall be called the "Friend of the Accused".

(2) The defending Officer shall have the same rights and duties as pertain to a counsel under these rules and shall be under the same like obligation.

(3) The friend of the accusee may advise the accused on all points and suggest the questions to be put to the witnesses, but he shall not examine or cross-examine the witnesses or address the Court.

115. Requirements for Appearance of Counsel.—

(1) An accused person intending to be represented by a counsel shall give to his Commanding Officer or to the Convening Authority at the earliest a practicable notice of such intention, and if no sufficient notice has been given the Court may, if it thinks fit on the application of the prosecutor, adjourn to enable him to obtain a counsel on behalf of the prosecutor at the trial.

(2) Where the Convening Authority so directs, counsel may appear along with the prosecutor, but in that case unless the notice referred in sub-rule (1) has been given by the accused, notice of the direction for counsel to appear shall be given to the accused at such time (not in any case less than seven days) before the trial as would in the opinion of the Court, have enabled the accused to obtain counsel to assist him at the trial.

(3) The counsel who appears before a Court on behalf of the prosecutor or accused, shall have the same rights, as the prosecutor or the accused, for whom he appears, to call, and orally examine, cross examine and re-examine witnesses to put in any plea and to inspect the proceedings and shall have the right otherwise to act in or the course of the trial in place of the person on whose behalf he appears, and he shall comply with these rules as if he were that person and in such a case that person shall have no right himself to do any of the aforesaid matters except as regards the statement allowed by sub-rule (2) of rule 87 and sub-rule (4) of rule 95 or except so far as the Court permits him so to do .

116. Disqualification of Law Officer.—An officer who is disqualified for sitting on a Court, shall be disqualified for acting as a Law Officer at that Court.

117. Powers and Duties of Law Officer—(1)
The Law Officer shall—

- (a) give his opinion on any question of Law relating to the charge(s) or trial, whenever so required by the Court, the prosecutor or the accused.
- (b) inform the Court of any irregularity or other infirmity in the proceedings.
- (c) inform the Convening Authority and the Court of any infirmity or defect in the charge or in the constitution of the Court.
- (d) sum up the evidence and give his opinion on any question of law, before the Court proceeds to deliberate upon its findings.

(2) It shall be duty of the Law Officer to ensure that the accused does not suffer any disadvantage in consequence of his position as such, or because of ignorance or incapacity to examine or cross-examine the witnesses and for this purpose the Law Officer may with the permission of the Court, call witnesses and put questions to them, which appear to him necessary or desirable.

(3) In the discharge of his duties, the Law Officer shall maintain an attitude of strict impartiality.

(4) Where any opinion has been given by the Law Officer to the Court on any matter before it, it may be entered in the proceedings if the Law Officer or the Court desires it to be entered.

118. Duties of the officer of the Court.—The officer of Court appointed under sub-rule (1) of rule 54 shall perform the following duties namely :—

- (a) He shall be responsible for making due arrangements for the sitting of the Court under the directions of the Law Officer and shall obtain from the proper source the furniture and fittings and supply stationery required for use of the Court.
- (b) He shall muster the witnesses outside the Court room and as soon as the Coast Guard Court is assembled he shall report to the Presiding Officer that they are in attendance.
- (c) When so directed by the Presiding Officer, he shall cause the accused to be brought in and to admit the prosecutor and audience.
- (d) He shall ensure that no witness enters the Court unless called upon to give evidence except by the permission of the Court.

- (e) He shall ensure that witnesses leave the court as soon as they have been examined and are not allowed to communicate with other witnesses, who have yet to give evidence.
- (f) He shall ensure that no witness, duly summoned, leaves the vicinity of the Court.
- (g) When the Court is cleared for deliberations, he shall ensure that no one is allowed to remain within the Court's vicinity.

119. Findings of Insanity—Where the Court finds either that the accused by reason of unsoundness of mind is incapable of making his defence, or that he committed the act alleged but was by reason of unsoundness of mind incapable of knowing the nature of the act or that it was wrong or contrary to law, the presiding officer shall affix his signature and the date on the findings which shall also be signed by the Law Officer and thereupon the proceedings shall at once be transmitted to the confirming authority or in the case of summary trial to the Inspector General or Deputy Inspector General empowered to approve them.

120. Preservation of Proceedings.—The proceedings of every Court shall, after promulgation, be forwarded to the office of the Chief Law Officer and be preserved there for not less than seven years, or until the sentence awarded by the Court has expired, whichever is later.

121. Right of person tried to copies of proceedings.—Every person tried by a Coast Guard Court shall be entitled to obtain on demand at any time after the verdict of the court is announced and before the proceedings are destroyed, from the Chief Law Officer a copy thereof.

122. Copy of proceeding not to be given in certain cases—Notwithstanding anything contained in rule 121, if the Central Government is satisfied for reasons to be recorded that it is against the interests of the Security of the State or friendly relations with foreign states to supply a copy of the proceedings or any part thereof under the said rules, the accused shall not be furnished with such a copy :

Provided that if the Central Government is satisfied that the person demanding the copy is desirous of submitting a petition in accordance with the Act or instituting any action in the court of law in relation to the findings or sentence by a Court it shall permit inspection of the proceedings by such person or his legal Adviser if any, on the following conditions :—

- (a) The inspection shall be made at such time and such places as the Central Government or any authority authorised by it may direct, and

- (b) the person allowed to inspect the proceedings shall before such inspection, furnish :—
- An undertaking, in writing, that he shall not make copies of the proceedings or any part thereof and that the information or documents contained in such proceedings shall not be used by him, for the purpose of submitting a petition in accordance with the Act or instituting an action in a Court of Law in relation to the said finding or sentence; and
 - A certificate that he is aware that he may render himself liable to prosecution under sections 3 and 5 of the Indian Officials Secrets Act, 1923 (19 of 1923) if he commits any act specified in the said sections in relation to the documents or information contained in the said proceedings.

123. Loss of Proceedings.—If the original proceedings or any part thereof are lost, and there is sufficient evidence of the charge, findings, sentence and transactions of the Court, that evidence shall be a valid and sufficient record of trial for all purposes.

124. Offences by witnesses and others—When a court is of the opinion that there is ground for inquiring into any offence specified in Section 40 and committed before it or brought to its notice in the course of proceedings, which would if done by a person subject to the Act, have constituted such an offence such court may proceed as follows, that is to say :—

- If the person who appears to have committed the offence is subject to the Act, the Court may bring his conduct to the notice of his Commanding Officer;
- If the person who appears to have done the act is amenable to Army, Naval, (Air-)force, Border Security Force or any other armed forces laws, may bring his conduct to the notice of the proper

Army, Naval, Airforce, Border Security Force or the concerned other armed force authority, as the case may be.

- In other cases, the officer who summoned the witness to appear or the Presiding Officer may forward a written complaint to the nearest Judicial Magistrate of the First Class or Metropolitan Judicial Magistrate having jurisdiction, and in the case of acts which would if done by a person subject to this Act have as to an offence under clause (e) of Section 40 the Court after taking preliminary inquiry that may be necessary may send the case to the nearest Judicial Magistrate of the First Class having jurisdiction for inquiry or trial in accordance with Section 340 of the Code of Criminal Procedure 1973 (Act 2 of 1974).

Signatory

APPENDIX I

(Rule 14)

FORM OF DELAY REPORT

No.

CGS

Date

To

-
.....
1. No.....Rank.....Name
2. Offence
3. Date of Offence
4. Date of offence was discovered
5. Date of (open/close) arrest.....
6. Date of release to open arrest/release without prejudice to re-arrest (if not released, reasons).....
-
7. Record of evidence made on.....(if not recorded, reasons)
8. Application for trial made on.....
9. Date due to be tried.....
10. Reasons for delay.....

(COMMANDING OFFICER)

Copy to :—

- Inspector General
- Director General (Special Report in case the accused is under close arrest for more than 3 months without a trial).

APPENDIX II (Rule 15) (Request/Representation of person/Persons under Arrest)

Serial No.	Date	Name of the accused	Name of the officer/ Subordinate Officer request or representation made	Particulars of the request or representation	Orders of the Commanding Officer	Signature and date of the officer or subordinate officer who conveys the orders of the Commanding Officer to the accused	Remarks
1	2	3	4	5	6	7	8

APPENDIX III A
 (Rule 18)
 Offence Report

Charge/Charges against No. _____ Rank _____ Name _____

Place and date of offence	Particulars of offence	Plea	Name of witness	Punishment awarded	Signature of officer by whom awarded and date of award	Remarks
1	2	3	4	5	6	7

CGS _____ Signature of the Commanding Officer

Date _____

APPENDIX III B
 (Rule 20)
 Punishment Approval Form

CGS Date

No.

For (Here specify punishment for which approval will be required.)

Whereas

Name Rank

No.

Good Conduct Medal

Good Conduct Badges

Date of Birth

Date of entry into CG Service

Date of Joining CGS

Character assessed todate

was charged for that he did (here insert particulars of offence/offences starting with the date of offence in each case.)

AND WHEREAS I did, on the day of personally and publically, in the presence of the complainant, and the accused investigated the matter and whereas the accused pleaded guilty/not guilty to the charge/charges.

Having heard the evidence of in support of the charge/charges as well as what the accused has to offer in his defence and the evidence of whom he called on his behalf, I consider the charge/charges to be substantiated against him and taking into consideration that this is the offence registered against him on his Conduct Sheet, I adjudge him to be punished as follows :—

(Insert particulars of punishment(s)).

Given under my hand on board CGS/Establishment on the day of 198.....

Signature and Rank of the
Commanding Officer

SUBMISSION TO APPROVING AUTHORITY

CGS

Dated 198.....

Sir,

I beg to submit for your approval the following sentence/sentences to be awarded to the aforesaid accused :—

2. The accused's service certificates, conduct sheet and record or abstract of evidence are annexed herewith.

Signature

Rank

DECISION OF THE APPROVING AUTHORITY

Signature

Rank

Date

Commanding Officer

.....

Read to the accused this day of 198.....

Signature

Rank

Appointment

APPENDIX IV

(Rule 27)

Form of Application for a Coast Guard Court

Coast Guard

Station Date

APPLICATION FOR A COAST GUARD COURT

Sir,

I have the honour to submit charge(s) against No..... Rank Name of the CGS under my command, and request you to accord sanction and convene a Coast Guard Court.

The case was investigated by (a)

The accused is now at I enclose the following documents :—

1. Charge Sheet (..... copies) (b)
2. Record or abstract of evidence original (c) and 5 copies.
3. Original exhibits (d)
4. Correspondence (d)
5. Record of Service (d)
6. List of witnesses for the prosecution and defence (with present address) (d)
7. List of exhibits (e)
8. Statement by accused as to whether or not he desires to have an officer assigned by the convening officer represent him at the trial (Rule 55(2))(e)

Signature of
Commanding Officer

The Convening Authority

Note

(a) Here insert

- (i) Officer who investigated the charges.
- (ii) Officer who made preliminary hearing into the case.
- (iii) Officer who made the Record of Evidence.
- (b) One copy each to Presiding Officer, Law Officer members, Prosecutor and the accused.
- (c) Original Record or abstract of Evidence to be sent to Prosecutor.
- (d) 3, 4, 5 and 6 to be returned to the Commanding Officer of the accused with the notice of trial.
- (e) 7 & 8 to be sent to the Presiding Officer

APPENDIX V

[Rule 45(2)]

Specimen Charge Sheet

The Accused, No..... Rank.....
Name..... of Coast Guard.....
is charged with :—

Disobeying the lawful command of his superior officer (section 20(2) of Coast Guard Act 1978) in that he, at about on disobeyed the lawful command of his superior officer, Rank..... Name..... of to fall in for departmental instructions, by not falling in.

Commanding Officer
Coast Guard

Place

Date

To be tried by a Coast Guard Court

Signature

(Officer authorised to convene a Court)

Place

Date

APPENDIX VI

[Rule 54(a)]

Form for Assembly of Coast Guard Court

Form of order for the Assembly of a Coast Guard Court under the Coast Guard Act, 1978.

Order by
(Place Date
No.

The details of officers as mentioned below will assemble at on the day of for the purpose of trying by a Coast Guard Court the accused person (persons) named below.

The senior officer to sit as Presiding Officer.

Members
.....
.....

Waiting Members
.....
.....

Law Officer..... is appointed as Law Officer.
Officer of the Court is appointed as Officer of the Court.

Interpreter is appointed as Interpreter.
Prosecutor is appointed as Prosecutor
Accused (Name, Rank, Number Ship)

The accused will be warned, and all witnesses duly required to attend.

The proceedings (of which only four copies are required) will be forwarded to

Signed this the day of 198.....

Convening Officer

APPENDIX VII

[Rule 84(6)]

Order of the Court and Report of Navigation Direction at Trial on Navigational Charge.

Trial by Coast Guard Court

Coast Guard Ship

ORDER OF THE COURT

To of C.G.S.....
..... of C.G.S.....

You are handed herewith the following books, charts etc., in connection with the stranding/hazarding/loss of C.G.S. on the

- (a) Ship's log
- (b) Rough and fair engine room registers
- (c) Control Room log
- (d) Last table of compass deviations
- (e) Navigational data book
- (f) Gyro Compass Log.
- (g) Commanding Officer's night order book
- (h) Navigation Officer's night order book
- (i) Navigation Officer's note book

- (j) Navigating Officer's work book.
- (k) Navigating Officer's sight forms
- (l) Wheel and engine order book
- (m) Chart(s) and sailing directions by which ship was navigated

2. You are to ascertain and report to the court—

- (a) Whether the proper charts, sailing directions relevant hydrographic publications and all hydrographic notices bearing on the case had been supplied; if so, whether they had been used and whether the charts and publications used and had been corrected by the latest received corrections thereto. You are to state whether the largest scale chart of the area was in use at the time of occurrence.
- (b) When and how the last reliable fix of the ship's position was obtained before the occurrence and whether the courses steered and the distances run through the water in the interval were ascertained and correctly recorded in the ship's log.
- (c) Whether the rules with regard to sounding are carefully observed.
- (d) What degree of reliance can be placed on the deviation of the standard compass and on the accuracy of the gyrocompass; which compass was in use and whether the error (if any) of that compass was accurately ascertained and correctly applied.

3. You are to work up the ship's reckoning from the law engine room registers, etc., from the time when her position was last accurately ascertained (or from such a time and with such details as the court may require) to *..... result is to be delivered to the court, attested by your signature and you will be sworn and be subject to cross-examination as its accuracy. With your report you are to deliver to the court copy of tracing*** of the chart by which the ship was navigated on which the positions of the ship so determined have been laid off and also the determined position when ground or in danger as noted in the log. The rate and direction of the current and of the tidal stream and the state of the tide when ship**..... are to be ascertain and reported.

4. Your report to the court is to be made on the form attached.

Given under my hand at....this the....day of....19.....

.....
(Presiding Officer)

(This order is to be read to the officers in court and handed over to them for compliance. They are to return it to the court with their report and it is then to be inserted in its proper place in the record of proceedings).

NOTES :— * Insert name(s) of officer(s) directed in accordance with rule 84(6).

** Necessary details to be inserted by the Presiding Officer.

*** This should wherever possible be done on tracing paper which can be placed over the actual chart used.

Report to the Court by the Navigation Detection Officer

Questions	Answers
1	2
1. Were the proper charts, sailing directions, relevant hydrographic publications and all hydrographic notices bearing on the case supplied to the ship ?	
2. Have you examined the charts and publications stated to have been in use at the time of the occurrence ?	
3. Were such charts and publications amended by the latest received corrections thereto ?	
4. Was the largest scale chart of the area in use at the time of the occurrence and does it appear that full use had been made of the appropriate publications ?	
5. When and how was the last reliable fix of the ship's position obtained before the occurrence ?	
6. Were the courses steered and the distances run through the water between the time of the last reliable fix and that of the occurrence accurately ascertained and correctly recorded therein.	
7. Were the regulations as to sounding carefully observed ?	
8. Were the regulations as to ascertaining and recording the errors of the compass observed ?	
9. Have you inspected the gyrocompass log or the navigational data book and latest deviation table, in order to ascertain the degree of reliance which can be placed on the compass correction used.	
10. Do you consider such degree of reliance satisfactory ?	
11. Which was in use, the gyrocompass or magnetic compass?	
12. Was the error of that compass (if any) correctly applied ?	
13. Have you worked up and placed on the chart/tracing the ship's dead reckoning position computed from the time of the last reliable fix of her position?	
14. Have you worked up and placed on the chart/tracing the ship's estimated position computed from the time of the last reliable fix of her position ?	
15. Was any allowance for the effect of the wind and sea made in computing your estimated position ?	
16. In making your computations have you made use of any data which was not available in the ship?	

1 2

17. What were the rates and directions of the tidal streams or currents. :

- (a) actually experienced, i.e. the difference between D.R. and actual position at the time of the occurrence?
- (b) as estimated by you?
- (c) as actually allowed for in the ship?

18. What was the state of the tide when the ship ?

(— — — — —)

(Signature and rank of officer)

Date—

(This report is to be read to the court by the Law Officer. If the court concurs, the report is to be endorsed by the President as 'approved'. If the court does not concur, a statement signed by the President is to be added showing in what respects and for what reasons the court dissents from the report.

The report together with any statement by the court is then to be inserted in its proper place in the record of proceedings).

APPENDIX-VIII**Warrants Under Section 100 and 103 of the Coast Guard Act, 1978****FORM 'A'**

Warrant of commitment for use when a prisoner is sentenced to imprisonment for life (Section 100).

To

The Superintendent

of the (a) — — — — — Prison

Whereas at Coast Guard Court, held at — — — — — on the — — — — — day of — — — — — 198 , (No. — — — — — Rank — — — — — Name — — — — — Unit — — — — —) was convicted of (the offence to be briefly stated here, as 'desertion of active duty', 'Correspondence with the enemy', 'or as the case may be').

And whereas the said Coast Guard Court on the — — — — — day of — — — — — 198 , passed the following sentence upon the said (Name — — — — —) that is to say — — — — —

(sentence to be entered in full but without signature)

And whereas the said sentence had been duly confirmed by (b) as required by law (c).

This is to require and authorise you to receive the said (Name — — — — —) into your custody in the said prison as by law is required, together with this warrant, until he shall be delivered over by you with the said warrant to the proper authority and custody for the purpose of undergoing the aforesaid sentence of imprisonment. The aforesaid sentence has effect from the (d).

Given under my hand at — — — — — this the — — — — — day of — — — — — 198

Signature(e)

- (a) Enter name of civil prison.
- (b) Name and description of confirming authority.
- (c) Add if necessary "with a remission of — — — — —"
- (d) Enter date on which the original sentence was signed.
- (e) Signature of Commanding Officer of the prisoner or other prescribed officer.

APPENDIX VIII**FORM 'B'**

Warrant of commitment for use when a prisoner is sentenced to imprisonment which is to be undergone in a civil prison (Section 100)

To

The Superintendent

of the (a) — — — — — Prison.

Whereas at (b) — — — — — Coast Guard Court held at — — — — — on the — — — — — day of — — — — — 198 , (No. — — — — — Rank — — — — — Name — — — — — Unit — — — — —) was duly convicted of (the offence to be briefly stated here, as "desertion", "theft", "receiving stolen goods", "fraud", "disobedience of lawful command" or as the case may be).

And whereas the said (b) — — — — — Coast Guard Court on the — — — — — day of — — — — — 198 , passed the following sentence upon the said (Name — — — — —) that is to say (sentence to be entered in full, but without signature).

And whereas the said sentence — — — — — (c) has been confirmed by (d) as required by law (e) is by law valid without confirmation.

This is to require and authorise you to receive the said (Name — — — — —) into your custody together with this warrant and there carry the aforesaid sentence of imprisonment into execution according to law. The sentence has effect from the (f) — — — — —

Given under my hand at — — — — — this the — — — — — day of — — — — — 198 .

Signature(f)

- (a) Enter name of civil prison
- (b) Coast Guard Court or Summary trial
- (c) Strike out inapplicable words
- (d) Name and description of confirming authority
- (e) Add if necessary "with a remission of — — — — —"
- (f) Enter date on which the original sentence was signed.
- (g) Signature of Commanding officer or prisoner or other prescribed officer.

APPENDIX VIII
FROM 'C'

Warrant for use when a sentence of Imprisonment for life is reduced by superior authority to one of a shorter period (Section 103).

To
The Superintendent
of the (a) — Prison

Whereas (No. — Rank — Name — (late) of unit — is confined in the (a) — prison under a warrant issued by (b) in pursuance of a sentence of (c) — passed upon him by a (d) — Coast Guard Court held at — — — And whereas (e) — has, in the exercise of the power conferred upon him by the Coast Guard Act, passed the following order regarding the aforesaid sentence: that is to say : (f) — — —

This is to require and authorise you to keep the said (Name —) in your custody together with this warrant in the said prison as by law is required until he shall be delivered over by you with the said warrant to the proper authority and custody, for the purpose of his undergoing the punishment of Imprisonment for life under the said order. And this is further to require and authorise you to return to me the original warrant of commitment in lieu whereof this warrant is issued.

The period of such imprisonment will reckon from the (g).

Given under my hand at — this the — day of — 198 —

Signature(h)

- (a) Enter name of civil prison.
- (b) Enter name or designation of officer who signed original warrant.
- (c) Enter original sentence (if this was reduced by the confirming officer or other superior authority the sentence should be entered thus: — "Life imprisonment reduced by confirming officer to 10 years".
- (d) General
- (e) Name and designation of authority varying the sentence.
- (f) Order to be set out in full.
- (g) Enter date on which original sentence was signed.
- (h) Signature of prescribed officer .

APPENDIX VIII
FROM 'D'

Warrant for use when prisoner is to be delivered into Coast Guard custody.

To
The Superintendent
of the (a) — Prison.

Whereas (No. — Rank — Name — (late) of the — Unit is confined in the (a) — prison under a warrant issued by (b) — in pursuance of sentence of (c) — passed

upon him by a (d) — Coast Guard Court held at — — — on — — —, and whereas (e) — — — has, in exercise of the powers conferred upon him by the Coast Guard Act passed the following order regarding the aforesaid sentence; that is to say (f) — — —

This is to require and authorise you to deliver forthwith the said (Name — — —) in your custody to the officer or subordinate officer bringing this warrant.

Given under my hand at — — — this the — — day of — — 198 —

Signature (g)

- (a) Enter name of civil prison.
- (b) Enter Name or designation of officer who signed original warrant.
- (c) Enter original sentence (if this was reduced by the confirming officer or the other superior authority the sentence should be entered thus: "2 years rigorous imprisonment reduced by confirming officer to 1 year").
- (d) Coast Guard Court or Summary.
- (e) Name and designation of authority issuing the order.
- (f) Order to be set out in full.
- (g) Signature of prescribed officer.

APPENDIX VIII

FORM 'E'

Warrant for execution of a sentence of death

To

The Superintendent of Jail — — —

Whereas (Name of the prisoner) — (a) E. Rank — — — (a) Ex-Official No. (if any) — — — of Coast Guard Ship — — — was tried by the Coast Guard Court martial — — — and sentenced to death and has been by warrant dated — — — committed to your custody;

And whereas the orders of the Central Government confirming the said sentence has been received which order is annexed hereto, this is to authorise and require you the said — — — to carry the said sentence into execution by causing the said — — — to be hanged by the neck until he be dead at (b) — — — (a) or to be shot to death at (b) — — — and to return this warrant to me with an endorsement that the sentence has been executed.

Given under my hand and the seal of my office this the — — — day of — — — 198 —

Signature — — —

Designation — — —

(a) Delete as necessary

(b) Time, date and place of execution

[F. No. MF LW /0202]

Bhaskar Ghose, Jr. Secy.